2 अप्रैल 2023 | कुल पृष्ठ : 112 | मूल्य 2/- | वर्ष-46 | अंक-1

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन पथप्रदर्शक

ए-4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

सम्पादक :
पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

सहज संकल्प

प्रभावना का

तत्ववेत्ता

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

25 मई 1935 • जीवन यात्रा • 26 मार्च 2023

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

26 नवम्बर 1976 • जीवन यात्रा • 17 फरवरी 2023

प्रभावना विशेषांक

जैन पथप्रदर्शक

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक :
पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

सह-सम्पादक :
पीयूष जैन

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि. जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४ बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें-
ए-4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 7412078704
E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

शुल्क	:	आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये
मुद्रण संख्या	:	हिन्दी : 3500

अध्यात्मवेत्ता
डॉ. संजीवकुमार गोधा

जैन
पथप्रदर्शक

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सहज संकल्प
प्रभावना
का

अध्यात्मवेत्ता
डॉ. संजीवकुमार गोधा
प्रभावना विशेषांक

26 नवम्बर 1976 • जीवन यात्रा • 17 फरवरी 2023

कहाँ–क्या

विषय	लेखक	पृष्ठ
भूमिका		7
प्रतिभाशाली विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल	8
संजीवजी का अवसान : एक श्रावक की समाधि	परमात्मप्रकाश भारिल्ल	9
यूट्यूब पर प्राप्त श्रद्धांजलियाँ	आचार्यों व मुनियों द्वारा	11
ट्विटर पर प्राप्त श्रद्धांजलियाँ	नेताओं द्वारा	12
एक नज़र : जीवन पर	अंकुर शास्त्री, भोपाल	13
अनौपचारिक साक्षात्कार	अनुभव शास्त्री, खनियांधाना	15
स्मृति चित्र		19–22
जीना मरना सिखा गए	पीयूष जैन	23
मुझे भव का अभाव करने की संजीवनी बूटी दे गए	संस्कृति गोधा	24
विरासत में सर्वोत्कृष्ट तत्त्वज्ञान मिला	आर्जव गोधा	26
कोहिनूर हीरा है संजीव गोधा	प्रदीप–कुसुम चौधरी, किशनगढ़	27
कुल धर्म दीपक	महेन्द्र–मंजू गोधा, जयपुर	28
संजीवजी सच्चे मुमुक्षु थे	श्वेता–तिलक चौधरी, किशनगढ़	28
आश्चर्यकारी व्यक्तित्व	अरिहन्त चौधरी, किशनगढ़	29
बहुमुखी प्रतिभा के धनी	दिव्या चौधरी, किशनगढ़	29
डॉ. संजीव गोधा : एक महन्त पुरूष	डॉ. आशीष मेहता, मुम्बई	30
सजीव संजीव संस्मरण	पण्डित अरूण शास्त्री, बण्ड	32
जीवन नहीं तूफानी दौरा था	पण्डित जिनकुमार शास्त्री	33
हीरो थे हीरो बना गए	पण्डित अखिल शास्त्री	34
सर्वोदयी वक्ता थे	सुशीलकुमार गोदीका, जयपुर	35
क्या हम अभी भी नहीं सीख पायेंगे ?	शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर	35
जैनदर्शन के महान प्रभावक	बिपिन शास्त्री, मुम्बई	37
वे नायक नहीं, महानायक थे	अशोक बडजात्या, इंदौर	38
धर्मरथ के कुशल सारथी थे संजीवजी	डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली	38
संजीवजी जाते–जाते सिखा गये, सीख सके तो सीख	ब्र. सुमतप्रकाश, खनियांधाना	39
जैनदर्शन का अनमोल रत्न चला गया	महीपाल शाह, बॉसबाडा	39
आपके दिखाए मार्ग पर बढ़ते रहेंगे	अशोक पाटनी, सिंगापुर	40
जितना भी लिखा जाए थोडा ही होगा	कमला भारिल्ल, जयपुर	41
संजीव गोधा दृढ़ विश्वास के धनी	गुणमाला भारिल्ल, जयपुर	41
विदेशों में भी तत्त्वज्ञान के स्तम्भ थे	अतुल–चारू खारा, डलास	42
तत्त्वप्रचार का सफल सफर	डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर	43
अव्याबाध सुख भोगें	शैलेषभाई शाह, तलोद	43
उनके अनोखे गुण	पदम पहाडिया, इन्दौर	44
डॉ. संजीवजी is missing	हेमचन्द हेम, देवलाली	44
प्रभावना बहुत करता नरम छे	रजनीभाई दोषी, हिम्मतनगर	45
संजीव सदैव सजीव रखूँगा	प्रदीप झांझरी, उज्जैन	45
धर्म उपदेशक के रूप हृदय में बसे थे	डॉ. राजेन्द्र बंसल, गुरार	45
मनुष्य पर्याय की नश्वरता का बोध	अजित जैन, बडौदा	46
उन्होंने हमें निश्चिन्त कर दिया	सोनल मुकेश जैन, इन्दौरा	46
समयसार मंत्री बन गए	भरतभाई टिम्बाडिया, कोलकाता	46
इससे अधिक नहीं लिख पाऊँगा	डॉ. मनीष शास्त्री, मेरठ	47
उनके व्यक्तित्व के बिखरे मोती	राहुल गंगवाल, जयपुर	48
सिद्धालय के पथिक संजीव गोधा	डॉ. अखिल बंसल, जयपुर	49
आँखों से ओझल नहीं होता चेहरा	डॉ. प्रवीण शास्त्री	49
संजीविज्म	महेश जैन, भोपाल	50
तुम याद बहुत आओगे...	डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर	51

कहाँ–क्या

विषय	लेखक	पृष्ठ
■ प्रेरणादायक युवा विद्वान	डॉ. उमापति शास्त्री, चैन्नई	51
■ जैनसमाज के प्रिय पण्डितों में एक	डॉ. जयराजन शास्त्री, चैन्नई	51
■ एक युग का अन्त	राजकुमार शास्त्री, उदयपुर	52
■ निकटवर्ती मोक्षार्थी : संजीवजी गोधा	अशोक जैन, भोपाल	53
■ धर्मामृत का पान कराया	नरेश लुहाड़िया, दिल्ली	53
■ संजीवजी संजीवनी हैं...	पण्डित अशोक लुहाड़िया, मंगलायत	54
■ हम सब संजीव गोधा हैं?	पण्डित सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर	55
■ मेरे गुरू, मेरे आदर्श	पण्डित अनेकान्त शास्त्री भारिल्ल	55
■ सत्पथ पर चल रहे थे	पण्डित विपिन जैन, नागपुर	56
■ आत्मार्थी विद्वान संजीवजी गोधा	आत्मार्थी कमल बोहरा, कोटा	56
■ कम समय में बहुत प्रभावित किया	पण्डित महावीर पाटील, सांगली	57
■ आचरण के सहज प्रेमी संजीवजी	डॉ. दीपक वैद्य, जयपुर	57
■ जोशीले अंदाज वाले संजीवजी	अंकुर शास्त्री, भोपाल	58
■ पुरूषार्थ की जागृतमूर्ति गोधाजी	प्रद्युम्न फौजदार	59
■ मेरे छात्र ही बने मेरे गुरू	डॉ. महावीरप्रसाद जैन, उदयपुर	59
■ इतिहास बन गए हैं	नितिनभाई शाह, मुम्बई	59
■ संजीवजी सबके हैं...	पण्डित संजय शास्त्री, बडामल्हरा	60
■ जिनवाणी के सच्चे सपूत	डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मंगलायतन	60
■ सहजता की प्रतिमूर्ति डॉ. संजीवजी गोधा	डॉ. वीरचन्द्र जैन शास्त्री	60
■ छुट्टी वाला दिन आया ही नहीं	डॉ टी.सी. जैन, भरतपुर	61
■ डॉ. संजीव गोधा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि	डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, मुम्बई	61
■ सरलस्वभावी, निरभिमानी : डॉ. संजीवकुमारजी गोधा	श्रुतेश सातपुते शास्त्री, नागपुर	62
■ लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. संजीव गोधा	डॉ. शान्तिसागर शास्त्री, शिरट्टि	62
■ प्रभावक पुण्यात्मा : आदरणीय संजीवजी	पण्डित जितेन्द्र राठी, पुणे	63
■ अध्यात्मजगत के उदीयमान नक्षत्र : डॉ. संजीवकुमारजी गोधा	प्रमोद जैन, विदिशा	64
■ मिलनसार व्यक्तित्व – एक संस्मरण	आदीश–ममता जैन, दिल्ली	64
■ जल्दी चले गए	डॉ. महेन्द्र जैन मुकुर	64
■ क्या कहूँ ...? क्या न कहूँ.....?	पण्डित नगेश जैन, पिड़ावा	65
■ डिजिटल युग के टोडरमल : संजीवजी	पण्डित शुद्धात्म जैन, ग्वालियर	65
■ हँसता हुआ नूरानी चेहरा	पण्डित सोनू शास्त्री, सोनगढ़	65
■ संस्मरण में संजीवजी	श्री मन्त नेज शास्त्री, जयपुर	66
■ सबसे बड़ी आघातजनक घटना	उल्लासभाई जोबालिया, मुम्बई	66
■ सरलता की साक्षात मूर्ति	पण्डित अनिल शास्त्री, जयपुर	67
■ यादें जयपुर की एवं संजीवजी की	पण्डित दीपक अथणे	67
■ अब तुम अमर भए, न मरेंगे.....	अमित जैन 'अरिहंत'	68
■ संजीवजी का जाना जैसे भरी दोपहरी में सूर्य का अस्त होना	हीराचन्द बैद, जयपुर	69
■ वह दीवार बीच में नहीं होती	पण्डित राजेशकुमार शास्त्री, जयपुर	69
■ मेरे मार्गदर्शक संजीवजी : कुछ स्मृतियाँ	पण्डित ऋषभ शास्त्री, दिल्ली	70
■ साथ बिताया समय याद रहेगा	विवेक शास्त्री, इन्दौर	70
■ आ. संजीवजी : एक श्रेष्ठ अध्यापक	पण्डित संयम शास्त्री, नागपुर	71
■ जग में थे पर जग से न्यारे थे	पण्डित शुभम शास्त्री	71
■ हमेशा याद रहेंगे संजीवजी भाईसाहब	पण्डित गौरव उखलकर, जयपुर	72
■ पहला विकल्प संजीव गोधा	पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर	72
■ भाईसाहब का कल्पना से परे स्नेह	श्रीमती प्रीति जैन, जयपुर	73
■ मेरी उड़ान के जीवित पंख – संजीवजी	पण्डित सोमिल जैन, दलपतपुर	73
■ अध्यात्मजगत के दैदीप्यमान दिवाकर डॉ. संजीव गोधा	डॉ. सतीशकुमार जैन	74
■ एक मैं और एक आप (संजीवजी)	कृतिका अरिहंत जैन, सिंगापुर	74
■ आपके बहुत उपकार हैं।	अदनी शाह, भरूच	75
■ जिनवाणी के अटूट श्रद्धानी	राजेन्द्र कोचर	75

कहाँ–क्या

विषय	लेखक	पृष्ठ
एक अलग ही छवि के व्यक्ति थे	स्तुति पीयूष जैन, जयपुर	75
कम समय में बहुत कुछ सीखा	अश्वनी जैन (दिल्ली/जयपुर)	76
पूरा साल इंतज़ार करते थे	अखिल–चारु, आर्यन जयपुर (Ex USA)	76
मेरे गुरु	अरविंद शास्त्री, बंडा	77
आप स्वयं एक संस्था थे	अंकुर शास्त्री, खड़ैरी	77
एक पारसमणि डॉ. गोधा	श्रीमती श्री जैन (दिल्ली/जयपुर)	78
तत्त्व प्रभावना योग में प्रभावक व्यक्तित्व	मयंक कुमार जैन	78
तत्त्वज्ञान की एक मिसाल	श्रीमति अनिता गांधी, दादर	79
आदर्श व्यक्तित्व – डॉ संजीवजी गोधा	श्रीमती मीना जैन, अशोक नक्षर	79
बहुत बड़ी क्षति हो गई	संयम जैन, पत्रकार वरिष्ठ समाजसेवी, भोपाल	79
बस एक ही नारा था आपका	सन्तोष जैन, लाल बहादुरनगर, जयपुर	80
कभी न भूलने वाला सफर	मनीष वत्सल, इंदौर	80
संजीवजी तो हमारे गुरु थे और रहेंगे	प्रियंका राजकुमार जैन, सिडनी ऑस्ट्रेलिया	80
एक आराधक प्रभावक	नरेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर	81
सच्चे प्रभावक आदरणीय भाईसाहब	हर्षित जैन, खनियाधाना	81
महान व्यक्तित्व के धनी	श्री वीर महिला संघ, जयपुर	82
सरल व्यक्तित्व के धनी	सिंगोली समाज	82
मेरे प्रिय अध्यापक	हर्षित जैन, दमोह	82
एक पत्र : संजीवजी के नाम	समर्थ जैन, हरदा	83
मेरे आदर्श, जिन्होंने मुझे गढ़ा है	मंयक जैन, फुटेरा	83
सिर्फ एक ही नाम : संजीवजी	राहुल जैन, अमायन	84
अध्यात्म क्रांति के मूल डॉ.संजीव जी गोधा	कृणाल शाह, अहमदाबाद	84
आदर्श प्रस्तुत कर गए...	श्रीमती विपिनेश जैन, कुरावली	84
Dr. Sanjeev Godha Fondly Remembered and Deeply Missed!	Dr. Priyadarshana Jain	85
End of An Era	Jinesh Sheth	85
Dr. Sanjeev Godha - Stalwart Saadharmi	Jaya Nagda	86
Our Sincere Gratitude	Kinnari Samit Shah & Family	86

काव्य खण्ड

क्यों आँखों में आता पानी	पं. राजेन्द्रकुमार जैन	91
जिनवाणी रस पान कर	पं. अभयकुमार शास्त्री	92
संजीव तुम पर क्या लिखूं...	पं. संजय शास्त्री	92
तुम सिखा अमर भये	पं. विराग शास्त्री	92
संजीव तो जीता रहा.....	पं. विक्रांत पाटनी	93
संजीव तुम अमर हुए	सुबोध जैन	93
तुम्हारा जाना स्वीकार नहीं	डॉ. अनेकान्त जैन	94
प्रिय संजीव की आत्मा...	पं. बाहुबली भोसगे	95
दिया हमें जिनवाणी का उपहार	प्रतिभा जैन, इन्दौर	95
संजीवनी बूटी से...	बाल ब्र. श्रेणिक जैन	96
कालचक्र भी हार गया है!!	गणतंत्र शास्त्री औजस्वी	96
श्रद्धा सुमन समर्पित	चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी	96
यात्रा मंगल में हो...	पं. संयम जैन	97
व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे...	अरविन्द शास्त्री	97
चल पड़े शिवराह पर...	मालती जैन	97
आए और चले गए...	डॉ. मुकेश शास्त्री	98
मेरे आदर्श गोधाजी	डॉ. विवेक शास्त्री	98
अध्यात्म–विभूति	चन्दन जैन	98
ज्ञान गगन के सूर्य	सहज जैन	98
अध्यात्म–पक्ष सिरमौर	पं. समकित शास्त्री	99
जिनवाणी रसिक उपासक	पं. अभिषेक शास्त्री	99
वो शख्स हर पल याद आता है	मानस जैन	99
मुक्ति की ओर बढ़े...	गौरव जैन आत्मार्थी	100
तुम शीघ्र बनो केवलज्ञानी	निशांत जैन	100
गये नहीं तुम अमर भये	पं. समकित शास्त्री	100
बने आप अध्यात्मजगत् की शान...	पं. अनिल जैन अंकुर	101
हर सांस करूँगी अभिनन्दन	श्रीमती सुनीता जैन	101
समय के सार से जोड़ा	विनोद मोदी	102
वैराग्य का अहसास	अपेक्षा बंडी	102
ऐसी अमृत वाणी दे दी	जयकुमार जैन	102
जल्द बनेंगे सर्वज्ञ	अंकित जैन, दिल्ली	103
तत्त्वज्ञान में लिप्त रहे	श्रीमती सुधा चौधरी	103
सीखूँ ना मैं आपसे अब	पं. सुधीर शास्त्री	103
कभी ना होंगे दूर इस मन से	नेहा जैन, दिल्ली	103
संजीवकुमारजी गोधा की यूट्यूब पर अध्यात्म क्रान्ति		104
जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने की रुचि रखने वालों के लिये		105
प्रकाशित एवं प्रकाशनाधीन कृतियाँ		105
संजीवकुमार गोधाजी की विदेश यात्राएँ		106

युग के उत्तम प्रभावक

''..... **जीवों को मोक्षमार्ग का उपदेश देकर उनका उपकार करना, यही उत्तम उपकार है**'' आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी की उक्त पंक्ति यह दर्शाती है कि जिनशासन की प्रभावना के पवित्रकार्य में मोक्षमार्ग के उपदेश का सर्वोकृष्ट स्थान है। पण्डित टोडरमलजी की यह पंक्ति डॉ. संजीवजी के संदर्भ में अत्यन्त सटीक ही नहीं सार्थक भी है।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा अत्यन्त समर्पित एवं ओजस्वी वक्ता तो थे ही; साथ ही उनका समर्पण एवं विषय दोनों केवल मोक्षमार्ग एवं वस्तु स्वरूप के प्रतिपादन तक ही केन्द्रित था।

एक बार यह विचार करके देखें कि धर्म के सबसे बडे प्रभावक देवाधिदेव तीर्थंकर भगवान प्रभावना के लिए क्या करते हैं? प्रतिदिन **दस घंटे, अड़तालीस मिनिट** तक दिव्यध्वनि के माध्यम से वस्तु–स्वरूप को ही तो समझाते हैं। संजीवजी वस्तुस्वरूप का विवेचन पूर्ण समर्पण एवं तत्परता के साथ सरल, सुबोध भाषा में आजीवन करते रहे। अब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि क्या केवल पर–उपदेश ही प्रभावना की पराकाष्ठा है? नहीं, समंतभद्राचार्य कहते हैं कि रत्नत्रय की अर्थात् अपनी आत्मा की आराधना ही असली प्रभावना है। अत: प्रभावना में आत्मप्रभावना का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

कम उम्र में ही पाठशालाओं के प्रति रुझान, ताउम्र धर्मानुकूल आचार–विचार, 19 साल की उम्र में यह निर्णय कि 40 वर्ष से अधिक उम्र होने पर धन कमाना छोड़ दूँगा, धार्मिक कार्य के लिए वेतन–भत्ता–खर्चा नहीं लूँगा, 60 वर्ष की उम्र तक प्रचारकर शेष जीवन निवृत्ति लेकर आत्मसाधना में व्यतीत करूँगा – आदि बातें यह बतलाती हैं कि वे परोपदेश के साथ ही अपनी आत्म–आराधना करने में कहीं भी नहीं चूके। इसप्रकार स्पष्ट है कि अपने अन्तर्बाह्य निर्मल आचरण से संजीवजी तत्त्व की प्रभावना के साथ अपनी आत्म–प्रभावना में भी अव्वल रहे। इसी कारण वे इस युग के उत्तम प्रभावक थे और उनके माध्यम से तत्त्वज्ञान की उत्तम प्रभावना हुई।

इसप्रकार उनके संक्षिप्त जीवनदर्पण का प्रतिरूप तत्त्वज्ञान की प्रभावना में प्रारम्भ होकर तत्त्वज्ञान की प्रभावना में ही पूर्ण हो जाता है; उनके जीवनपथ का हर पहलू प्रभावना का ही सन्देश देता है, वे सदैव श्रेष्ठ प्रभावक के रूप में याद किए जाते रहेंगे, उनकी नि:स्वार्थ प्रभावना की कहानी बड़े गर्व के साथ कही–सुनी जाती रहेगी। इसी भाव से प्रेरित होकर जैन पथप्रदर्शक के यशस्वी सम्पादक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की स्मृति में, यह **सहज संकल्प प्रभावना का** विशेषांक आपके हाथों में है –

तो आईए शामिल होते हैं, इस गौरवमयी कहानी में, और लेते हैं

सहज संकल्प

प्रभावना

का...

प्रभावना विशेषांक

एक गुरु, जिनसे संजीवजी गोधा ने सबकुछ सीखा; उनके हृदय से ....

प्रतिभाशाली विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर
महामंत्री : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जैनदर्शन के प्रभावशाली विद्वान थे। जैन–अध्यात्म पर उनकी गहरी पकड़ थी। आध्यात्मिक पत्रिका वीतराग विज्ञान के वे सह सम्पादक थे। जबसे वे वीतराग विज्ञान के सह सम्पादक बने थे, तभी से वे वीतराग विज्ञान पर गहरी पकड़ रखते थे। गुरुदेवश्री के प्रवचन जो वीतराग विज्ञान में जाते हैं, वे समय के पहले उनका चयनकर, उसे व्यवस्थित कर लेते थे। अंक जब मेरे पास आता था, तब एक प्रकार से तैयार ही रहता था; पर उसे मैं एक बार आदि से अंत तक अक्षरश: पढ़ अवश्य लेता था, उसमें बहुत कम करेक्शन रहते थे।

आज मैं अपने को उनके बिना असहाय अनुभव कर रहा हूँ।

अभी कुछ दिनों से मेरा प्रवचनार्थ बाहर जाना बहुत कम हो गया है। उस कमी की पूर्ति उन्होंने अपने प्रवचनों के माध्यम से कर दी थी। अपने प्रवचनों के माध्यम से उन्होंने देश–विदेश में धूम मचा रखी थी; पर एकदम अचानक वे अल्पवय में ही हम सबको छोड़कर चले गये।

अपने स्वर्गवास से एक माह पहले तक वे जिनवाणी के प्रचार–प्रसार में अत्यन्त सक्रिय थे। लगभग 4 महीने से अपने घर भी नहीं आए थे, जिनको उन्होंने आश्वासन दे रखे थे; **वे आज अपने को अनाथ अनुभव कर रहे हैं।**

उन्होंने अपने सबल कंधों पर वीतराग विज्ञान और जैन पथप्रदर्शक दोनों पत्र संभाल रखे थे और हमारे महाविद्यालय में परमभावप्रकाशक नयचक्र और क्रमबद्धपर्याय जैसे जटिल विषयों का अध्यापन संभाल रखा था। हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि यह सब काम अब किसके कंधों पर सौपें। **उनके चले जाने से आज मैं अपने को बहुत अकेला अनुभव कर रहा हूँ।**

अभी–अभी मैं जिस तत्त्व का प्रतिपादन कर रहा था; उस पर उनकी पूरी पकड़ और श्रद्धा थी और अपने आत्मा के कल्याण में उन्होंने उसका पूरी तरह उपयोग किया।

उन्होंने अपने अन्तिम समय में स्वयं को संभाल लिया और सारे जगत से उपयोग हटाकर आत्मा में लगा लिया था। इसमें उनकी धर्मशील धर्मपत्नी का भरपूर सहयोग था और डॉ. अशीष मेहता का मार्गदर्शन और पूरी सेवा अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई। उनका पुत्र आर्जव हमारे महाविद्यालय में पढ़ रहा है, प्रतिभाशाली छात्र है। वह निश्चित रूप से उन्हीं जैसा ठोस विद्वान बनेगा और उसकी परिणति भी उनके समान होगी। आज भी उसकी परिणति अत्यन्त निर्मल है। उनकी समाधि को देखकर सभी मुमुक्षु भाईयों को अपने भव का सुधार कर लेना चाहिये। उनके परिणामों के अवलोकन से मुझे अत्यन्त स्पष्ट प्रतिभासित होता है कि उनके संसार समुद्र का किनारा अत्यन्त नज़दीक है। लगता है वे दो–तीन भव में ही भवमुक्त होंगे।

वे देह छोड़कर अत्यन्त उत्कृष्ट संयोगों में गये हैं; उनके अन्त समय के निर्मल परिणामों से उनके वर्तमान संयोगी भावों का अनुमान होता है।

मैं उनके शीघ्र कल्याण की कामना करता हूँ।

सम्पादक की कलम से...

संजीवजी का अवसान : एक श्रावक की समाधि

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल
कार्यकारी महामंत्री : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

संजीवजी का अवसान एक श्रावक की समाधि का सम्यक् उदाहरण है। विगत कुछ वर्षों से डॉ. भारिल्ल श्रावक के जिस समाधिमय जीवन और समाधिमरण की चर्चा कर रहे हैं, उसका व्यवहारिक स्वरूप संजीवजी की समाधि में जीवन्त हो उठा है।

उन्होंने अपना जीवन एक ऐसे आत्मार्थी, स्वाध्यायी श्रावक के रूप में जिया, जिसने अपनी आवश्यकताएँ अत्यन्त सीमितकर, उसके साधन जुटाकर, अपना सम्पूर्ण समय और क्रियाकलाप स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार के लिए समर्पित कर दिये। इसप्रकार हम कह सकते हैं कि उनका जीवन समाधिमय ही था। जैसे ही उन्हें ज्ञात हुआ कि असाध्य बीमारी के कारण अब उनका जीवनकाल अत्यन्त सीमित ही शेष रहा है तो **तत्क्षण ही उन्होंने अपनेआप को बाह्य व्यवहार से समेटकर, सिर्फ अपने तक सीमित कर लिया।**

उक्त काल में जीवनरक्षा या शेष रहे जीवन के सम्यक् निर्वहन के लिए दोषरहित शुद्ध औषधि के सेवन में परिजनों का सहयोग तो किया, पर अब क्या चल रहा है, मैं किस ओर जा रहा हूँ, मेरे पास कितना समय है? इत्यादि सम्बन्धी कोई जिज्ञासा तक प्रकट नहीं की।

''मेरे बाद किसका क्या होगा?'' जैसे विकल्पों से मुक्त, वे तो बस मात्र स्वयं तक ही सीमित हो गये और निराकुल परिणामों के साथ उनकी देहपरिवर्तन की प्रक्रिया सम्पन्न हुई।

देश–विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति और सोशयल मीडिया पर उपलब्ध अपने हजारों प्रवचनों के माध्यम से अपने लाखों श्रोताओं के बीच संजीवजी कुछ इस तरह से व्याप्त हो गये हैं कि **यह विश्वास ही नहीं होता है कि संजीवजी अब हमारे बीच नहीं हैं।** चित्त से यह अहसास जाता ही नहीं कि वे यहीं–कहीं मेरे आसपास ही हैं और अभी सामने आ जाएंगे।

यद्यपि वे लगभग पिछले तीन दशकों से समाज के बीच सक्रिय थे; तथापि पिछले लगभग चार सालों (कोरोना काल) में, जब सभी लोग विवशतावश अपने–अपने घरों में लगभग कैद थे और किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति के बीच उन्हें अपने समय के सदुपयोग के लिए उपयुक्त और उपयोगी साधनों की खोज थी, उन्हें यूट्यूब पर संजीवजी के रूप में मानो वरदान ही मिल गया। अपने यूट्यूब चैनल के माध्यम से उन्होंने विभिन्न विषयों पर अपने प्रवचनों की शृंखला प्रारम्भ की, **उत्कृष्ट विषयवस्तु और अपनी सहज–सरल, भाषा–शैली के कारण अनायास ही उन्होंने हजारों लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया और वे उनके नियमित श्रोता बन गए। श्रोताओं की इस नियमितता के पीछे संजीवजी की स्वयं की नियमितता और अगाध कर्तव्यनिष्ठा का भी बहुत बड़ा योगदान रहा।** वे कहीं भी क्यों न हों, घर पर हों या यात्रा कर रहे हों, वे जहाँ भी होते, सही समय पर अपना Phone set करके बैठ जाते और प्रवचन प्रारम्भ कर देते। वे one man army थे, अपने इस कर्तव्य पालन के लिए उन्हें किसी सहयोगी की आवश्यकता न थी। उनकी इस नियमितता का ही सुपरिणाम था कि जो एक बार उनसे जुड़ गया, वह फिर कभी उनसे दूर न हुआ।

न तो उनके पास प्रमेय (विषयवस्तु) की कमी थी और न ही प्रमेय की विविधता की। जैनागम के चारों अनुयोगों में उनकी समान गति थी, चाहे गहन आध्यात्मिक विषय हो या करणानुयोग सम्बन्धी अतिसूक्ष्म और विस्तृत विषय या चरणानुयोग हो वे हर विषय में सहज थे और सुगमता के साथ उसे प्रस्तुत करते थे।

उनके वचनों की दृढ़ता और बुलन्द आवाज़ उनके कथ्य को सहज ही श्रोताओं को आत्मसात् करवा देने में सक्षम थी। **उनके कथनों में दृढ़ता का राज था, अपने कथ्य के प्रति उनकी अपनी दृढ़ आस्था। उनके उपदेश मात्र औरों को सुनाने के लिए नहीं थे, वरन् वे स्वयं उन सिद्धान्तों के प्रति समर्पित थे,** जिनकी वे चर्चा किया करते थे।

अगाध विद्वत्ता के साथ–साथ अत्यन्त सक्रिय अध्यवसायी होना, उनकी सफलता का सबसे बड़ा राज था। उनके व्यक्तित्व में इन दो गुणों का बेमिसाल संगम था। इसके अतिरिक्त **वे जमीन से जुड़े, सरल स्वभावी और सादगीपूर्ण व्यक्तित्व थे।**

ऐसा कौन है? जिसको किसी से भी, कभी भी कोई शिकवा नहीं होता; पर वे ऐसी अद्भुत सहिष्णुता के धनी थे, जो न तो कभी किसी से प्रतिद्वन्दिता महसूस करते थे और न ही किसी से कभी अप्रियवचन बोलते थे, न तो किसी के सामने और न ही किसी के पीठ पीछे। अपने इसी गुण के कारण सभी से उनकी मित्रता थी और किसी से भी वैर–विरोध नहीं था। **अपने सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता के कारण, मतभेदों के बावजूद एक सज्जन आत्मार्थी के रूप में वे सभी को सहज स्वीकार्य थे।**

एक किंवदन्ती है कि सत्य कड़वा होता है, पर संजीवजी के सन्दर्भ में यह गलत ही साबित हुई; वे सत्यवादी थे, पर कभी किसी को कड़वे नहीं लगे। इससे साबित होता है कि सत्य कड़वा नहीं होता; कभी–कभी सत्य की प्रस्तुति कड़वाहट लिए हुए हो जाती है तो लोग समझने लगते हैं कि सत्य कड़वा होता है। वे एक मृदुभाषी, सत्य के प्रवक्ता थे।

यद्यपि वे निस्पृही थे, न तो उन्हें असीम धन–दौलत की चाहत थी और न ही किसी पद–प्रतिष्ठा की अभिलाषा। वे कभी इन सबके पीछे दौड़े नहीं; पर इसका मतलब यह कतई नहीं कि वे इन सबसे वंचित रहे। उन्हें सहज ही यह सब भी भरपूर मिला।

जैसा कि प्राय: लोग महसूस करते हैं, यदि हमें लोगों से, समाज से या जमाने से यह शिकायत हो कि हमें, हमारी योग्यता, क्षमता और कर्तृत्व को किसी ने पहिचाना नहीं, कभी किसी ने उसकी कद्र नहीं की। समाज ने हमें कुछ नहीं दिया; तो वह एक नज़र संजीवजी के व्यक्तित्व और जीवन पर डालकर अपनी तुलना, उनसे करके देखें कि उनमें ऐसा क्या था जो मुझमें नहीं है, हमारे शिकवे दूर हो जाएंगे। यदि कोई उन जैसा बन सका तो निश्चित वह, वह सब पा सकता है, जो संजीवजी को उपलब्ध हुआ।

आज हम संजीवजी के निधन से दुखी हैं, उनके अभाव से त्रस्त हैं, पर जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि अब इस जीवन में उनके पास अधिक समय नहीं है, **तो वे ज़रा भी विचलित नहीं हुए, वे अपने में सिमट गए, उनके चित्त में कुछ करने की आकुलता या कुछ न करपाने की निराशा नहीं थी; क्योंकि वे वह सब कर चुके थे, जो उन्हें इस जीवन में करना अभीष्ट था। अब उनके पास और कुछ भी करने को शेष नहीं था और इसलिए उनके चित्त में असमय ही चल पड़ने की विवशता का अफ़सोस नहीं था।**

सचमुच आदर्श जीवनशैली वही है, जब जीवन के किसी भी मोड़ पर हमारी वे लिस्ट में ऐसा कुछ भी करना शेष न हो, जो किये बिना हम यह देह न छोड़ना चाहते हों; क्योंकि देह के रहने या छूट जाने पर तो हमारा कोई नियंत्रण है ही नहीं।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि संजीवजी ने अपने इस जीवन में मोक्षमार्ग में अपने कुछ कदम आगे बढ़ाये हैं, हम कामना करते हैं कि वे शीघ्र ही स्वस्थित होकर, पूर्णता को प्राप्तकर लोक के अग्रभाग में विराजमान हों। **इत्यलम्**

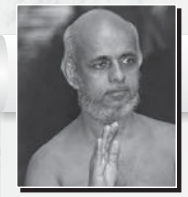

धर्म के श्रेष्ठ प्रचारक

- आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज
(ओडियो के माध्यम से प्राप्त उद्बोधन का सार)

जयपुर निवासी पण्डितप्रवर श्री संजीवजी गोधा के देहावसान की सूचना हमें प्राप्त हुई। पण्डितजी सरल स्वभावी, शान्त परिणामी, प्रख्यात उपदेशक, धर्म के श्रेष्ठ प्रचारक और स्पष्ट वक्ता थे।

उनकी प्ररूपणा अनेक जीवों के मार्गदर्शन में निमित्त बनती थी। उनकी सहजता लोगों को अभिभूत करती थी। उनके देहावसान से जैनसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है। उनके परिवार को सांत्वना देते हुए, मैं इस इष्ट वियोग से उनका मन शीघ्र ही विमुख हो और वे मोक्षमार्ग में आगे बढ़े, यह कामना करता हूँ।

स्वयं पण्डितजी ने जिस स्वाध्याय का अवलम्बन लेकर देश और विदेश में धर्म की ध्वजा फहराई, उनकी आत्मा स्वर्गीय सुख का उपभोग करके, पुन: मनुष्य भव प्राप्त करके, निर्ग्रन्थ मुद्रा अंगीकार करके, मोक्ष को प्राप्त करें, यह मंगल कामना करता हूँ।

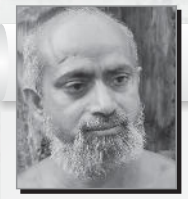

वस्तु स्वभाव को देखो

- आचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज
(यूट्यूब पर उपलब्ध उद्बोधन का सार)

वीतराग जिनशासन की अनुमोदना, प्रभावना करो। निज आत्मा की प्रभावना के साथ ज्ञानी गोधा चले गए कि नहीं चले गए?

आपके संयोग का वियोग हुआ है; इसलिए लोगों को लगता है कि हमारे लिए बहुत बड़ा अध्यात्म तत्त्व को परोसने वाला जीव चला गया; पर मित्र, ऐसा क्यों नहीं सोचते हो कि शरीर का परित्याग करके क्षति तो उनकी हुई है जो उनसे कुछ चाहते थे। क्षति उनकी नहीं हुई है जो जीवन व मरण को निजस्वभाव से भिन्न मानते थे। सद्भावना की दृष्टि से भावना रखो जो आत्मा जहाँ गई, स्वस्थ रहे, वीतराग सत्यार्थ मार्ग की पोषक बने, मिथ्यात्व से दूर रहे। वियोग पर मत बिलखो, संयोग पर मत मुस्कुराओ, वस्तु स्वभाव को देखो! जो है, सो है।

ऐसा चिन्तन करो कि गोधाजी की आत्मा जहाँ भी हो, वह सच्चे देव-शास्त्र-गुरु, वीतराग मार्ग का पोषण करें, एकान्त नहीं, स्याद्वाद का पोषण करें, ऐसा चिन्तन करो...

धर्म व समाज के लिए बड़ी क्षति

- आचार्यश्री सुनीलसागर जी महाराज
(यूट्यूब पर उपलब्ध उद्बोधन का सार)

समाचार मिला कि जैनजगत के चमचमाते सितारे संजीव गोधा का देह परिवर्तन हो गया है। आत्मा शाश्वत है; लेकिन फिर भी युवावस्था में अच्छे शास्त्र अध्येता, विद्वानों का चला जाना धर्म व समाज दोनों के लिए बहुत बड़ी क्षति है। कोरोना काल में उन्होंने जन-जन को जागृत करने का बहुत अच्छा प्रयास किया। निश्चितरूप से संस्कारों के बल से उनकी आत्मा वीतरागता की छत्रछाया में विकास करे, उनका मंगल हो।

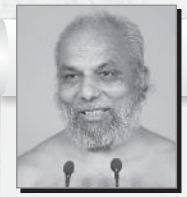

शोक नहीं, वैराग्य का प्रसंग

- मुनिश्री प्रमाणसागर जी महाराज
(यूट्यूब पर उपलब्ध उद्बोधन का सार)

श्री संजीवजी गोधा के देहावसान का समाचार मिला। चातुर्मास के दौरान वे हमारे प्रवास में आए भी थे।

पर इस घटना से एक बात हमको अच्छे से समझकर चलना चाहिए कि किसी की आयु पर किसी का नियंत्रण नहीं है। आना-जाना तो लगा हुआ है। बस जब कोई ऐसा व्यक्तित्व हमारे बीच से जाता है तो उसके चले जाने का दु:ख हर व्यक्ति के मन में छाता है। डॉ. संजीव एक अच्छे विद्वान, एक अच्छे प्रवचनकार, तत्त्व के ज्ञानी थे। काल ने असमय छीन लिया।

हम-आप यह कहते हैं कि असमय है; परन्तु काल के आगे तो कोई समय-असमय नहीं होता और कालबली के आगे बड़े-बड़े बाहुबली भी हार जाते हैं। मैं ऐसी घड़ी में यही कहूँगा, जिसने जिनवाणी की सेवा की है, उसे उसका फल तो मिलता ही है; आगे-पीछे भले ही मिले। उस व्यक्ति ने अपने जीवन में जो अच्छा करना था, कर लिया, करके गया।

कोई हमारे बीच से अचानक चला गया। इसका मतलब यह नहीं कि वह अपनी राह पूरी कर गया, इसका सही मतलब तो यही है कि वह हमें हमारी राह दिखा गया। हमें हमारी राह देखनी है, अपने जीवन को संभालना है और ऐसे निमित्तों को हमेशा शोक का निमित्त बनाने की ज़गह वैराग्य का निमित्त बनाना चाहिए।

मैं पुन: डॉ. संजीव के सारे मित्रों और परिजनों को आशीर्वाद देते हुए ये अपेक्षा रखता हूँ कि इस घटना का स्वीकार करने के अलावा किसी के पास कोई उपाय नहीं है।

जैनजगत के मूर्धन्य विद्वान को

गणमान्य महानुभावों ने ट्विटर के माध्यम से दी श्रद्धांजलि

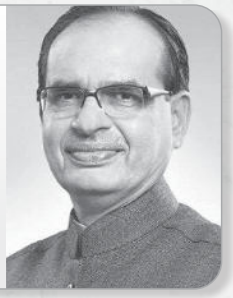

जैनसमाज के मूर्धन्य विद्वान श्री संजीवजी गोधा के अल्पकाल में निधन का दु:खद समाचार प्राप्त हुआ।

देश-विदेश में उन्होंने तत्त्वज्ञान का प्रचार किया, कई भव्यजनों को सन्मार्ग में लगाया, उनका जाना अध्यात्म-जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।

भव को विराम देकर शीघ्र निर्वाण प्राप्त करें। ॐ शांति!

- माननीय श्री शिवराज सिंहजी चौहान (मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश सरकार)

जैनसमाज के अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. संजीवजी गोधा के अल्पायु में निधन का समाचार अत्यन्त दु:खद और पीड़ादायक है।

परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं परिजनों और चाहनेवालों को यह असहनीय दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना है।

- माननीय वसुंधरा राजे सिंधिया (पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार)

जैनसमाज के युवा विद्वान डॉ. संजीवजी गोधा के अल्पायु में निधन का समाचार हृदय-विदारक है। अपने प्रवचनों के माध्यम से आपने देश-विदेश में अध्यात्म की गंगा बहाई।

विश्वपटल पर धर्म की अद्वितीय प्रभावना में योगदान देने के लिए आपको युगों-युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा। ॐ शांति!

- माननीय डॉ. रमन सिंहजी (पूर्व मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ सरकार)

जैनसमाज के युवा विद्वान डॉ. संजीव गोधाजी के अल्पायु में भौतिक देह परिवर्तन पर, उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

अपने अद्भुत व्यक्तित्व, उत्कृष्ट ज्ञान एवं उज्ज्वल चिंतन के माध्यम से आपने देश-विदेश में अध्यात्म की जो गंगा बहाई, वह सदैव मानवता का पथप्रदर्शन करती रहेगी।

- माननीय दुष्यंत सिंहजी (लोकसभा सांसद, झालावाड़)

मैं चैतन्य, सत्ता, सुख और अवबोध - ऐसे चैतन्य प्राणों से जीता हूँ, मुझे कोई मार नहीं सकता है! जैनधर्म के आध्यात्मिक अध्येता, युवा मनस्वी, डॉ. संजीव गोधाजी जयपुर को श्रद्धांजलि।

- माननीय क्षु. श्री योगभूषणजी महाराज

एक नज़र : जीवन पर

संजीव : जिनका जीवन तो प्रभावनामय था ही; जिनका वियोग भी जिनशासन की प्रभावना बन गया

साभार - अंकुर शास्त्री
आलेख सम्पादक : दूरदर्शन समाचार, भोपाल

उसको रुख़्सत तो किया था, पर हमें मालूम न था।
मानो सारा जहाँ ले गया, जहाँ छोड़ के जानेवाला।।

संजीव = सम् + जीव, जिनके नाम में ही है समता और जिनके नाम में ही है जीव। इन दोनों के लिये ही तो जिन्होंने पूरे जीवन का जर्रा-जर्रा लगा दिया। दृष्टि में त्रिकाली जीव द्रव्य हो और पर्याय में प्रकटे समता। इसका ही मानो शंखनाद करनेवाले, एक साकार स्वरूप थे डॉ. संजीवजी गोधा।

पण्डित टोडरमलजी, पण्डित जयचन्दजी छाबडा, पण्डित दौलतरामजी कासलीवाल जैसे दिग्गज विद्वानों की जन्मस्थली रही ढुंढार क्षेत्र की भूमि वर्ष 1976 में एक बार फिर गौरवान्वित हुई, जब उस साल 26 नवम्बर को जयपुर की जमीं पर महेन्द्र और मंजु गोधा के घर सौम्य सी, निश्छल छवि लिये एक बालक का जन्म हुआ। संयोग की बात है कि पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की मंगल प्रेरणा के प्रभाव से अमूमन यही वो वर्ष था जब जयपुर की भूमि सहस्राधिक विद्वानों की जन्म-भूमि बनने को तैयार हो रही थी और इस जमीं पर ही पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की नींव पड़ रही थी। मानो नियति उन निमित्तों को भी भलीभाँति तैयार कर रही थी, जिसकी गर्त में भविष्य के संजीव गोधा का आविर्भाव छुपा था।

पाठशाला में बालबोध, वीतराग विज्ञान पढ़ते हुये, एक अबोध बालक में तत्त्वज्ञान के ऐसे संस्कार पड़े, जिसके चलते लौकिकशिक्षा तो महज नाम की रह गई और आध्यात्मिकशिक्षा इस बालक के जीवन का ध्येय बन गई। यूं तो इतिहास, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन विषय में एम.ए, जैनदर्शन में एम. फिल. और यूजीसी नेट तथा **तीन लोक** विषय पर इन्होंने पी.एचडी. की है; लेकिन इनका दिल तो सिर्फ गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान में ही लगा। फिर क्या था? जैन आगम के गूढ़तम सिद्धान्तों, आगम के चारों अनुयोगों, न्याय आदि का अध्ययनकर और गुरुदेवश्री के प्रभावना योग में अध्यात्म से भीगकर अल्पवय में ही एक ऐसे विद्वान के रूप में तैयार हो चुके थे, जो डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का प्रिय शिष्य बन पण्डित टोडरमलजी की गादी से तत्त्वज्ञान को जनसामान्य के सामने परोसकर साढ़े तीन सौ वर्ष की समृद्ध परम्परा को आगे बढ़ाने के लिये तैयार थे।

वक्त आगे बढ़ा... और संजीव का कारवां उससे भी तेजगति से बढ़ता चला गया। गृहस्थी बढ़ी; लेकिन वह भी तत्त्वज्ञान को पोषित, पल्लवित करनेवाली ही रही। 26 जनवरी 2003 को ये विवाह बंधन में बंधे, लेकिन संजीव को मिली संस्कृति ने इनकी प्रकृति को और निखारा एवं उनके जीवन के अन्तिम क्षण तक तत्त्वज्ञान के मार्ग में एक योग्य सहधर्मिणी का दायित्व निभाया। अब हमें यकीन है कि इन्हीं के नक्शे कदमों पर चल, इनका पुत्र आर्जव भी इस विरासत को आगे बढ़ायेगा।

जमाने ने इस विद्वान की प्रतिभा तो समझी ही और अन्तर की विशुद्धि भी जानी, यही वज़ह है कि जिनधर्म को जानने की इच्छा वाला ऐसा कोई वर्ग बाकी न रहा, जिसे संजीवजी की संजीवनी ने प्रभावित न किया हो।

तुम्हें जानते थे बखूब, तुम्हारे होते हुये भी हम,
पर बहुत कुछ तेरी हस्ती को, तेरे जाने के बाद जाना।

अब देश की सरहदों का दायरा इनके लिये नाकाफी था और संजीवजी अब दुनिया के हर महाद्वीप में जिनशासन का डंका बजा रहे थे। जैसे सरहदों पर तैनात सैनिक माँ भारती के लिये सब कुछ समर्पित करने को तैयार रहते हैं, ऐसे ही संजीवजी ने मानो जीवन का हर क्षण सिर्फ माँ जिनवाणी की सेवा के लिये समर्पित कर दिया। फिर चाहे अपने पुत्र का बाल्यकाल देखना हो, पारिवारिक उत्सव हो या लौकिक महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करना हो - सब कुछ न्यौछावर कर दिया। वर्ष 2011 से हर वर्ष लगातार दो महीने विदेशों में धर्मप्रभावना के लिये जाते रहे और वर्ष 2022 तक सत्रह विदेश यात्राएँ, जिनमें अमेरिका, कनाडा, इग्लैण्ड, अफ्रीका, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, दुबई आदि शामिल हैं - सब ज़गह धर्मध्वजा फहराते चले गये।

यदि हम संजीवजी की उम्र सैंतालीस वर्षों में गिने तो उन्हें इस जीवन में मिले लगभग सत्रह हजार दिवस, उसके करीब चार लाख, ग्यारह हजार घंटे और उसमें भी दो करोड़, सैंतालीस लाख मिनिटों में अधिकतम वक्त इन्होंने सिर्फ जिनवाणी के पठन–पाठन, श्रवण, प्रवचन और तत्त्वचिंतन में ही बिताया। माँ जिनवाणी के ऐसे सपूत यदि अल्पकाल में मुक्ति न पा सकेंगे तो इस पंचमकाल में भला और कौन है जो मोक्ष का अधिकारी होगा?

संजीवजी ने लगभग तीस वर्षों तक हजारों प्रवचन विविध विषयों पर किये। अब तक इनके द्वारा लिखित एवं सम्पादित तेरह पुस्तकें और लगभग तीस लेख प्रकाशित हो चुके हैं। वर्ष उन्नीस सौ अठानवें से इनके ही सह संपादकत्व में मासिक पत्रिका वीतराग विज्ञान और पाक्षिक पत्र जैन पथप्रदर्शक निकलता रहा।

जब वर्चुअल दुनिया का रियल विश्व पर प्रभाव पड़ा तो मानो संजीवजी जिनधर्म की पताका को लहराने के लिए उस दुनिया के भी अधिपति बन गये। यूट्यूब, फेसबुक पर हर रोज एक शिविर ही उनके साथ लगने लगा, जिसमें तीन–चार हजार लोग सीधे तत्त्वज्ञान का रसास्वादन करने लगे। कोविड ने जब दुनिया को घेरा, लॉकडाउन के चलते दुनिया घरों में सिमटी, तब सबसे पहला वैक्सीन समझो संजीवजी ही लोगों के लिये लेकर आये और दिन में तीन–तीन टाइम लोगों को श्रुतरूपी अमृत से भिगोकर भयमुक्त किया। यही नहीं जुलाई 2021 से हर रोज नियमित पारस चैनल एवं आदिनाथ टी.व्ही. चैनल पर भी इनके प्रवचनों का प्रसारण होता रहा। ये आलम देख याद आती हैं कुछ पंक्तियाँ कि –

हुआ है तुझ से बिछड़ने के बाद ये मालूम,
कि तू नहीं था तेरे साथ एक दुनिया थी।

तत्त्वज्ञान से समाज को भिगोनेवाले, इस माँ जिनवाणी के चितेरे पुत्र पर समाज ने भी उपाधियों की वर्षा कर दी, मानो लोगों को भी लग रहा हो कि अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने का हम पर ज्यादा वक्त नहीं है। युवा विद्वत्रत्न, उपाध्यायकल्प, अध्यात्म–चक्रवर्ती, अध्यात्मवेत्ता, आदर्श जैनयुवा राष्ट्रीय सम्मान, अति विशिष्ट सेवा ॲवार्ड, आचार्य समन्तभद्र पुरस्कार, युवा जैनरत्न सम्मान, अर्हद्वचन पुरस्कार और न जाने कौन–कौन से और कितने सम्मान इन्हें विभिन्न नगरों, देशों में अनेक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रदान किये गये। हालांकि इन उपाधियों से न तो आपके अवदान का ही मूल्यांकन हो सकता है, न आपके व्यक्तित्व का। गहन व्याधि के वक्त में भी आपको इन उपाधियों का नहीं; अपितु सहज समाधि का ही लक्ष्य रहा, जिसे आपने पाया भी है।

आपकी अन्तर की विशुद्धि ऐसी थी कि आपने आत्माराधना और तत्त्वविचार के लिये ऐसा समर्पण दिखाया, जिसके तहत चालीस वर्ष की उम्र के बाद आजीविका करने का त्याग किया और निज आराधना के प्रति समर्पण का कुछ ऐसा भाव था कि साठ वर्ष के बाद विभिन्न स्थलों पर आवागमन कर प्रभावना आदि करने की प्रवृत्ति पर भी विराम देने की भावना थी और एक नियत स्थान पर रहकर सर्वस्व स्वयं के चिन्तन–मनन और विचार के लिये प्रदान करना चाहते थे।

वे जीव धन्य हैं, जो अपने जीते हुए जीवन का कतरा–कतरा जिनशासन की प्रभावना करते हुए बिताते हैं, पर वे विरले ही होते हैं, जिनकी मृत्यु भी जिनशासन की प्रभावना का कारण बन जाए। आपका दुनिया से चले जाना भी इस जमाने को एक शिक्षा देता है। आपने जीवनभर जिनशासन के सिद्धान्तों को सिखाया और आखिर में उसका प्रेक्टिकल भी सिखा गए।

इस विदाई में सीख थी – होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम; इस विदाई में क्रमबद्धपर्याय, वस्तु स्वातंत्र्य, अकर्तावाद, उदय की विचित्रता, समाधि का सार सब कुछ समाया हुआ था। जिसे देख–समझ ये जमाना तत्त्वज्ञान के संस्कार अपने भीतर पुष्पित पल्लवित कर सका।

अब आपके जाने के बाद यूँ तो हमारे पास आपका दिया हुआ बहुत कुछ है, जिसे सुन–समझ हम माँ जिनवाणी को समझ सकते हैं और तत्त्वज्ञान से खुद को पुष्ट कर जन्म–मरण के अभाव का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। साथ ही आपकी वो प्रेरणा भी संग है, जो हमें विषय–भोगों से बचा निरन्तर स्वाध्याय और तत्त्वविचार के लिये प्रेरित करती है; लेकिन इस सबके बीच आपके न होने से जो खालीपन उपजा है, उसे भर पाने का अभी हमारी पर्याय का स्वभाव नहीं।

गुज़र तो जायेगी तुम्हारे बग़ैर भी लेकिन,
बहुत उदास बहुत बे–क़रार गुज़रेगी।।

एक अनौपचारिक साक्षात्कार संजीवजी से (2018)

– अनुभव शास्त्री, खनियाँधाना; प्राकृत फैलो ISJS

अनुभव – स्मारक से आपका जुड़ाव कब से हुआ?

संजीवजी – कब से क्या? बचपन से ही स्मारक आना–जाना रहा, माता–पिता के साथ।

अनुभव – धर्म में आपको इतनी अधिक रुचि कैसे लगी?

संजीवजी – ये पूर्वभव एवं माता–पिता के संस्कार थे, जो इतनी तीव्र रुचि लगी। जब मैं 7–8 वर्ष का था, तब पण्डित संतोषजी झांझरी उस समय टोडरमलजी वाले मंदिर में नियमित प्रवचन करते थे। मैं उनके प्रवचन नियमित सुना करता था। प्रवचन में ये बात आती थी कि **एक द्रव्य, दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं है, एक वस्तु, दूसरी वस्तु को छूती नहीं है, सबकुछ अपनी योग्यता से होता है** – इत्यादि बातें सुनने के बाद दिनभर इसी विषय पर घर में चर्चा चलती थी कि ऐसा कैसे हो सकता है? वस्तु का स्वतंत्र परिणमन कैसे होता है? इसी तरह की चर्चाएँ दिनभर घर में चला करती थीं। पिताजी उन दिनों करणानुयोग का अध्ययन किया करते थे।

इसके अलावा मेरी एक बड़ी बहन थी, जिनका देहान्त जनवरी 1984 में हो गया था। उस समय उनकी उम्र 16 साल की थी। कान में कोई छोटी सी परेशानी हुई, इन्फेक्शन जैसा कुछ, ऑपरेशन हुआ और उनकी मृत्यु हो गयी। वह हमारे परिवार के लिए एक बहुत बड़ा झटका था। इसके बाद से धर्म में रुचि और अधिक बढ़ गयी।

अनुभव – आपका प्रारम्भिक धार्मिक अध्ययन कहाँ से हुआ?

संजीवजी – प्रारम्भिक धार्मिक अध्ययन पाठशालाओं एवं प्रवचनों के आधार से हुआ।

अनुभव – छोटे दादा, सुनीलजी नाके के संदर्भ में बताते हैं कि वे बड़े मन्दिर में पाठशाला लेने आते थे और वहाँ से आपकी रुचि और अधिक बढ़ी।

संजीवजी – 1 जून, 1988 से पाठशाला प्रारम्भ हुई, जिसका मुझे बहुत अधिक उत्साह था। पहले दिन का पहला श्रोता मैं ही था। सुनीलजी नाके ने करीब दो–तीन साल पढ़ाया। इसके पूर्व में भी कई अध्यापक आये जैसे प्रेमचन्दजी अलवर, जो स्मारक में अधीक्षक भी रहे, महावीरजी टोकर भी कुछ समय के लिए पढ़ाने आये थे।

अनुभव – आपने इतना अधिक अध्ययन कब किया?

संजीवजी – सन् 90 से 94 का जो समय था, वो मेरे जीवन का गोल्डन समय था, ऐसा कहा जा सकता है; क्योंकि इस समय प्रतिदिन 8 से 10 घंटा, मैं स्वाध्याय किया करता था। इस बीच में मैंने लालचन्दजी भाई, युगलजी, दादा आदि कई विद्वानों के पुराने–नए सभी प्रवचनों को कैसेट के माध्यम से सुन लिया था।

अनुभव – स्मारक के साथ में प्रारम्भिक समय आपका कैसा रहा?

संजीवजी – स्मारक में शिविर Attend करते थे तो उस समय परीक्षा हुआ करती थी। परीक्षा में मेरे 50 में से 50 नम्बर आया करते थे। first position आया करती थी। सन् 90 से 97 तक मैंने बहुत अधिक मात्रा में कंठपाठ सुनाया। उस समय दादा का ऐसा कोई पद्यानुवाद नहीं था, जो मैंने न सुनाया हो। जैसे कुन्दकुन्द शतक, छहढाला, योगसार, शुद्धात्मशतक, तत्त्वार्थसूत्र, समयसार आदि जितने भी थे, सब सुनाये; जिसके certificate भी मेरे पास हैं। उस समय जो पहली बार सुनाता था, अन्नाजी उसे पुरस्कार दिया करते थे और जो उसी विषय को अगली साल फिर से सुनाता था, उसे with certificate पुरस्कार देते थे।

अनुभव – आपका अध्ययन इतना प्रगाढ़ कैसे हुआ?

संजीवजी – करणानुयोग का अभ्यास तो किशनचन्दजी अलवर के माध्यम से हुआ, जब वे स्मारक आया करते थे। इसके अलावा मैंने सारे विषय दूसरों को पढ़ाकर ही पढ़े। मैंने सर्वार्थसिद्धि, नयचक्र, क्रमबद्धपर्याय आदि किसी से पढ़े नहीं, सीधे पढ़ाये और विषयों पर पकड़ बनती गयी। इसलिए मैं कहता हूँ किसी भी विषय पर पकड़ बनानी है तो उसे पढ़ाना शुरू कर दो। जिस किसी विषय में आप कमजोर हैं, उसे पढ़ाओ और फिर वह विषय आपका पक्का हो जायेगा।

अनुभव – एक विद्वान् के रूप में आपका सफ़र कैसा रहा?

संजीवजी – 12-13 वर्ष की उम्र से ही मैंने पाठशाला में कक्षायें लेनी प्रारम्भ कर दी थीं। 1988 में मैंने सबसे पहले प्रथमानुयोग का ग्रन्थ पढ़ाया, जिसका नाम था श्रीपाल चरित्र। फिर 1991-92 से छहढाला आदि की नियमित कक्षायें लेनी प्रारम्भ कर दीं। 1993 में टोडरमलजी की गद्दी पर प्रवचन करना शुरू कर दिया था। तब उम्र कुछ 16 वर्ष की रही होगी। 1998 में मैंने दसलक्षण में स्मारक में प्रवचन किया था। हुआ यूँ कि उस साल बाबू युगलजी कोटा वालों को स्मारक आना था, वे नहीं आ पाये तो उनकी ज़गह मुझे बुलाया गया। पाटनीजी आदि उस समय मेरे प्रवचन सुनते थे। मैंने समयसार पर उस समय प्रवचन किये। जब दादा दसलक्षण से लौटे तो पाटनीजी ने दादा को बताया कि ये लड़का बड़ा जबरदस्त बोलता है, विषय की गहराई बहुत है। फिर जब ये बात स्मारक के बाहर फैली तो प्रवचनों की कैसेट वहाँ बाबू युगलजी ने भी मंगवाई। 1998 में ही पहला अक्टूबर शिविर शुरू हुआ। उस समय उद्घाटन सभा में ही दादा ने मुझे भरी सभा के बीच खड़ा कर दिया और मेरी यह कहते हुए बहुत प्रशंसा की कि आप जानते नहीं हैं हम कैसे-कैसे विद्वान तैयार कर रहे हैं इत्यादि। उस समय देवेन्द्रजी कैसेट का काम देखते थे, तो वे कहते थे कि संजीवजी आपकी कैसेट की डिमांड सबसे ज्यादा है।

अनुभव – आपकी आजीविका के बारे में कुछ बताइए, हमने सुना है आप स्मारक से तनख्वाह नहीं लेते हैं?

संजीवजी – अभयजी 1998 में गए तो मुझे नयचक्र पढ़ाने का ऑफर मिला; लेकिन तब मेरी उम्र बहुत छोटी थी तो शास्त्री प्रथम वर्ष के विषयों की कक्षा लेना मैंने प्रारम्भ की। अभयजी के जाने के बाद एक वर्ष नयचक्र डॉ. नरेन्द्रजी ने पढ़ाया। उसके बाद क्रमबद्धपर्याय, नयचक्र आदि विषय सब पढ़ाने के लिए मुझे ही दे दिए गए।

2008 से मैंने तनख्वाह लेनी बंद की। प्रारम्भ में जबसे मैंने मोक्षमार्ग प्रकाशक पढ़ाया था, तबसे ही मेरा मन था कि इस काम से पैसा नहीं लेना है। क्या ये सब ठीक है? इत्यादि प्रश्न मन में रहते थे और भावना रहती थी कि ये सब लेना बन्द करना है। प्रकाशचन्दजी सेठी जो मेरे मौसा लगते हैं, उन्होंने मुझे ऑफर दिया कि तुम प्रिंटिंग का काम तो करते ही हो, तो हमारी कम्पनी में ये काम सम्भाल लो और तब उन्होंने मुझे 30,000 रूपये प्रतिमाह की सैलरी ऑफर की। बस, फिर उसके बाद मैंने कभी स्मारक से तनख्वाह नहीं ली।

दादा की ओर से भी मुझे कभी समय की पाबंदी नहीं रही। कभी-कभी कोई दादा की टेबल पर पर्ची रख देता था कि ये समय पर नहीं आता है, तो दादा कहते थे कि इससे कोई कुछ नहीं कहेगा। ये वहाँ सुबह प्रवचन करके आता है, फिर यहाँ क्लास लेता है, ये अपने हिसाब से आएगा।

फिर जब सैलरी लेनी बन्द की तो लोगों ने बहुत समझाया कि लेते रहो, दान दे देना। बड़े दादा, अन्नाजी आदि सभी ने समझाया; लेकिन मैं अपने निर्णय पर दृढ़ था कि अब तो निर्णय ले लिया, तो ले लिया। अब एक समय खाना कम खाना पड़े तो भी ठीक है; लेकिन पैसे तो अब नहीं लेंगे।

समय की पाबंदी तो पहले से ही नहीं थी, सैलरी बंद करने के बाद और भी नहीं रही। तब सबका सोचना और कहना था कि अब तो तुम आना कम कर दोगे, वगैरह, वगैरह....; लेकिन हुआ उल्टा, जबसे सैलरी लेनी बन्द की, तबसे एक बार की ज़गह दो-दो बार आना शुरू कर दिया। काम पड़ने पर दिन में तीन बार भी आ जाया करता हूँ। कई बार तो मैं रात में 11-11 बजे भी काम करता हूँ।

अनुभव – इसके अलावा और कोई आजीविका?

संजीवजी – मैंने सन् 1998 में amway join की थी। तब ये कंपनी भारत में आई-आई थी, उसमें कुछ समय काम किया, फिर बन्द कर दिया। अच्छा, वे बताते थे कि dream + time = goal. मतलब dream में एक निश्चित समय फिक्स कर दो तो उसे goal कहते हैं। आपके सपने with date होना चाहिए। उस समय मैंने मेरी dairy में लिखा था, मुझे 40-42 साल की उम्र में निवृत्ति लेना है और हुआ भी ऐसा ही। मैं अब 41 का हो गया हूँ और निवृत्त हूँ। अब तो जिनवाणी की सेवा के अलावा मेरा कोई दूसरा काम नहीं है। अध्ययन, मनन, पढ़ना-पढ़ाना ही अपना बस एक काम है।

अनुभव – दादा के साथ आपका लगाव कैसा रहा और कैसे इतना बढ़ता चला गया?

संजीवजी – दादा का मुझसे और मेरा दादा से बहुत लगाव रहा है। अब मेरा तुमसे इतना लगाव क्यों है? तो बस ऐसे ही मेरा दादा के साथ बहुत लगाव रहा। 19 साल की उम्र में 1996 में जब मेरी ज्वाइनिंग स्मारक में हुई, तब दादा कहीं बाहर गए हुए थे, जब दादा लौटे और उन्होंने स्मारक में मुझे देखा तो वे यही समझते थे कि मैं स्मारक का ही विद्यार्थी हूँ और बोले कि क्यों, तुम्हें ही रख लिया क्या? अक्सर इसके पहले दादा ने मुझे स्मारक के कार्यक्रम करवाते हुए देखा था, इसलिए वे पहले से ही मुझसे परिचित थे और मानते थे कि यह होशियार लड़का है।

दादा के साथ मैंने बहुत कुछ सीखा। सम्पादन आदि का कार्य, कंप्यूटर आदि ये सब दादा के साथ काम करते हुए ही सीखा। वीतराग विज्ञान और जैन पथप्रदर्शक आदि के कारण मेरी निकटता दादा से बहुत हुई।

अनुभव – दादा के बारे में आपका क्या कहना है?

संजीवजी – हम सभी मिलकर भी दादा के नाख़ून की बराबरी नहीं कर सकते, इतना ज्यादा काम दादा ने किया है। सच कहूँ तो मैं स्वयं को बहुत गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि दादा मुझे इतना चाहते हैं। तत्त्व के प्रति दादा को विशेष लगाव है और मुझे तत्त्व के प्रति लगाव है, इसलिए जहाँ रूचि का विषय एक ही होता है; वहाँ सहज ही लगाव होता है। तुम लोगों को देखकर तुम्हारे प्रति सहज ही लगाव होता है। ऐसा आदेय नामकर्म का उदय है कि सभी चाहते हैं।

दादा के साथ मैंने हमेशा ऐसा ही फील किया कि ये मेरे ही दादा हैं, या पिता हैं, वे भी मुझे बच्चे जैसा मानते हैं। एक बार ऐसा भी हुआ कि दादा के साथ बेड भी शेयर किया। एक ही रूम में, एक ही पलंग पर सोये। दादा के साथ अनगिनत अनुभव हैं। जो फीलिंग की चीज़ है, वो शब्दों में नहीं आ पाती है।

विदेश-यात्रा के समय न्यूजर्सी में ऐसा हुआ कि वहाँ के मैनेजमेंट में विद्वानों के लिए बस एक ही accommodation दिया था। तो उसमें दादा के साथ बाई भी थी। शायद ये बात हो सकती है कि वहाँ के लोगों को न पता हो, उन्होंने मुझे और दादा को एक ही रूम दे दिया। तो जब दादा डलास में थे और मैं शायद शिकागो या न्यूजर्सी में था तो मैंने दादा को कॉल किया और बताया कि दादा ऐसा-ऐसा हुआ है, तो आप और बाई एक रूम में रुक जाना, मैं कहीं और रुक जाऊँगा। तो दादा ने कहा - क्यों? तू अलग है क्या हमारे से? तुझमें और परमातम में क्या फर्क है? तू हमारे साथ ही हमारे रूम में रुकेगा। तू संकोच क्यों करता है? छोटी मम्मी का भी मेरे प्रति बहुत लगाव है। वे मेरा बहुत ख्याल रखती हैं।

आप इस बात से अनुमान लगा सकते हैं कि मेरा दादा से इतना लगाव था कि यदि कोई चर्चा करनी हो और दादा सो रहे हों, तो मैं उन्हें जाकर उठा सकता था।

अनुभव – अन्नाजी के साथ आपका सम्बन्ध कैसा है?

संजीवजी – अन्नाजी से भी मेरा विशेष लगाव है। अन्नाजी मुझे लिखने के लिए प्रेरित करते हैं; लेकिन समाज में इतनी व्यस्तता रहती है कि लेखन का समय नहीं मिल पाता है।

अनुभव – आपकी रीति–नीति क्या रहीं?

संजीवजी – 1. ईमानदारी से काम करना है। 2. न्याय, नीति के अनुसार चलना है।
3. काम से काम रखना है। 4. व्यर्थ की राजनीति में उलझना नहीं है।
5. व्यर्थ की निन्दा–आलोचना नहीं करना, भले ही किसी ने गलत ही क्यों न किया हो। फिर भी उसकी निन्दा–आलोचना से बचो; क्योंकि द्रव्यार्थिक नय से देखो तो निन्दा का कोई प्रश्न ही नहीं बनता और पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से देखो तो जिस पर्याय की निन्दा कर रहे हैं वो पर्याय अगले क्षण नहीं रहती। तो फिर क्यों निन्दा कर रहे हो तुम? बात ही ख़त्म हो गयी।
6. हर व्यक्ति में गुण देखोगे तो गुण इकट्ठे होते चले जायेंगे और बुराइयाँ देखोगे तो बुराइयाँ इकट्ठी होती चली जाएँगी। अब निर्णय तुम्हें करना है कि तुम्हें क्या करना है।
7. सामने वाले का विरोध करना ही नहीं; क्योंकि दोष किसी दूसरे का नहीं है, दोष तो अपना है, उदय तो अपना है। इन छोटी–मोटी चीजों में उलझना कहाँ तक ठीक है, जब अपना लक्ष्य मोक्ष है।
8. कोई सलाह मांगे तो सही–सही सलाह देना।
9. संस्था के हित में काम होना चाहिए, व्यक्तिगत नहीं।
10. क्रमबद्ध को जिओ तो मज़ा आएगा। नयचक्र को पार्ट ऑफ़ लाइफ बनालो तो मज़ा आएगा।

अनुभव – प्रभावना में इतना अधिक समर्पण भाव कैसे बना रहता है?

संजीवजी – विद्यार्थियों के साथ में मुझे बहुत अच्छा लगता है। इतना अच्छा कि उनके लिए तो अपन मरने को तैयार हैं। बाहर तत्त्व प्रभावना में परिवार का मुझे हमेशा सपोर्ट रहा। भाव होता है तो प्रभावना होती है।

दादा के साथ 2006 में इंदौर में मैंने दसलक्षण किया था। दादा का स्वास्थ्य ख़राब था तो दिन में 3 समय मैं ही प्रवचन करता था। एक और विद्वान भी तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन करने दादा के साथ आये हुए थे, वरिष्ठ उपाध्याय के छात्र थे; लेकिन उनका पहले ही दिन सूत्रपाठ गलत हुआ तो वो प्रवचन भी फिर मुझे ही करने को कहा गया और फिर मैंने ही किये। इस तरह दिन में 4–4 प्रवचन उस समय मैं किया करता था। तब दादा मेरे प्रवचन वहाँ बैठकर सुनते थे।

आने–जाने का समय निकाल दो। पिछले 28 साल में मुझे याद नहीं कि मैंने कभी–भी प्रवचन बन्द किये हों। एक बार तो चेन्नई से रात में 3 बजे घर आया और सुबह 7 बजे स्मारक में क्लास लेने आ गया। क्लास लेकर घर गया और मंदिर में प्रवचन करने बैठ गया। मेरा ऐसा मानना है कि कोई व्यक्ति सुबह उठके प्रवचन सुनने आ रहा हो और हम सो रहे हों, ये सही थोड़े ही है और इन सबसे अपन को थकान थोड़े ही होती है, इनसे तो एनर्जी मिलती है हमें, इससे तो थकान उतरती है हमारी।

अनुभव – विदेश यात्रा के बारे में कुछ बताइए?

संजीवजी – JAANA और JANA दोनों मुझे विदेश में धर्म के प्रचार हेतु बुलाते हैं। म्यामी में जो मेरे कर्म विषय पर प्रवचन हुए थे, उस सन्दर्भ में शांतिलालजी चौधरी, भीलवाडा का मुझे 2 वर्ष बाद call आया और लगातार 5 से 8 मिनिट वे मेरे प्रवचनों की प्रशंसा करते रहे। उन्होंने कहा कि इन प्रवचनों को दादा के समयसार के सार जैसे शब्दश: लिख के पुस्तक बना दो। मैंने ये सारे 9 घंटे के 6 प्रवचन दो दिन में सुन लिए।

अनुभव – भविष्य में आपकी क्या योजनाएँ हैं?

संजीवजी – बस स्वयं को जानना है, पहिचानना है और उसी में लीन हो जाना है। मेरी क्या सभी की यही योजना होनी चाहिए और इस भव में तो सहज संकल्प प्रभावना का ही है।

तत्त्ववेत्ता के संग
अध्यात्मवेत्ता
Samaysaar
of North America
Kanjiswami.guru

देश-दुनिया में तत्त्वज्ञान की धूममचाते हुए

सरल, सौम्य व्यक्तित्व
डॉ. संजीव गोधा

परिवार के संग

जीना मरना सिखा गए

– पीयूष जैन

मैनेजर : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

मेरे अभिन्न मित्र और साथी संजीवजी के साथ के इतने संस्मरण स्मृतिपटल में आ रहे हैं कि समझ नहीं आ रहा कि क्या भूलूँ और क्या याद करूँ?

कोविड, जो हर किसी के लिए काल बनकर आया था, वही संजीवजी के लिए वरदान बन गया। इस कोविड में संजीवजी ने जो किया, उससे उनकी कीर्ति अमर हो गई। उन्होंनें ऑनलाइन माध्यम से तत्त्वज्ञान की ऐसी अविरल धारा बहाई, जिसमें **क्या बालक, क्या बूढ़े, क्या मुमुक्षु और क्या गैर-मुमुक्षु, क्या जैन, क्या अजैन,** सारे बन्धन टूट गये सबने तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ लिया। भय, निराशा, हताशा के इस गहरे वातावरण में संजीवजी की वाणी **आशा का सूरज बनकर सबको रोशन करने लगी।**

कोविड की बंदिशों के खत्म होते ही देश-विदेश में उनके तूफानी दौरों का एक दौर चला, जिससे वातावरण में तत्त्वज्ञान की एक अलग महक बिखेरी।

पर यह क्या? सूरज अभी चढ़ा ही नहीं था कि अचानक अस्त हो गया...। लोग अभी तो तत्त्वज्ञान से जुड़ना-सीखना शुरू कर ही रहे थे कि सिखानेवाला ही चला गया। **वज्रपात हुआ, शून्यता उत्पन्न हो गई जैन जगत में...**

संजीवजी ने जीवनभर श्रुत आराधना की और अनगिनत लोगों को जीवन जीना सिखा गए; पर मैं आज उनके जीवन की जगह उनके जाने के अंदाज को देखने की कोशिश कर रहा हूँ जिसने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया है। मेरी इस बात को ज्यादा प्रभावी ढंग से हम तब समझ पाएंगे जब स्वयं अपने आपको संजीवजी की ज़गह रखकर देखेंगे।

उम्र मात्र लगभग 46 वर्ष, जीवन तत्त्व प्रभावना की भावना से भरपूर, लोग जिनकी एक झलक के लिए बेताब, देश-दुनिया में अपार ख्याति, आगे 60 वर्ष तक काम करने की चित्त में सुव्यवस्थित प्लानिंग।

अचानक उन्हें सूचना मिलती है कि अब जीवन बहुत नहीं है। इस जगह यदि हम-आप होते तो अपनी मानसिक स्थिति क्या होती? और संजीवजी बिना किसी प्रतिक्रिया, व्याकुलता, घबराहट के उसी पल से निर्विकार भाव से ज्ञाता भाव से सबसे बिलकुल अलग हट गए, स्वरूपगुप्त हो गए, मानो कभी इन सब से कोई वास्ता ही न रहा हो। कोई गिला-शिकवा नहीं, कोई भय नहीं। किसीप्रकार की आकुलता नहीं, साक्षी भाव से घटना को घटित होते देखने लगे। माथे पर कोई शिकन नहीं। अपने जाने को जानते रहे, देखते रहे।

समाधि मरण इसके अलावा और क्या होता है? समाधि मरण की इससे बढ़िया प्रयोगशाला और क्या हो सकती है?

मैं संजीवजी के जीवन जीने के अंदाज़ का जितना कायल हूँ उससे कहीं अधिक उनके मरने के अंदाज से प्रभावित हूँ; और उसमें भी ज्यादा प्रभावित हूँ उनकी पत्नी, पुत्र परिवारजनों के आत्मबल से, जिन्होंने संजीवजी को शांतिपूर्वक जाने में स्वार्थ के विचार बिना पूरी तरह सहयोग किया। वे अपने जीवन से तो सिखा ही गए मरने से कहीं ज्यादा सिखा गए। हम ज्ञाता भाव से जीवन जीना सीखें। इसी भावना से...

प्रभावना विशेषांक

अध्यात्मवेत्ता

मुझे भव का अभाव करने की संजीवनी बूटी दे गए

– श्रीमती संस्कृति गोधा, जयपुर

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जो भारत ही नहीं; अपितु विश्व की एक जानी-मानी शख्सियत हैं; उनके द्वारा पिछले 20 सालों में किए गए समस्त कार्यों की मैं साक्षी रही हूँ।

कर्मोदय की कैसी विचित्रता है कि अभी तक जिनके सम्मान समारोह में जाती थी, जिनका मंच से गुणगान सुनती थी, आज मुझे उनकी श्रद्धांजलि सभाएँ सुननी पड़ रही हैं; मुझे यह कहते हुये गर्व हो रहा है कि **उनकी श्रद्धांजलि सभाएँ भी किसी सम्मान सभा से कम नहीं हैं।** जिस क्षण उनको बीमारी के बारे में पता चला; उस क्षण से अंतिम क्षण तक उनके **चेहरे की चमक फीकी होने के बजाय बढ़ती गई,** यह आश्चर्यकारी था; वरना इतनी बड़ी बात सुनकर तो कोई भी बेहाल हो जाए, पर उन्होंने उसी क्षण से अपने आपको शरीर व रोग से भिन्न अनुभव कर लिया।

वे एक रत्न थे और रत्न सदा ही चमकते रहते हैं, वे हमारे ज्ञान में भी सदा चमकते रहेंगे।

वे मेरे साथ ही हैं, ऐसा एहसास मुझे प्रतिपल होता है। प्रवचन आदि सुनते हुए उनके शब्द कानों में ऐसे गूंजते हैं, जैसे वे साक्षात् मुझे ही सुना रहे हों और कह रहे हों कि **संस्कृति! संयोग का वियोग तो निश्चित ही होता है, वियोग पर ध्यान नहीं दो, संयोग तो क्षणिक हैं, उनकी ओर दृष्टि मत करो। तुम्हारा अपना आत्मा तुम्हारे साथ है, उसका अवलम्बन लो। तुम्हारे में क्या कमी हो गई, तुम अभी-भी अनन्त गुण सम्पन्न हो।** मेरे कानों में गूंजते हुए उनके ये शब्द मुझे संबल प्रदान करते हैं। वास्तव में इस जीव को धर्म ही एकमात्र सहारा है और वो हमें इसी की शरण में रहने की ही प्रेरणा देकर गए हैं, जिसके सिर पर जिनवाणी माँ हो वो सदा के लिए सुखी हो जाता है।

उनकी धर्मपत्नी होना ही मुझमें ताकत भर देता है; क्योंकि उन्होंने जो तत्त्वज्ञान पूरी दुनिया में फैलाया है, वही तत्त्वज्ञान मेरे रोम-रोम में बस रहा है, इस भव में कितना भी पाप कर्म का उदय आ जाए, उसको तत्त्वज्ञान के बल पर आसानी से झेल सकती हूँ। वे बोलते थे कि अगर इस भव में अपना कार्य नहीं किया तो पता नहीं कितने भवों तक इस संसार में भटकते रहेंगे?

उनका रोग, उनके वैराग्य का कारण बना था और अब उनका वियोग मेरे वैराग्य का कारण बनेगा; क्योंकि मैंने उन्हें सहजता और दृढ़ता के साथ प्रत्येक परिस्थिति में शान्त व सहज रहते देखा है। वे मुझे यह सिखाकर गए हैं कि जीना तो कैसे जीना और मरना तो कैसे मरना। वे अमर हैं और उनके द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान पंचम काल के अन्त तक भव्य जीवों के भव के अभाव में निमित्त बनेगा।

उनके कार्य करने का तरीका भी अद्भुत था, इसलिए उन्होंने सभी कार्यों में सफलता हासिल की।

वो 46 वर्ष की उम्र में 70-80 वर्ष जितना काम करके गए हैं, जिसकी मैं प्रत्यक्ष साक्षी रही हूँ। रात हो या दिन निरन्तर एक ही धुन और एक ही लक्ष्य, कैसे जन-जन के हृदय में जिनवाणी हो? उनके और मेरे विचार हमेशा मिलते थे और वे मुझसे हर बात शेयर करते थे कि उनकी आगे की क्या-क्या प्लानिंग है, उन्होंने बहुत कुछ सोच रखा था, जिसे मैं और आर्जव (पुत्र) पूरा करने की कोशिश करेंगे। उनके द्वारा की गई तत्त्व-प्रभावना ने अनेकानेक लोगों के जीवन को आमूलचूल परिवर्तित किया है; फलतः वे हर एक व्यक्ति के हृदय में निवास करते थे और आज भी निवास करते हैं। उनके चले जाने से न केवल घर-परिवार के लोगों को; अपितु जैनसमाज के सभी समुदायों के लोगों को ऐसा लगा कि जैसे उनके अपने ही घर के किसी सदस्य ने उनसे विदा ले ली हो। इसप्रकार से इन्होंने बिना किसी विरोध के सम्पूर्ण जैनसमाज को जोड़ने का अद्भुत कार्य किया।

मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे इस पर्याय में, उनकी जीवन-संगिनी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रभावना

जिस व्यक्ति का एक पल का साथ भी अपरिचित जन के लिए आल्हादकारी हो, उस व्यक्ति के साथ एक-एक पल जीने का मुझे 20 साल तक समागम मिला। घर-परिवार इष्टजनों के प्रति भी उनकी एक ही भावना रही कि सभी इस निर्मल तत्त्वज्ञान में ही लगें। आर्जव के प्रति भी उनके सदैव यही भाव रहे कि यह भी आत्मकल्याण करते हुए तत्त्व-प्रभावना करता रहे। वे एक अच्छे प्रवचनकार, लेखक, सम्पादक, मोटिवेशनल स्पीकर के साथ-साथ एक अच्छे पिता, पुत्र, पति और दामाद भी थे।

वे अपनी वाणी या लेखनी से हमें जो कुछ देकर गए हैं, वह सब हमारे भव के अभाव के निमित्त हैं।

उनका अन्तिम एक महीना किसी आश्चर्य से कम न था, **जीवनभर तत्त्वप्रचार करने वाले व्यक्ति ने सारे विकल्पों को तोड़कर मात्र तत्त्व का ही विचार किया।** रोग ने तो उन्हें छुआ ही न था। वे तो घर, कुटुम्ब, परिवार यहाँ तक कि शरीर से भी मोह को छोड़कर निज में ही लीन हो गए थे।

अन्तिम समय में आत्मिक चिन्तन के साथ उन्होंने अपने समय को व्यतीत किया। जहाँ आकुलता होती है, वहाँ दुख होता है; पर उनका अन्तिम एक महीना पूर्ण निराकुलता के साथ बीता। दु:ख या परेशानी तो उन्हें छू भी नहीं पाई।

मैं सबसे ज्यादा आभारी डॉ. आशीषजी मेहता की हूँ; जिन्होंने मुझे सही मार्गदर्शन देकर उन्हें अन्त समय तक स्वस्थ रखने में मेरी मदद की, उन्होंने सिर्फ उन्हें ही नहीं; अपितु मुझे भी एक बड़े भाई की तरह सम्भाला, हर कदम पर मेरा साथ दिया व मुझे आकुल-व्याकुल नहीं होने दिया।

उन्हें डॉ. आशीषजी मेहता जैसे धार्मिक चिकित्सक मिले, जिन्होंने अभक्ष्य दवाइयों का सेवन न कराकर पूर्ण शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों का ही सेवन कराया, जिससे उनकी सेहत में अपेक्षा से अधिक सुधार हुआ और इस रोग के काल में भी वे स्वयं को निराकुल महसूस कर रहे थे, और इतना ही नहीं; संयोग तो देखो उन्हें डॉ. साहब भी ऐसे मिले जो उनसे तत्त्वचर्चा ही किया करते थे। पर आयु कर्म के आगे किसका जोर चलता है। उसे टालने में तो इन्द्र-नरेन्द्र भी समर्थ नहीं हैं।

जब कभी उन्हें आयुर्वेदिक दवाइयाँ देते हुए मैं मज़ाक में कहा करती थी कि आपको अध्यात्मचक्रवर्ती की उपाधि मिली है और आपको चक्रवर्ती के समान ही औषधियों में स्वर्ण भस्म, हीरा भस्म आदि दी जा रही हैं। तो एक सहज मुस्कान उनके चेहरे पर आ जाती थी।

दादा के हजारों शिष्यों में सर्व प्रथम दादा उन्हें याद करते थे। दादा जिस सहजता की चर्चा पिछले कई वर्षों से कर रहे हैं, उन्होंने अन्तिम समय में उसी सहजता को जीवन में अपना लिया था।

पिछले 2 साल में जब भी उनसे कोई यह पूछता था कि आप क्या करते हो? तब वे यही कहा करते थे कि मैं सहज रहने का अभ्यास करता हूँ और उन्होंने वही किया। वे पहले भी सहज रहे और बाद में भी सहज रहे। स्मारक के भूतपूर्व विद्यार्थियों से मज़ाक-मज़ाक में कहा करते थे कि मैं भूतपूर्व नहीं; अभूतपूर्व हूँ। (क्योंकि उन्होंने स्मारक से शास्त्री नहीं किया था) पर **वे वास्तव में अभूतपूर्व कार्य ही करके गए। चाहे वह धर्म के प्रचार का हो या चाहे धर्म को जीवन में धारण करने का।**

वे अन्तिम समय में शारीरिक और मानसिकरूप से पूर्ण स्वस्थ थे। स्वस्थ का शाब्दिक अर्थ तो **स्व में स्थित** होना ही होता है और **वे वास्तव में स्व में स्थित ही थे।** इतनी बड़ी रोगावस्था होने पर भी उससे भिन्न ही अनुभव कर रहे थे और इसी कारण से रोग के कारण भी अन्तिम समय में उन्हें अधिक दु:ख नहीं हुआ। अपने व्यक्तिगत कार्य भी वे स्वयं ही कर रहे थे, उन्होंने किसी से भी रंचमात्र सहयोग नहीं लिया। मैं भी बस उनके साथ खड़ी रहती थी; बाकि सब काम वे स्वयं ही करते थे।

जीवनभर मुझे और जगत को पर-पदार्थों से भिन्न अनुभव करने की प्रेरणा देनेवाले व्यक्ति ने अन्तिम समय में इसी बात को धारण किया और पर से निज को सदैव भिन्न ही अनुभव किया। इस बात की मैं साक्षी हूँ; क्योंकि मैं हर पल उनके साथ ही थी।

अध्यात्मवेत्ता

उन्हें परिवार के अलावा किसी भी व्यक्ति से मिलने में कोई रुचि नहीं थी, वे अपने समय का सदुपयोग करना चाहते थे, किसी से मिलने में और व्यर्थ की चर्चाओं में अपने समय को बर्बाद नहीं करना चाहते थे, **उन्हें आत्म-आराधना करने के लिए या समाधिमय जीवन जीने के लिए किसी भी बाहरी व्यक्ति की आवश्यकता नहीं थी; उनका तो परिवार ही तत्त्वज्ञान से पूर्ण संस्कारित था।** मैंने उन्हें स्वयं ही चिंतन करते हुए एवं आनन्द लेते हुए देखा है। **रोग अवस्था में उनके साथ जो भी निराकुलतामय परिस्थिति बनी, वह उनकी स्वयं की योग्यता के अनुसार हुई, इसमें मेरा कोई कर्तृत्व नहीं था, यह तो मेरा कर्तव्य था।** इसमें मेरे पूरे परिवार ने मेरा सहयोग किया। घर में सिर्फ मैं, मेरे दोनों भाई व भाभी और कुछ दिन आर्जव भी रहा। बस हम लोगों केसाथ ही वे कम्फर्टेबल थे, पूरा समय सिर्फ तत्त्वचर्चा ही किया करते थे; बाकी बातें बहुत कम करते थे।

शरीर और आत्मा को भिन्न-भिन्न अनुभव करने की वे मुझे निरन्तर मौन प्रेरणा देते रहे। मैं भी उनकी इसी प्रेरणा के अनुरूप चलकर अपने जीवन को मोक्षमार्ग में संलग्न करूँगी एवं आत्महित के साथ आगे बढ़ने का यथाशक्ति प्रयत्न करूँगी।

समाधि तो नि:कषाय भाव का नाम है, ऐसे नि:कषाय भाव में ही इन्होंने अपना अन्तिम समय निकाला और जिनवाणी के सहारे भव के अभाव का उपक्रम जगत को बताकर स्वयं भी उसी मार्ग पर आगे बढ़ गए....

विरासत में सर्वोत्कृष्ट तत्त्वज्ञान मिला

– आर्जव गोधा, जयपुर

एक पुत्र के लिए उसके जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान पिता का होता है, मेरे लिए भी मेरे पिता ही आदर्श हैं, उन्होंने जो वीतरागी तत्त्वज्ञान पूरे विश्वभर में फैलाया है, मैं भी उसे फैलाना चाहता हूँ। आज भले ही वे प्रत्यक्षरूप से मेरे साथ नहीं हैं, पर वे उनके द्वारा दिये गए संस्कारों में मुझे हमेशा नज़र आते रहेंगे। लोग कहते हैं कि अब वे नही रहे; परन्तु मैं ऐसा नहीं मानता, वे अपने ज्ञानशरीर से मेरे व देश-विदेश के लोगों के दिलों में सदियों तक बसे रहेंगे।

उन्होंने जो क्रमबद्धपर्याय पूरे विश्व को समझाई है, वह अब हमें अपने जीवन में उतारना है। **वे स्वयं तो उतार ही गये और हमें कैसे उतारना है, वह भी सिखा गए।** उन्होंने जीवनभर धर्म को समझाया और समझा है, उन्होंने सही मायने में अपने जीवन में धर्म को उतार लिया था। **इतनी बड़ी बीमारी होने के बाद भी हमने कभी उनके चेहरे पर एक विकल्प मात्र की शिकन तक नहीं देखी,** मानो उन्होंने शरीर से सम्पर्क ही तोड़ लिया हो। उनके जीवन की छोटी-छोटी दैनिक क्रियाओं से भी मैंने बहुत बड़ी-बड़ी चीजें सीखी हैं। वे हर कार्य बहुत ही उत्साह से किया करते थे। दुनिया के लिये तो वे मात्र गुरु थे; परन्तु मेरे लिए वे सबकुछ ही थे।

उन्होंने मुझे हर परिस्थिति में सहज रहने, धैर्य धारण करने की ही शिक्षा दी है। जो ART OF LIVING उन्होंने मुझे सिखाई है, उसी के माध्यम से मैं अब अपना जीवन जीना चाहता हूँ। दादा की जो सहजता है, उसी को उन्होंने अपनाया और पूरी दुनिया को समझाया। मुझे बचपन से उन्होंने इसी धर्म के मार्ग पर लगने की शिक्षा दी है, **वे हमेशा कहते थे कि तू पूरे जीवन में कुछ कर या मत कर, बस! इस धर्म को अपना ले, यह जो मनुष्य भव तुझे मिला है, इसे सार्थक कर ले।**

वे एक बहुत ही संघर्षशील व्यक्ति थे, उन्होंने जीवनभर बहुत संघर्ष किया; परन्तु कभी उस बात का पता नहीं चलने दिया। मेरी मम्मी ने उनका हरकदम पर साथ दिया है, आगे भी मुझे मम्मी के रूप में पापा का ही साथ मिलेगा; **क्योंकि मम्मी और पापा दोनों के विचार समान ही हैं और दोनों ही तत्त्वज्ञान में समान रुचि रखते हैं।**

उन्होंने इस तत्त्वज्ञान को विश्वभर में पहुँचाने के लिए पूरी ज़िन्दगी लगा दी और **अब मैं भी उन्हीं की तरह इस तत्त्वज्ञान को अपनाकर, समझकर धर्म की प्रभावना करने में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ।**

कोहिनूर हीरा है संजीव गोधा

– प्रदीप-कुसुम चौधरी, किशनगढ़

श्री संजीवकुमारजी गोधा हमारे दामाद हैं, हमने उन्हें पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में प्रवचन करते हुए देखा था, तभी हमने ऐसा विचार किया था कि हमारे भी ऐसे ही योग्य दामाद होने चाहिए, जो कि धार्मिक क्रियाओं में रुचिवंत हों। फिर मेरी पत्नी कुसुम ने मेरी बेटी संस्कृति को उनसे विवाह करने के लिए तैयार किया। मेरी पत्नी ने बेटी को समझाते हुए कहा कि ये तेरे इस भव को भी सुधारेंगे तथा परभव को भी सुधारेंगे। तब फिर बेटी ने मानस बना लिया तथा इस काम में छोटे दादा डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल व बड़े दादा ने भी हमें उचित मार्गदर्शन दिया तथा कहा कि संजीव गोधा कोहिनूर हीरा है।

उस समय संजीवजी स्मारक में कार्यरत थे तथा वहाँ से 6,000 रूपये मासिक मानदेय प्राप्त करते थे। डॉ. भारिल्ल ने हमें समझाते हुए यह भी कहा कि तुम रुपयों को मत देखो! इसकी धार्मिक काबिलियत को देखो तथा मेरी एक शर्त है कि विवाह के पश्चात् तुम इसे व्यापार में मत लगा देना; क्योंकि सेठ लोग शादी करके बिजनेस में लगा देते हैं। तब हमने दादा से वादा किया कि हम उन्हें व्यापार में नहीं उलझाएंगे तथा उनसे कहेंगे कि वो इस मार्ग को न छोड़े तथा स्मारक को भी न छोड़ें और हमने ऐसा ही किया तथा संजीवजी भी ऐसा ही चाहते थे।

बेटी संस्कृति का अडिग निश्चय सबसे पहले हमने सगाई के समय देखा। अनेक रिश्तेदार आदि लोगों ने उस समय उसे खूब समझाया था कि 6,000 रूपये महीने कमानेवाले व्यक्ति के साथ जीवन निर्वाह कैसे होगा? जीवन भावुकता से नहीं; अपितु रुपयों से चलता है। तब भी संस्कृति ने किसी की नहीं सुनी; बल्कि अपने विचारों पर अडिग रही।

उस समय इसकी मम्मी ने और मैंने इसका ही साथ दिया और **हमने भी धन को नहीं, वरन् धर्म को ही देखा** और सन् 2003 में हमने संस्कृति का विवाह संजीवजी से कर दिया, जिसका फल धार्मिक लाभ के रूप में मुझे, मेरी पत्नी व दोनों बेटों और बहुओं को मिला। विवाह के पूर्व जिन लोगों ने संस्कृति को यह समझाने का प्रयत्न किया था कि जिन्दगी पण्डिताई से नहीं; वरन् पैसों से चलती है, उन्होंने ही विवाहोपरान्त दोनों को बहुत सराहा तथा परिवार ने भी उनके ज्ञान का भरपूर लाभ लिया।

संस्कृति का दूसरा अडिग निर्णय हमें संजीवजी के अंतिम समय में देखने को मिला, जब उस पर दूसरे डॉक्टर्स को दिखाने का बहुत अधिक दबाब था, तब भी वो इस निर्णय पर अडिग रही कि डॉ. आशीषजी मेहता को ही दिखाना है, अन्य किसी भी डॉक्टर को नहीं। अन्यथा अन्य डॉक्टर नियम से उनका शारीरिक छेदन-भेदन करके उनके अंतिम समय को बिगाड़ देगें; जबकि डॉ. मेहताजी ने तत्त्वोपदेश के साथ शुद्ध औषधियों से उनकी चिकित्सा की।

संजीवजी का और हमारा 20 वर्षों का साथ रहा, उन्होंने किशनगढ़ को अपना घर ही समझा। वो यहाँ सदैव बेटे की तरह ही रहे। कोरोना काल में लगातार 3 महीने हमें उनके प्रवचनों और तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

जब भारतवर्ष कोरोना रोग से सन्तप्त था, तब भी वे घर-घर में youtube के माध्यम से जिनवाणी रूपी अमृतपान कराकर लोगों को शान्त व सहज करते हुए मोक्षमार्ग में संलग्न कर रहे थे। **उनका अन्तिम एक महीना भी मैंने देखा कि इतनी बड़ी बीमारी को भी उन्होंने साम्यभावपूर्वक सहन किया। मेरी बेटी ने मात्र अन्तिम एक महीना ही नहीं; अपितु जीवनभर समस्त धार्मिक कार्यों में उनका सहयोग किया।**

सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज और स्मारक परिवार ने अन्तिम समय में हमारा जो हौसला बढ़ाया और हमारा जो सहयोग किया, इसके लिए हम उनके हार्दिक आभारी हैं तथा डॉक्टर आशीषजी मेहता के भी हम विशेष आभारी हैं, जिन्होंने अन्तिम समय में उन्हें यथासंभव शारीरिक और मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रखा।

संजीवजी गोधा आज भी अपनी प्रवचन रूपी वाणी के माध्यम से हम सबके साथ ही हैं। हम सब उनकी वाणी का लाभ लेते हुए मोक्षमार्ग में अग्रसर हों, इसी भावना के साथ मैं अपनी बात को पूर्ण करता हूँ।

अध्यात्मवेत्ता

कुल धर्म दीपक

– महेन्द्र-मंजू गोधा, जयपुर

जगत में माता-पिता को इस बात का श्रेय दिया जाता है कि माता-पिता ही अपने पुत्रादिक में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करते हैं; परन्तु यहाँ हम यदि ऐसा कहें कि संजीव ने हमारे अन्दर सच्चे धार्मिक संस्कारों के बीज बोए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हम नियमित दोनों समय उसके प्रवचनों का लाभ लिया करते थे, जिसके माध्यम से हमारा उपयोग भी निरन्तर तत्त्वचर्चा में लगा रहता था और वास्तव में करने योग्य कार्य भी यही है। संस्कृत में एक श्लोक है

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी।।

जिसप्रकार रात चन्द्रमा को प्राप्त कर प्रकाशित होती है। उसीप्रकार चाहे एक ही पुत्र क्यों न हो यदि वह विद्यायुक्त व सज्जन है, तो उसमें पूरे कुल को प्रसन्नता होती है। **ऐसे विद्यावान सज्जनोत्तम पुत्र को पाकर हम भी अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं; क्योंकि जो कार्य उसके द्वारा किया गया है, वह कार्य तो गणधर, आचार्य परमेष्ठी आदि ही मुख्य रूप से करते हैं।**

गृहस्थ धर्म को अपनाते हुए, माता-पिता, परिवार आदि का ध्यान रखते हुए धर्म की प्रभावना करना श्रमसाध्य कार्य है; लेकिन संजीव ने दोनों में ही सामंजस्य बनाया, जिसमें संस्कृति ने उनका पूर्ण सहयोग किया और धर्म को ही ऊर्ध्व रखते हुए प्रभावना का ही कार्य किया तथा प्रभावना भी आत्माराधना पूर्वक की; जो अल्पकाल में उसके भव के अभाव में निमित्त बनेगी।

संजीवजी सच्चे मुमुक्षु थे

– श्रीमती श्वेता-तिलक चौधरी, किशनगढ़

परद्रव्यनतैं भिन्न आपमें, रुचि सम्यक्त्व भला है।
आप रूप को जानपनों सो, सम्यक् ज्ञान कला है।
आप रूप में लीन रहे थिर, सम्यक् चारित्र सोई।

ऐसा लगता है मानो कविवर दौलतरामजी ने ये पक्तियाँ आ. संजीवजी गोधा के लिये ही लिखी हों। इन्हीं पंक्तियों को उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ किया था। अर्थात् जीजाजी (संजीवजी) ने सचमुच में सभी परद्रव्यों से स्वयं को भिन्न करके, स्वयं में ही अपनी रुचि और उपयोग को समेट लिया था, उनका मात्र एक ही कार्य था अध्ययन, मनन, श्रवण। **अतः वे दूसरों से अत्यन्त भिन्न व निराले ही थे।** इसीप्रकार वे जीवन पर्यन्त स्वयं को जानने एवं स्वयं के कल्याण में ही तन, मन, धन सर्वस्वपने समर्पित रहे। साथ-साथ हमें भी अपने कल्याण का मार्ग एवं मनुष्य भव को सार्थक करने का ज्ञान कराते रहे। **अतः आप रूप को जानपनों सो सम्यक् ज्ञान कला है।** वे जीवन के अन्तिम माह में भी स्वयं में इसप्रकार लीन हो गये। मानो जो आपने जीवनभर किया था, उसको स्वयं में उतार लिया हो। **अतः आप अपने रूप में लीन रहे थिर सम्यक् चारित सोई।**

इस तरह अन्तर्मुख हो आराधना करके आपने अपने मोक्षमार्ग को प्रशस्त कर लिया। धन्य है! आपकी साधना, आराधना। **मैं तो स्वयं को भी धन्य मानती हूँ कि मैं भी ऐसे व्यक्ति के परिवार की सदस्य हूँ, जहाँ मुझे स्वयं को जानने-समझने का अवसर प्राप्त हुआ।** मैं अपने सास-ससुर की भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे ऐसे परिवार में स्थान दिया, जिसमें मुझे सच्चे धर्म को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। बस अन्तिम भावना यही है कि ये जो श्रेष्ठ धर्म हमें प्राप्त हुआ है, उसी को समझकर, जानकर, उसी में लीन होकर हम भी अपने मोक्षमार्ग में आगे बढ़े।

प्रभावना

आश्चर्यकारी व्यक्तित्व

– अरिहन्त चौधरी, किशनगढ़

दुनिया की नजरों में वो मेरे जीजाजी थे; लेकिन मैं ही इस बात को जानता हूँ कि वो मेरे जीजाजी होने के साथ, मेरे बड़े भाई भी थे, मेरे मार्गदर्शक भी थे। हमारी सभी समस्याओं के समाधानकर्त्ता भी वे ही थे। कहने को किशनगढ़ उनका ससुराल था, पर वास्तव में यह उनका दूसरा घर ही था। मेरे पिताजी भी उन्हें अपना बेटा ही मानते थे और वो भी मुझे अपना छोटा भाई कहकर ही पुकारते थे।

हमने उनके साथ अनेक यात्राएँ की हैं। देश-विदेश में हमने उनके साथ जितनी भी यात्राएँ कीं। वे हमेशा घर का शुद्ध सात्त्विक भोजन ही किया करते थे और उनके साथ हम सभी भी। इन भ्रमणों के दौरान भी हमारी तत्त्वचर्चायें बरकरार रहती थीं।

जब भी मैं उनके प्रवचन में उपस्थित रहता था तो प्रवचन के दौरान मेरा नाम लिए बिना न रहते थे, जिससे मेरा ध्यान भी प्रवचन के प्रति एकाग्र हो जाया करता था और मुझे भी बहुत अच्छा लगता था।

मुझे इस बात का गर्व है कि अन्तिम एक महीने के दौरान मैं उनके साथ ही था और मुझे इस बात का अभी भी बहुत आश्चर्य है कि कोई ऐसी परिस्थिति में भी इतना शान्त और सहज कैसे रह सकता है? यह देखकर तो हमें हमारी तकलीफ भी कम लगने लगती थी। सिद्धचक्र मण्डल विधान में मुनिराजों की पूजन में एक अर्घ्य मुनिराजों के लिए चढाया जाता है -

एक सम भाव सम और नहीं रिद्धि है।
सर्व ही रिद्धि जाके भए सिद्ध हैं।।

जीजाजी ने अंतिम समय में भी साम्यभाव को ही धारण किया था, वे आगे चलकर मुनि होकर नियम से अरिहन्त अवस्था को प्राप्त करके सिद्ध होयेंगे और हम भी उनके द्वारा बताए गए मोक्षमार्ग के उपदेश को जीवन में धारण कर मोक्षमार्ग को अवश्य प्रशस्त करेंगे।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

– डॉ. दिव्या चौधरी, किशनगढ़

जैसा नाम वैसा काम अपने नाम को अगर किसी ने सार्थक किया है, तो वे हैं संजीवजी गोधा। **संजीव का अर्थ है जीवन देना। सही मायने में उन्होंने हमें एक धर्मरूपी जीवन कैसे जीना चाहिए, वह अपनी जीवन शैली से सिखाया।**

रिश्ते में तो वह मेरे नन्दोई लगते हैं। यहाँ मैं कोई भी भूतपूर्व रिश्ते का प्रयोग नहीं करना चाहती; क्योंकि जो माल वह मेरे लिए छोड़ गए, उससे वह अभूतपूर्व हो गए। हमने उन्हें जमाई या नन्दोई तो बिल्कुल नहीं माना। वह तो घर के एक आदर्श बड़े बेटे जैसे थे, **जो हमारे जीवन की लौकिक व पारलौकिक कोई भी समस्या हो solve कर देते थे।** कुछ शब्दों का प्रयोग में यहाँ उनके व्यक्तित्व को बताने के लिए करना चाहूँगी।

1) **unriveval** - देश-विदेश में सहस्राधिक प्रवचन कर आपने जैनधर्म के साथ-साथ अपने नाम का भी परचम फहराया है।

2) **Moulel** - जिसप्रकार सोना किसी भी आभूषण में ढाल दिया जाता है, उसीप्रकार जीजाजी कैसी भी परिस्थिति हो अपने-आप को Moulel कर लेते थे। Covid के समय में उनके साथ 3 महीने Lock down में रहने का मौका मिला। बच्चों के साथ बच्चों जैसे, बड़ों के साथ बड़े और साधर्मी के साथ धर्म चर्चा में लीन हो जाना, यह सब कैसे कर लेते हैं? सच में आश्चर्य की बात है।

अध्यात्मवेत्ता

3) **Complete** : उनके व्यक्तित्व में कोई कमी नहीं थी। वह हर फील्ड में expert थे और अपनी हर जिम्मेदारी को सही से निभाते थे। कोई भी रिश्ता हो चाहे वह एक पिता का हो, बेटे का, पति का या फिर हमारे बच्चों के लिए फूफाजी का। हर रिश्ते को बखूबी निभाते थे।

अन्त में सिर्फ मैं यही लिखना चाहूँगी कि हम उनके जीवन से जितना सीख सकें, वह सीखें। उनके अन्त समय की मैं खुद साक्षी रही हूँ। एक महीना जैसे उन्होंने बिताया है, वह सही में कोई सम्यग्दृष्टि जीव ही गुज़ार सकता है, उनके चहरे पर सदैव एक शान्त मुद्रा थी। वे तो अपने रोग से और शरीर से परे हो चुके थे।

हम सब यही कोशिश करें कि उनके प्रवचनों के माध्यम से बताए गए धर्म को अपने जीवन में उतारें और मोक्षपथ पर आगे बढ़ें। इतनी छोटी उम्र में वह मोक्षपथगामी हुए। हम भी शीघ्र सम्यग्दर्शन प्राप्त कर, उन्हीं के साथ मोक्ष गति को प्राप्त करें।

डॉ. संजीव गोधा : एक महन्त पुरूष

– डॉ. अशीष मेहता, मुम्बई
न्यूरो एवं स्पाइन सर्जन, रीच केन्डी सेफी अस्पताल, मुम्बई

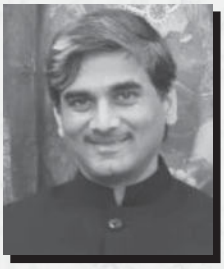

प्रथमवयसि दत्तं तोयमल्पं पिबन्तः
शिरसि निहितभारा नारिकेला नराणाम्।
उदकममृतकल्पं दद्युराजीवितान्तं–
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।।

बीज की आयु के प्रारंभिक काल में प्राप्त अल्प जल ग्रहणकर विशाल वृक्ष में परिवर्तित हो जाता है। सूक्ष्म जलबिंदुओं का वह छोटा सा समूह वृक्ष संवर्धन एवं संरक्षण में प्रचंड गोपित योगदान देता है, उस योगदान को स्मृति में सतत् जीवित रखते हुए, नारियल वृक्ष विवेक एवं आदरसहित अनेक जलबिंदुओ के समूह को संपुष्टित कर स्वास्थ्यवर्धक, बलवर्धक, अमृततुल्य जल में परिवर्तित कर, श्रीफल पात्र में शिरोधारण किए रखता है। श्रीफल वृक्ष, श्रीफल पात्र में संचित अमृततुल्य जल प्रदान कर, मानो पहली बूंद का उपकार हमेशा स्मृति में जीवित रखे रहता है।

अत्यंत विकट संसार-सागर की प्रचंड़ कठिन परिस्थितियों में वीतरागी अस्खलित मुक्तिद्योतक वाणी के धाराप्रवाह से, संजीवजी, अध्यात्मपिपासू लोगों के, संसार-सागर को पार करने के प्रखर उद्यम में अपना योगदान अंकित करते रहते थे।

अपने जीवन के पूर्वार्ध में अध्यात्मविद्या बीज ग्रहण कर, गौरवान्वित होने का, आदर सहित जैसे उपकार चुका रहे हों।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म उपकार भी साधु तुल्य मानव हमेशा स्मृति में उजागर रखकर जीवन कार्य संपन्न करते हैं।

अपनी अध्यात्मशिक्षा का सफर जहाँ सामान्य कार्यकर्ता के पद से शुरू किया था, शास्त्री पद की विधिवत् शिक्षा न पाकर भी, अपनी मेधा के बलबूते पर उस ही संस्था के उच्चतम शिखर पर जाकर समाप्त भी किया। टोडरमल स्मारक एवं छोटे दादा (हुकमचंदजी भारिल्ल) के जीवन के वह एक अभिन्न अंग बने।

उनका शिक्षण एकलव्य की भाँति था, दादा के विद्यार्थी न होते हुए भी, उनके सान्निध्य में वह अध्यात्मगंगा में डुबकी लगाते हुए, ज्ञानगंगा को शिरोधारण करते गए।

संजीवजी से प्रारंभिक परिचय, एक लंबे अरसे तक मात्र प्रवचनों के माध्यम से रहा। निकट परिचय, समय के परिमाण से अल्पकालीन किंतु हृदयगत हुआ। हमारा प्रथम संवाद 2020 में हुआ, अंतिम 2023 में। अति विशाल क्षयोपशम ज्ञान

प्रभावना

संपुट के धनी होने पर भी अभिमान के अंश का भी हमने कभी अनुभव नहीं किया।

पहली बार जब वार्तालाप हुआ, तब कॉविड महामारी के कारण प्रत्यक्ष मिलना न हो पाया था; किंतु जिस तकलीफ से वह महीनों तक जूझते रहे, उसका निराकरण मात्र आहार शुद्धि से कुछ हफ्तों में पाया, यह हमारा पहला निकट परिचय था।

2020-21 में 2 वर्षों तक हम सुबह जूम के माध्यम से योग एवं न्युरोप्लास्टिसीटी के अभ्यास में जुड़े रहे। न्युरोप्लास्टिसीटी अभ्यास में आप निरंतर सतत् रुचि बनाए हुए थे। न्युरोप्लास्टिसीटी अभ्यास द्वारा अल्पकाल में शरीर एवं मन की सुषुप्त शक्तिओं को उजागर कर, अपनी आत्मसाधना को प्रखर बनाया।

2023 जनवरी के मध्य में अचानक संजीवजी का ध्वनिसंदेश आया, ''मार्गदर्शन की आवश्यकता है, कृपया फोन करें।'' उस दिन से ले कर, फरवरी मध्य तक संजीवजी से सतत् घनिष्ठ संपर्क बना रहा। हमने इस समय दरम्यान आपके मुखमण्डल पर कभी भी आक्रोश, क्लेश या आकुलता के भाव नहीं देखे। शारीरिक अस्वस्थ्यता, असीमित प्रतिकूलताओं से भरे रहने के बावजूद भी आपने अध्यात्म, आध्यात्मिक साहित्य-संगीत से प्रीति बनाए रखी। दूरगामी परिमाणों का आविष्कार स्मृति में न करते हुए, आपने स्मृति को केवल आत्मलक्षी परिणामों के लिए सीमित कर दिया।

जिनशासन के मूलभूत सिद्धांतों की नींव को लक्ष्य में रखते हुए। मात्र मज्जातंतु शल्यचिकित्सा (न्युरोसर्जरी) ही नहीं अपितु; वैविध्यपूर्ण समग्र दृष्टिकोणों (holistic health) को समाहित करते हुए, आयुर्वेद, ध्वनि, प्राण, स्पर्श, ऊर्जा जैसे कई सुचारू माध्यमों द्वारा संजीवजी के उपचार की रूपरेखा बनाई गई। ध्येय यह था कि साधन (शरीर एवं मन) आत्मोपयोगी अवस्था में रहे एवं जीवन में मात्र पल नहीं, पलों में जीवन जीते रहें। यह उपचार पद्धति का चुनाव एवं निर्णय करने में संस्कृतिजी का प्रखर मनोबल ही मुख्य कारण बना।

संजीवजी की स्वास्थ्य रक्षा हेतु हम व्यक्तिगत एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य का ध्यान एवं भान रखते हुए, उपयोग एवं कार्य को दिशा देते गए। किंतु वस्तु स्वातंत्र्य की नींव मजबूत बनी रहे, उसकी जागृति बनाए रखी।

जो सहजता आपके प्रवचनों में सुनाई देती थी, वह सहजता आपके आचरण में भी आती थी। आपने अपनी गंभीर बीमारी के बारे में जब पहली बार विस्तृत रूप से जाना, तब भी आपकी मुखाकृति समता सहित शांत ही रही। आपने परीस्थितियों को स्वीकार कर लिया। परीस्थितियों का प्रभाव आपकी मनःस्थिति पर हमने न देखा।

उपचार दरम्यान अनेक बार अत्यंत विकट परीस्थितियों का उद्भवन हुआ, किंतु आप कभी विचलित नहीं हुए। रोग एवं उपचार-पद्धति में जब भी प्रतिकूल वेदन होता था, तब भी आपका साम्यभाव बना रहा। आपने हर प्रकार की परिस्थिति में उपचार-पद्धति में अपना संपूर्ण सहयोग दिया। आपके चाहनेवालों का विशाल-वृंद आपके स्वास्थ्य संबंधी विविध उपयोगों में उलझता रहा; परंतु आप उस ओर भटके ही नहीं। समाधिमय जीवन ही समाधिमय देह परिवर्तन का अवसर प्रदान करता है, समाधिमरण मात्र व्यवहार से कहा जाता है। संजीवजी ने इस उक्ति को सार्थक कर हमारे लिए ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया है। **संजीवजी पर्याय का समाधिस्थ हो पाना, यह उस अव्यक्त पवित्र आत्मद्रव्य की योग्यता है, जिसे हम संजीव गोधा नामक शरीर द्वारा पहिचानते थे। संस्कृतिजी का साथ-सहकार संजीवजी के सामर्थ्य का प्रेरणास्रोत तो था ही, यह ही प्रेरणास्रोत आर्जवजी के उज्जवल जीवन का मार्ग प्रशस्त करे यह अभ्यर्थना।** मुमुक्षु भावना एवं स्वभाव का ज्ञान एवं ध्यान, स्वास्थ्य संवर्धन के लिए केंद्र में रखने से कार्य सरल भी होता है और निर्भार भी।

सार्वत्रिक पहलुओं को लक्ष्य में लेते हुए, **आयुर्वर्धन,** समाज, व्यक्ति एवं जिनधर्म की सेवा का उत्तम मार्ग व्यवहार से समझ में आता है। यह जितना सामान्यजन के लिए जरूरी है, उससे कहीं अधिक धर्मप्रवर्तन में लगे जीवों के लिए आवश्यक है। **आयुर्वर्धन,** स्वास्थ्यजागृति, पर्याप्त गाढ निद्रा, नियमित समयोचित व्यायाम, सात्विक शुद्ध आहार, शांत जागृत मन, स्वच्छ प्रदूषण रहित वातावरण व्यवहार से अति आवश्यक है।

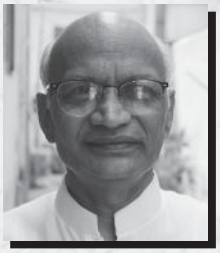

सजीव संजीव संस्मरण

डॉ. संजीवकुमार गोधा

– पण्डित अरुण शास्त्री, बण्ड
सह सम्पादक : वीतराग विज्ञान

'परोपकाराय सतां विभूतयः'(सज्जनों भव्यों की विभूतियाँ, जन्म से परोपकार के लिए होती हैं) यह सूक्ति संजीवजी केजीवन में चरितार्थ दिखाई देती है, उनके सम्पूर्ण जीवन को व्याख्ययित करती है; क्योंकि परोपकार जिनके जीवन का लक्ष्य होता है, वे संजीवजी जैसे होते हैं, संजीवजी होते हैं।

उनके पास अध्यात्म संजीवनी थी, जिसे उन्होंने भव्यों पर भरभर के लुटायी। अनेकों का जीवन बदल दिया, अनेकों को वदलाव की प्रेरणायें दीं। अध्यात्म संजीवनी से अज्ञान-गरल प्राशन से मृतप्राय: जनों को अमरता प्रदान की।

अपने सुख-दुःख स्वार्थों को गौण करनेवाला ही परोपकार, तत्त्व प्रचार-प्रसार कर सकता है। आपने अपने सुख, दुःख, दर्द, स्वार्थ को गौण कर दिया था, यहाँ तक कि शरीर-त्याग से चार माह पूर्व तक घर नहीं आये थे। तत्त्व प्रचार-प्रसार में लगे रहे। इतना त्याग उनके जीवन के तत्त्वप्रचार-प्रसार व्रत का ही परिणाम था।

कभी कभार पर्युषण पर्व, अष्टाह्निका पर्व आदि दिनों में शास्त्र स्वाध्याय कराना अलग बात है और उसे जीवन का अंग बनाकर निरंतरता प्रदान करना अपूर्व बात है। संजीवजी सब विद्वानों से अलग व निराले थे, ऐसे जीव कम ही होते हैं। ऐसे जीवों की कम संख्या ही उनको औरों से भिन्न व अलग अंदाज से दिखाती है। अमरत्व प्रदान करती है। इन्हीं में थे एक संजीवजी।

उनकी खासियत को समझाने के लिए यह उदाहरण ही पर्याप्त है कि जैसे रत्न तो अनेक थे, हैं और रहेंगे; परन्तु कोहिनूर हीरा एक ही था, है और रहेगा।

वैसे विद्वान अनेक थे, हैं, रहेंगे; परन्तु संजीवजी एक थे, हैं, रहेंगे। उनको छोटे दादा (डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल) का वारिसपुत्र कहें तो यह अतिशयोक्ति न होगी; क्योंकि तत्त्वप्रचार-प्रसार की जैसी भावना छोटे दादा में मैंने अनुभूत की है, उसी का प्रतिबिम्ब संजीवजी में देखा है।

वैसे तो सभी अपने-अपने स्तर पर समाज में योगदान देते हैं; परन्तु जो हटकर योगदान देते हैं, वही समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। वह बात थी संजीवजी में।

तत्त्वप्रचार ऐसा चंदन है, जो घिसनेवाले और लगानेवाले दोनों को खुशबू से भर देता है। तत्त्वप्रचार भी आत्मकल्याण के साथ साथ अनेकों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

बात औदयिक भावों की करें तो इसमें भी संजीवजी नंबर एक परविराजमान हैं। अत्यंत मंदकषाय, सदा प्रसन्न चित्त, हँसमुख चेहरा, कोमल सुमधुर भाषा और नम्रता; ये उनके जीवन की विशेषतायें थीं। नम्रता का नमूना बताऊँ तो यह घटना है, अलवर (राज.) की, दिन थे अष्टान्हिका के, विषय था **कर्म के नोकर्म**, एक स्वाध्याय हो चुका, तब मेरा उनसे मिलना हुआ, जय जिनेन्द्र के तुरंत बाद पहला वाक्य था - भाईसाहब! कोई भूल रहे तो बताना। मैं मन में अचम्भित हुआ, इसलिए कि एक करणानुयोग का अधिपति होकर भी यह कह रहा है कि **भूल रहे तो बताना** यह छोटा सा संस्मरण है, जो उनकी नम्रता को दर्शाता है।

स्वयं ज्ञान और प्रसिद्धि के शिखर पर होने पर भी समय-समय पर मेरे साथ करणानुयोग व जैनभूगोल विषयक जिज्ञासायें, चर्चाएँ करते थे। अब जब भी करणानुयोग का अध्ययन करता हूँ, वे अवश्य याद आते हैं। वे शीघ्र अपने लक्ष्य को प्राप्त करें, यही भावना है।

जीवन नहीं, तूफ़ानी दौर था

पण्डित जिनकुमार शास्त्री
उपप्राचार्य : टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर

प्रभावनाविशेषांक

डॉ. संजीवजी से मेरा नाता तीन प्रकार से है; एक नयचक्र-सर्वार्थसिद्धि आदि गहन विषय पढ़ानेवाले अध्यापक, दूसरा कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं तीसरा मेरे छात्र के अभिभावक। तीनों ही जगह उनकी कार्यशैली का एक ही आधार था- धर्मानुकूल वातावरण।

वे व्यर्थ के आडम्बरों में विश्वास न करके स्वयं को सामान्य श्रेणी में रखना ही पसन्द किया करते थे; साथियों से उनका व्यवहार बहुत आदरपूर्ण रहता था, वह चाहे छोटा हो या बड़ा। एक बार हम कुछ शास्त्री स्नातक दिल्ली से कार्यक्रम करके उनके साथ ही वापस लौट रहे थे, बीच में एक बड़े जिनमन्दिर में दर्शन, भक्ति करके शाम का भोजन वहीं किया और उनके प्रवचन का लाभ भी वहीं लिया, भोजन के साथ ही मार्ग का सारा व्यय उन्होंने किया। स्मारक पहुँचने के बाद मैंने बहुत दुविधापूर्वक उनसे अपने हिसाब के बारे में बात की तो हँसते हुए कहने लगे कि तुम तो मेरे पुत्र समान हो; ऐसी हिसाब की बातें कभी मन में भी मत लाना, मैंने पलटकर मजाकिया लहज़े में कहा भाईसाहब! गाड़ी में 5 लोग और साथ में हैं, क्या उन्हें भी आपका ही पुत्र मान लूँ? तो ठहाका लगाकर बोले अरे भई! स्मारक के सारे ही बच्चे मेरे पुत्र हैं।

न जाने कितने छात्रों को सहयोग वे मेरे इशारे मात्र से करवा देते थेऔर किसी को पता भी नहीं चलता था, वह चाहे वाले बच्चों स्मारक के बाहर का आवास हो या बी.एड आदि की फीस हो या अन्य किसी भी प्रकार का सहयोग। मात्र धन के सहयोग को ही वे सहयोग नहीं समझते थे और न ही उस सहयोग का कभी फायदा उठाते थे, उनका अच्छा व्यवहार और उनके प्रिय वचन तो हमारे लिए सबसे बड़ा सम्बल था। जीवनचक्र ने मुझे एक बार ऐसा विषम दौर दिखाया, जब परिस्थितिवश स्मारक छोड़कर किसी स्थाई नौकरी में जाने का निर्णय कर लिया था, पर मन तो स्मारक में ही अटका हुआ था, बड़ी दुविधा थी कुछ समझ नहीं आ रहा था। फिर अनायास ही कहीं रास्ते में भाईसाहब मिले तो मेरी इस भावना को सुनकर वे जाते-जाते मेरे कंधे पर हाथ रखकर दो लाइने बोलकर गए कि तुम चले जाओगे तो बच्चों को तो बहुत दिक्कत हो जायेगी, यहीं रहो, समय के साथ सब ठीक हो जाएगा, चिन्ता मत करो। बस, उनका इतना कहना ही बहुत था, जिससे मेरा मन अधिक मज़बूत हो गया, उनके कहे अनुसार समय के साथ स्वतः कुछ दिक्कतें दूर होती गईं और कुछ को मैं झेलना सीख गया।

आज कुछ लोगों की अन्तर्ध्वनि है कि वे अपने व्यस्त शेड्यूल से बचते तो शायद, पर मेरा विचार इससे भिन्न है, वे तो तूफ़ान थे, हाँ! अत्यन्त वेगवाला तूफ़ान, जो कम समय में ही अकल्पनीय कार्य कर जनसामान्य को अचरज में डाल देता है। तूफ़ान के सन्दर्भ में अगर कोई ऐसी विचारधारा बनाएँ कि तूफ़ान इतने जल्दी आके चला क्यों जाता है? भले ही धीमा बहे पर लगातार बना तो रहे; ताकि और अधिक प्रभावी हो। यह सोचना तूफ़ान की ताक़त को कम कर देने जैसा है, उसे सामान्य और तुच्छ सी अप्रभावी हवा बना देने जैसा है। तूफ़ान की ही तरह उनका जीवन न जाने कितनों के जीवन में गहरा प्रभाव डाल गया, उन्होंने तो जीवनभर स्वयं (आत्मा) की तरफ़ ही ध्यान दिया और सबको ऐसा ही करने पर जोर दिया और चल पड़े स्वर्ग के जीवों को यही बात समझाने। कुछ वर्ष पूर्व जैन पथप्रदर्शक पत्रिका में वे अपनी प्रभावना सम्बन्धी समाचार छापते हुए उसके शीर्षक का नाम कुछ इसप्रकार दिया करते थे **डॉ. संजीव गोधा का तूफ़ानी दौरा।**

यह केवल शीर्षक ही न था, उनके जीवन का सार था, कम समय में अकल्पनीय कार्यों से भरा उनका जीवन, जीवन ही नहीं, तूफ़ानी दौर था.....

डॉ. संजीव कुमार गोधा

वे हीरो थे, हीरो बना गए

– पण्डित अखिल शास्त्री, मण्डीदीप

ढाईद्वीप पंचकल्याणक में जब भाईसाहब के रोग के बारे में जानकारी मिली तो पैरों के नीचे से जमीन ही खिसक गई। उनके द्वारा बताए गए काम और योजनाएँ दिमाग में घूमने लगी और सिर चकराता गया। फिर विचार किया कि जिंदगी के जिस मुकाम पर आज वह खड़े थे, वहाँ से एक कदम पीछे लेना भी किसी को गवारा नहीं होता; परन्तु उन्होंने तो आँखों के सामने से सब कुछ धुंधला पड़ते देखा और वह भी एक-दो दिन नहीं, रोजाना 1 महीने तक, फिर भी सहज बने रहे, मुस्कुराते रहे और वहीं एक तरफ हम उनके साथ बनाई गई भविष्य की दो-तीन योजनाओं को पूरे न करपाने के कारण दु:खी हो रहे हैं।

संजीवजी से मेरा जुड़ाव शास्त्री प्रथम वर्ष से हुआ, जब वे मुझे प्रवचन के लिए टोडरमलजी के मंदिर में भेजते थे। फिर उन्होंने जैन पथप्रदर्शक के काम के लिए मुझे स्मारक में रख लिया और हमारी घनिष्ठता बढ़ती गई।

संजीवजी की सबसे बड़ी विशेषता थी, उनकी सकारात्मकता। वे हर परिस्थिति को सकारात्मक तरीके से ही देखते थे। जब भी वे किसी व्यक्ति को फोन करते और वह उनका फोन नहीं उठाता तो उनके मन में एक यही विकल्प आता था कि मेरा फोन नहीं उठा रहा है, इसका मतलब कोई बहुत जरूरी काम कर रहा है या कहीं फंसा हुआ है। जबकि सामान्यत: लोग इसे सामने वाले की गैर-जिम्मेदारी या अपने अपमान से जोड़ लिया करते हैं। बस इसी सकारात्मकता के कारण उन्हें किसी से कोई गिला शिकवा नहीं था और वे हर व्यक्ति के हृदय में बसते थे। इस बात को आप बखूबी तब समझेंगे जब आप यह विशेषांक पढ़ेंगे। हर व्यक्ति उनसे कितनी गहराई से जुड़ा हुआ था, यह इसके पन्ने-पन्ने पर दिखता है।

हम पण्डितों पर दो लोगों ने बहुत बड़ा उपकार किया पहले आदरणीय दादा जिन्होंने समाज में पण्डितों को सम्मान दिलाया। विद्वानों को ऊपर बैठना सिखाया। इसी में एक कदम और आगे बढ़कर संजीवजी ने विद्वानों को सेलिब्रिटी/हीरो बनाया। लोग उनसे मिलने दूर-दूर से आते थे, उनकी एक झलक देखने तरसते थे, फोटो खिचाने के लिए मौका ढूँढते रहते थे, उनके ऑटोग्राफ लेकर जाते थे और लोगों को दिखाने के लिए स्टेटस पर लगाते थे।

जब लोग उनसे कुछ संदेश लिखने को कहते तो वे लिखते – **अपने को जानो, अपने को पहिचानो और अपने में ही समा जाओ – यही द्वादशांग का सार है।** बस यही ऑटोग्राफ वे पूरी दुनिया को देकर अपने में समा गए।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

सर्वोदयी वक्ता थे

– सुशीलकुमार गोदिका
अध्यक्ष : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा हमारे टोडरमल स्मारक रूपी सुंदर बाग के ऐसे फूल थे, जिसकी सुगंध देश-विदेश तक फैली थी। तत्त्वप्रचार-प्रसार के क्षेत्र में समर्पित संजीवजी ने ना केवल स्मारक के लिए; बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए गौरवपूर्ण कार्य किया है।

मैंने यह स्पष्ट महसूस किया है कि वह पंथवाद में या किसी वर्ग विशेष से जुड़े रहना पसंद नहीं करते थे, वे तो यह चाहते थे कि हर वर्ग के व्यक्ति को धर्म समझ में आये, हुआ भी यही; आज हम देखते हैं कि उनके माध्यम से जैन-अजैन सभी तत्त्वज्ञान का रसास्वादन कर रहे हैं।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उनमें कट्टरता का कोई स्थान नहीं था। इसलिए कम समय में ही वे हजारों लोगों के हृदय में बसते चले गए और कोई भी उन्हें छोड़ना नहीं चाहता था।

उनका अल्पायु में चला जाना, हम सब के लिए अपूरणीय क्षति है, जिसकी पूर्ति उनके जैसे विचारों को अपनाने से ही होगी। वे जहाँ भी गए होंगे, वहाँ से शीघ्र मुक्ति को प्राप्त करेंगे, ऐसी भावना के साथ उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

मेरा संजीव तो मेरे लिये नीलांजना बन गया

– शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल
मंत्री : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

मात्र 45 सेकंड में जिंदगी बदल गई और संजीव हम सब को छोडकर चला गया। उसे न दौलत की कमी थी और न रसूख की, पर कुछ काम नहीं आया। मेरा सिर्फ कहना इतना सा है कि संजीव गोधा की इस मौत ने न जाने हमें क्या-क्या सिखा दिया, और हम पर लानत है, यदि हम कुछ ना सीख पाए तो। वो मेरा भाई बिलकुल नहीं चूका पर क्या मैं चूक रहा हूँ? उस आदमी ने जिंदा रहते तो दिन में तीन-तीन, चार-चार बार प्रवचन करके तो सिखाया ही और वो मेरा भाई मरकर भी सिखा गया।

सबसे बड़ी बात तो ये है कि संजीव तो मेरे लिए नीलांजना बन गया, अब हमें कौन से जानवरों की पुकार सुनने का इंतज़ार है, कौन से सफेद बाल होने का इंतज़ार है, कौन सी बिजली चमकने का इंतज़ार है और किस वैराग्य प्रसंग का इंतजार हम कर रहे हैं। हम अब नहीं चेतेंगे तो और कौनसे मौकें प्रकृति हमें देगी? अगर इतना सब होने के बाद भी कुछ नहीं सीख पाए तो यह जीवन, यह तत्त्वज्ञान हमारे किसी काम का नहीं है।

मैं तो दाद देना चाहता हूँ, संस्कृति की हिम्मत की जो उसने सब कुछ जानते हुए भी संजीवजी के मरण को समाधिमय बना दिया, माता-पिता श्री महेन्द्र जी और मजूजी की, जिन्होंने जिस साहस और गंभीरता का परिचय दिया मानो उन्होंने तत्त्वज्ञान पी लिया हो, आर्जव ने भी इतनी छोटी उम्र में भी हर एक को छोटे संजीव गोधा होने का भान करा दिया।

जब हमने संजीव को यह सारी बातें बताई, परिवार के सारे लोग वहाँ बैठे हुए थे। हमने कहा ही संजीव तुम्हें ये तकलीफ है, ऐसी बीमारी है और इसमें ज्यादा समय नहीं मिलता तो संजीव ऐसे सुनता रहा था। जैसे कुछ असर ही नहीं हुआ। इसी का नाम तो समाधि है कि – **लाखों वर्षों तक एक जीयूं या मृत्यु आज ही आजावे।**

मैं कहता था कि संजीव मान लो यदि अपनी उम्र 75 साल की है तो मेरे पास तो अब बस 18 साल हैं और तुम्हारे पास तो अभी 29 साल हैं; पर मुझे क्या पता था कि तुम्हारे पास सिर्फ़ 29 दिन हैं और तुम इतनी जल्दी चले जाओगे, तुम जीत गए संजीव, तुम जीत गए।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

मैं कहा करता था कि हम चार भाव में मोक्ष जाएंगे और मैं संजीवजी से करणानुयोग से पक्का कराने के लिए पूछ लेता था, तो संजीव कहता था कि हाँ, हाँ भैया! क्यों नहीं जाएंगे? हम नहीं जाएंगे तो कौन जाएगा? पर पता नहीं था, वह इतनी जल्दी चला जायेगा? वह तो गया होगा सीमंधर भगवान के समवशरण में, वह तो जीत गया और हम यहाँ हार रहे हैं, तुम जीत गए मेरे भाई।

लेकिन हम भी जीत सकते हैं; परन्तु एक शर्त है कि हमें अभी कुछ निर्णायक निर्णय लेने होगें, हमें हमारे परिणामों पर विचार करना होगा। बहुत विनय पूर्वक बिना किसी पूर्वाग्रह से आपसे नहीं अपने आप से कह रहा हूँ – हमने जो तत्त्वप्रचार की परिभाषा बना रखी है, उसे रीडिफाइन करना होगा, कहीं हम तत्त्वप्रचार के नाम पर अपने अपने अहम् की पुष्टि तो नहीं कर रहे हैं, कहीं हमने तत्त्वप्रचार के नाम पर इवेंट तो शुरू नहीं कर दिये हैं और इवेंट मैनेजमेंट में तो नहीं उलझ गये हैं? जाने या अनजाने में किसी ना किसी होड़ का हिस्सा तो नहीं बन गए हैं? और कहीं तत्त्वप्रचार के नाम पर अपने ही तत्त्वज्ञान को भूल तो नहीं गये हैं?

संजीव और फिर 25 दिन में ही धर्मेंद्र, हमें अब और कितनी नीलांजनाओं की ज़रूरत पड़ेगी भाई? संजीव को तो 30 दिन लगे भी और धर्मेंद्र को तो 30 मिनिट भी नहीं लगे और हमारे पता नहीं कितने मिनिट बचे हैं और ना जाने वो एक पल कब आ जायेगा?

मेरी कविता 'मैं तो चूक गया' की कुछ लाइनें जो मुझे ही झकझोर देती हैं –

वो नज़दीक आ रही है
दबे पाँव चुपके–चुपके
धीरे–धीरे होले–होले
वो कोई और नहीं
वो है
मेरी मौत
वो पल–पल प्रति पल हर पल
नज़दीक आ रही है
सर पर मँडरा रही है
पर
मुझे फ़ुरसत नहीं है मरने की
मैं तो उलझा हूँ जीवन की आपाधापी में
दुनिया भर के आड़े टेड़े
ना जाने कैसे–कैसे गुनताड़े में
इस धूल को समेटने में
इसे जोड़ने में उसे तोड़ने में
और अपने ही मुँह मियाँ मिट्ठू बनने में
बस, यही
अंतहीन सिलसिला चलता रहता है
शाश्वतलक्ष्य हीन रेलमपेल में
नितांत अप्रयोजन भूत जंजालो में
ना कोई प्रयोजन है ना उस प्रयोजन का आयोजन है
ना कोई जीवन का पर्पज है ना उसका प्रॉसेस है
ना क्षण भर भी उसका विचार है
क्या बस इसी का नाम जीवन है?
क्या मैं चूक रहा हूँ?
आज
मौत की अपनी मंज़िल पूरी हो गयी
बग़ल में वो होले से खड़ी हो गयी
मुझ से पूछे बिना ही मेरी
अगले जनम की तैयारी हो गयी
अकेला ही बिलकुल अकेला ही
लेटा हूँ मैं मरण शैया पर
आज क़रीब से देख पाया अपनी मौत को
जब वक्त ही नहीं बचा है इसे जानने को
तू महा पुण्यात्मा है
क्योंकि
तुझे अहसास हो गया है
और वक्त की बाज़ी अभी हाथ में है
बरखुरदार अगर ये छूट गया तो
फिर ना कहना
मैं तो चूक गया

जैनदर्शन के महान प्रभावक

– पण्डित बिपिन शास्त्री, मुम्बई

ट्रस्टी : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

डॉ. संजीव गोधा के सम्पूर्ण जीवनकाल पर दृष्टि डालें तो शायद हम उनके समग्र व्यक्तित्व को समझ पायेंगे। बाल्यकाल से ही वे पाठशाला के नियमित छात्र थे, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र विद्वान पण्डित सुनीलजी नाके से उन्होंने जैनदर्शन के सामान्य स्वरूप को बालबोध व वीतराग विज्ञान पाठमालाओं के माध्यम से समझा, बस यही उनके सफर की शुरुआत थी।

बाल्यकाल से ही वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। ज्ञान का क्षयोपशम अद्वितीय था। निरन्तर अध्ययन, अध्यापन में लगे रहना, उनका शौक था। पाठशाला के निमित्त से मिलनेवाले संस्कार और ज्ञान ने उनके जीवन को सही दिशा दे दी। किशोरावस्था में ही वे टोडरमल महाविद्यालय से जुड़े व शास्त्री विद्वानों के सानिध्य में रहकर, बिना शास्त्री किये ही, अपने अध्ययन व क्षयोपशम के बल पर, प्रकाण्ड विद्वत्ता प्राप्त की। आ. ब्र. यशपालजी (अन्नाजी) द्वारा प्रेरित जिनवाणी कण्ठपाठ के तो वे सर्वश्रेष्ठ छात्र थे।

ज्ञान के विशिष्ट क्षयोपशम ने करणानुयोग के सूक्ष्म व गहरे विषयों को समझने की दिशा ली और धीरे-धीरे इतनी अल्पवय में ही, वे करणानुयोग के श्रेष्ठ वक्ता बन गये। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित, आ. दादा द्वारा लिखित जैनदर्शन के महान सिद्धान्त क्रमबद्धपर्याय के स्वरूप को समझने-समझाने वाले उन जैसे विरले ही दिखाई देते हैं। जिनधर्म के यथार्थ स्वरूप को समझने व समझाने के लिये उन्होंने नयचक्र के सम्पूर्ण सार को मानो पी ही लिया था।

इतनी अगाध विद्वत्ता को जब उन्होंने गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित भेद-विज्ञान व अध्यात्म-मूलक ग्रन्थों के पढ़ने में लगाया, तो मानो चमत्कार ही हो गया। मुमुक्षु समाज तो परिचित था, पर अन्य जैनबन्धुओं ने जब उनके मुख से साक्षात् मोक्षमार्ग के कारणभूत अध्यात्म की चर्चा सुनी तो वे रोमांचित हो उठे और उनकी वाणी को सुनने के लिये लालायित रहने लगे और धीरे-धीरे उनके प्रवचनों की प्रभा सम्पूर्ण जैनसमाज में व्याप्त हो गयी, प्रवचनों के संदर्भ में वे स्वयं भी बहुत अनुशासित व गम्भीर थे। हर परिस्थिति में उन्होंने अपने प्रवचनों के क्रम को बनाये रखा; क्योंकि वे जानते थे कि यदि एक बार भी किसी कारणवश समय पर प्रवचन नहीं हो पाये, तो हजारों श्रोता उस समय तत्त्वज्ञान से वंचित रह जायेंगे।

इस युग का एक महान प्रकल्प श्री ढाईद्वीप जिनायतन में श्री ढाईद्वीप की परिकल्पना उन्हीं की देने है। जैनदर्शन के भूगोल पर आधारित इस रचना को पूर्ण आगमानुकूल बनाने में उन्होंने सालों परिश्रम किया और शिल्पकारों के साथ घण्टों-घण्टों बैठकर, उसको पूर्ण प्रामाणिक रीति से बनवाया, किसको पता था कि ढाईद्वीप रचना पूर्ण करवाने के बाद वे हमे छोड़कर स्वयं ढाईद्वीप के अकृत्रिम चैत्यालयों की वन्दना करने चले जायेंगे।

लेखन के क्षेत्र में भी वे अद्भुत प्रतिभा के धनी थे, उनकी दो कृतियाँ तो अभी उपलब्ध है और 11 नयी कृतियों का भी शीघ्र प्रकाशन होने वाला है। भले ही उनका देह परिवर्तन हुआ है; किन्तु वे आज भी हमारे बीच अपने ज्ञानशरीर से जीवित हैं।

जैनदर्शन के सामान्य ज्ञान से लेकर, गुणस्थान की सूक्ष्म चर्चाओं तक, अविभागी प्रतिच्छेदों से लेकर असंख्यात प्रदेशों के समुदाय तक, क्रोधादि क्रोधादि में, ज्ञान ज्ञान में है, दोनों के प्रदेश भिन्न-भिन्न हैं - ऐसी श्री समयसार की सूक्ष्म प्ररूपणा पर उनके हजारों प्रवचन उपलब्ध हैं, जो उन्हें सदियों तक जीवित रखेंगे और उनके द्वारा भव्य जीव जिनदेशना का स्वरूप समझकर, अपना आत्मकल्याण कर सकेंगे।

इक्कीसवीं शताब्दी के जैनदर्शन के महान अध्येता, प्रभावक, वक्ता, विचारक, लेखक को हृदय से बारम्बार नमन और भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

वे नायक नहीं, महानायक थे

– अशोक बड़जात्या, इंदौर
राष्ट्रीय अध्यक्ष दिगम्बर जैन महासमिति

श्री संजीवजी गोधा एक Omni Person थे अर्थात् एक अंतर्यामी वक्ता, वे अपनी वक्तृत्व शैली में अपने हृदय के पट खोलकर वे श्रोताओं को सम्मोहित कर देते थे।

वे Omni present भी थे अर्थात् सर्वभूत, वे यहाँ, वहाँ, सर्वत्र उपस्थित थे। उनकी उपस्थिति बालकों, युवाओं, युवतियों एवं वृद्धों तक गहरी पैठ लिए हुए थी। अत: वे आज भी ओमनी प्रेजेंट हैं।

किसी के जीवन को उसकी लम्बाई से नहीं वरन् उसकी चौड़ाई से या उसकी गहराई से नापा जाना चाहिए। संजीवजी का जीवन भले ही लम्बा न रहा हो; परन्तु उसकी गहराई 100 वर्ष से भी अधिक उम्र वालों से भी अधिक थी।

जैन आगम को सदाकाल प्रभावित करनेवाले याने मोस्ट इंपैक्टफुल पर्सनैलिटी के लिए तीन प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम अगर लिए जाएँ तो उसमें पहला नाम **कानजीस्वामी** का होगा। अपने अवसान के 40 वर्ष पश्चात् आज भी कोई भी प्रवचन, उनका नाम लिए बगैर पूरा नहीं होता। चाहे वे उनके अनुयाई हो या उनके द्वारा पुनरुद्धाटित सिद्धांतों के विरोधी हो; प्रवचनकार चाहे विद्वान हो या व्रती हो, उनके नाम का उल्लेख किए बिना आज भी कोई प्रवचन पूर्ण नहीं होता।

दूसरा, हमारे समय का मोस्ट इंपैक्टफुल पर्सन अगर कोई है, तो वह हैं **डॉ. हुकमचंद भारिल्ल।** पूरा समाज उन्हें Fearful Respect से देखता है। अपनी विद्वत्ता और गूढ़ अध्ययन से वे आदर के साथ विस्मय का भाव भर देते हैं। आदर और विस्मय का अद्भुत मिश्रण है, इस व्यक्तित्व में; सैकड़ों मौलिक पुस्तकों के रचियता एवं श्रेष्ठ पद्यकार के रूप में, उन्होंने जिनागम एवं जैनदर्शन को बहुत समृद्ध किया है।

आधुनिक काल का तीसरा मोस्ट इंपैक्टफुल पर्सन अगर कोई है, तो वह निस्संदेह **डॉ. संजीव गोधा हैं।** कोविड महामारी के दौरान जन-जन में व्याप्त असुरक्षा की भावना उन्होंने अपने वचनों द्वारा ना सिर्फ राहत पहुँचाई; वरन् उनमें एक सुरक्षा का भाव भी स्फूर्त किया, उनके प्रवचन सीधे-सीधे कानों के माध्यम से दिल में उतर जाते थे और उनकी आवाज़ का जादू सिर चढ़कर बोलता था।

गूढ़ से गूढ़ जैन अध्यात्म के सिद्धांतों को सरलता से कहे जाने वाले का नाम है '**संजीव गोधा**', जो जीवन में संजीवनी का काम करें और जिसने लाखों लोगों के जीवन में संजीवनी का काम किया है, उसका नाम है **संजीव गोधा**। अध्यात्मरस से सरोबोर श्री संजीव गोधा एक कालजयी विद्वान थे। अपने यूट्यूब चैनल के माध्यम से 56,000 सब्सक्राइबर्स को प्रतिदिन संबोधित करके, एक विद्वान हीरोकल्ट भी पैदा कर सकता है, यह भी आश्चर्यजनक है। जब भी वे कहीं जाते थे तो युवक एवं युवतियाँ उनके साथ सेल्फी खींचाने को लालायित रहते थे या ऑटोग्राफ लेने के लिए उत्सुक रहते थे। वे नायक ही नहीं महानायक थे। दिगम्बर जैन महासमिति के 67,000 सदस्यों की ओर से, मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि प्रेषित करता हूँ। Sanjeev We will miss you
We will miss a friend.
We will miss a spiritual Guru .
We will miss a staunch Jain.
We all will miss you.

धर्मरथ के कुशल सारथी थे संजीवजी

– प्रो. वीरसागर शास्त्री जैन
लालबहादुर यूनिवर्सिटी, दिल्ली

उच्चावचजनप्राय: समयोऽयं जिनेशिनाम्।
नैकस्मिन् पुरुषे तिष्ठेदेकस्तम्भ इवालय:।।

– आचार्य सोमदेवसूरि,
यशस्तिलकचम्पू, 7/90

अर्थ : यह जैनधर्म एक ऐसे विशाल भवन (राजमहल) की तरह है, जो अनेक प्रकार के छोटे-बड़े असंख्य खम्भों पर खड़ा हुआ है, किसी एक ही खम्भे पर खड़ा हुआ नहीं है।

जिनधर्म की प्रभावना का रथ ऐसा ही है। वह उसमें छोटे-बड़े असंख्य जिनधर्मानुरागी सत्पुरुषों का योगदान रहा है। बन्धुवर डॉ. संजीव गोधा इसी रथ के एक कुशल सारथी थे, उनमें इसके योग्य अनेक अन्तर्बाह्य गुण विद्यमान थे। मुझे विश्वास है कि वे निश्चित रूप से उत्तम गति में गये होंगे। उन्हें सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के समागम से रत्नत्रय की पूर्णता प्राप्त हो – यही मेरी मंगल भावना है।

संजीवजी जाते-जाते सिखा गये... सीख सके तो सीख

– बाल ब्र. सुमतप्रकाश जैन, खनियांधाना

प्रश्न – भये तीर्थंकर से बली, तिनकी नहीं चली, मौत नहीं टली, तो अब क्या करिए?

समाधान – जिस पंथ चले भगवंत वही आचरिये।।

गुणी व्यक्ति से अनुराग होना सहज ही है। सबसे बड़ी बात थी उनका अंतर्शोधी धार्मिक जीवन, जिसकी सुगंध ने सारे विद्वानों में सर्वोपरि प्रभावक की छाप छोड़ी। इसमें किंचित् मात्र भी बाह्य प्रेरणा या प्रलोभन की गंध नहीं थी।

विनय से सीखना और वात्सल्य से सिखाना कोई आपसे सीख सकता है। इनके जीवन में लघुता-विनम्रता शक्कर की तरह घुली हुई थी। जिज्ञासु-वृत्ति ने उन्हें निरन्तर नया सीखने-करने के लिए प्रेरित किया था, डॉ. की उपाधि इस ही का सहज प्रतिफल था। वाणी में तेज था, परन्तु अहंकार नहीं। उनके संकोची स्वभाव ने उन्हें कष्ट सहिष्णु बना दिया था। वात्सल्य में विश्व विजेता बनाने की शक्ति होती है, वे भी इसी कारण सम्पर्क में आये और प्रत्येक आबाल-वृद्ध के हृदय में अपना स्थान बनाने में देर नहीं की। उनकी कर्मठता ने कम समय में अनेकों रचनात्मक सौगातें दी हैं। धैर्यभरी अंतिम मुस्कान, आजीवन स्मृति के कोष में आरक्षित रहेगी। अंत में जाने या अनजाने ही सही स्वास्थ की उपेक्षा ने, उन्हीं की उपेक्षा करके, उनके चाहने वालों को सदा के लिए रुला दिया। आपका जाना स्वभाविक प्रकृति का ही एक सहज हिस्सा मात्र है। अनादि-अनंत पर्याय प्रवाहक्रम का एक सहज उत्पाद-व्यय मात्र था। बस! मोह को यह बात हजम नहीं होती है। वह मोहाविष्ट ज्ञान तो सदा के रूप में काश!, किन्तु, परन्तु, अभी नहीं, कुछ और समय, और रहते, हम न हुए, दोषारोपण, लांछन, सहानुभूति, श्रेय, आत्म प्रशंसा, आलोचना, मिथ्या संतोष, हताशा जैसे अनेक चिन्तन के रूप में मानस पट पर अपना निदर्शन देकर अनंत संसार बढाता रहता है।

बात दुखी होने की नहीं, सावधान होने की है। हताश नहीं, भेदविज्ञान पूर्वक सम्यक् निर्णय की है। समर्पण की नहीं, स्वरूप समझने की है। मनोबल गिराने की नहीं, मनोबल बढाकर मोक्षमार्ग एवं जिनशासन प्रभावना में सतर्क होने की है। पुरातन आत्म आराधना ही प्रभावना है - को समझने की है। निश्चय व्यवहार के सुमेल की है। चारों अनुयोगों की उपयोगिता एवं उपादेयता के क्रम को समझने की है। मात्र उपगूहन ही नहीं, स्थितिकरण की भी है। मेडिकल सपोर्ट के स्थान पर अध्यात्म सहित चरणानुयोग सपोर्ट की महती आवश्यकता है।

इस समय हमें निशंकता आदि अष्ट अंगों की सफल परीक्षा देनी है। कुछ और उपाय व्यक्ति, संस्था, समाज, हम करते तो ...यह विकल्प मात्र हो तो चारित्र मोह होगा। अन्यथा विश्वास हो तो अनन्तानुबन्धी बनते देर नहीं लगेगी। कांक्षा भी न हो और हम यथार्थ मार्ग को समझकर सम्यक् प्रकार से जीवन जी सकें, ऐसा प्रयास होना चाहिए। आयु घटने-बढने के निमित्तों की बातें तो होती आई हैं और होती रहेंगी; परन्तु यह दृढ़ श्रद्धान है कि आयु इतनी ही इस ही प्रकार की लिखा कर चले थे। अतः सहज शांत रहकर स्वयं के जीवन में आने वाले प्रकरणों के सन्दर्भ में सावधान रहें। इन्तजार न करें। आत्मसन्मुख होने का कोई भी अवसर गवाने से बचें। हम भवितव्य मानने को विवश नहीं, स्व वश हों; क्योंकि ज्ञानी मजबूर नहीं, मजबूत ज्ञाता होते हैं।

जैनदर्शन का अनमोल रत्न चला गया

– महीपाल शाह
अध्यक्ष : ध्रुवधाम, बाँसवाडा

पूज्य गुरुदेवश्री के पुण्य प्रभावना-योग में अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त अद्भुत एवं उद्भट विद्वान, युवारत्न डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का वियोग न केवल मुमुक्षु समाज; अपितु समस्त जैनसमाज के लिए अपूरणीय क्षति है। गोधाजी, आज जन-जन के प्रिय हो गए थे, उन्होंने निष्पृह भाव से जैनधर्म की महती प्रभावना की। अल्पायु से ही पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों का गम्भीर एवं गहन स्वाध्याय कर, धर्म के सूक्ष्म रहस्यों को, आमजन की सहज समझ में आ जाये, ऐसी सरल भाषा शैली में उनका प्रस्तुतीकरण कर रहे थे।

वे मुमुक्षु समाज के गौरव थे। ऐसा व्यक्तित्व लाखों में एक होता है, उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके प्रवचन में एवं उनकी दैनिक प्रवृत्तियों में दृष्टिगोचर होता था।

इस महाप्रयाण के दुखद प्रसंग पर हम सभी इस शाश्वत सत्य को स्वीकार कर, धैर्य धारण करें, वस्तु स्वरूप को स्वीकार करें, यही एकमात्र शान्ति का उपाय प्रतिभासित होता है।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

आपके दिखाए मार्ग पर बढ़ते रहेंगे

– अशोक पाटनी, सिंगापुर

आदरणीय संजीवजी ने आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के समान ही अपने छोटे से जीवनकाल में जयपुर के बड़े मंदिरजी में टोडरमलजी की गद्दी पर बैठकर के भगवान महावीर की दिव्यदेशना सरल भाषा में जन–जन तक पहुँचाकर भव्य जीवों को मोक्षमार्ग में लगने की प्रेरणा दी।

संजीवजी से हमारा परिचय बहुत पुराना रहा है, वो जब कोलकाता में सिद्धचक्र विधान के दौरान आये थे। उसके पश्चात् नियमसार विधान के दौरान और 2018 तमिलनाडु की यात्रा के दौरान, उनके सारे परिवार के साथ घनिष्ठता बहुत बढ़ गयी थी, जब हम सात दिनों तक एक ही बस में बैठकर, साथ में भजन गाते हुए, स्वाध्याय करते हुए, उनसे अपनी धार्मिक जिज्ञासाओं का समाधान लेते हुए, वह अभूतपूर्व यात्रा कर रहे थे। उस यात्रा के पश्चात् से ही संजीवजी, संस्कृतिजी और आर्जव हमारे परिवार के अभिन्न अंग बन गए थे और जब तक हम सब इस भव में रहेंगे, वे सब हमारे परिवार के अंग बने ही रहेंगे।

कोविड से पहले 2019 और 2020 में सिंगापुर में भी हमको और सारे सिंगापुर जैनसमाज को संजीवजी और संस्कृतिजी का समागम मिला था, उनकी शास्त्रों पर इतनी अच्छी पकड़ थी कि वो थोड़े समय में ही जैनधर्म से अनभिज्ञ श्रोताओं को समयसार–प्रवचनसार–अष्टपाहुड़ और गोम्मटसार जैसे गूढ़ शास्त्रों का निचोड़ समझा दिया करते थे।

कोविड के दौरान आपने तीन या चार प्रवचनों की अत्यन्त व्यस्तता के बावजूद भी मुझे और आरती को मोक्षमार्ग प्रकाशक, गोम्मटसार जीवकाण्ड और प्रवचनसारजी का आद्योपांत स्वाध्याय करवाया था और पिछले वर्ष से वे हमें समयसार अनुशीलन का आद्योपांत स्वाध्याय करवा रहे थे, जिसमें हम सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार तक पहुँच भी गए थे।

उनकी ये बातें भुलाई नहीं जा सकती हैं कि जिसने वीतरागी जैनशासन की शरण ली है। जो भेदज्ञान पूर्वक निज आत्मतत्त्व को शरीर से भिन्न जान लेगा, उसको कभी मरण का भय नहीं रहेगा। वो अमर हो जायेगा। क्रमबद्धपर्याय और जैनधर्म के कर्म सिद्धांत पर उनकी अटूट आस्था थी। वो हमेशा मनुष्य भव की दुर्लभता का सन्देश दिया करते थे। कहते थे कि ये मनुष्यभव बड़ी मुश्किल से मिला है। इस भव में अपना काम कर लो, नहीं तो भव–भव में धक्के खाते रहोगे। वे स्वयं अपने जीवन में लौकिक अपेक्षाओं को छोड़कर मात्र धर्ममार्ग में लग गए थे। अपनी इतनी व्यस्तताओं के बावजूद भी वो कभी किसी को धर्मप्रभावना के कार्य के लिए या धार्मिक सम्बोधन के लिए ना नहीं किया करते थे, उनके बारे में जितना कहा जाय, वो कम है।

आदरणीय छोटे दादा और संजीवजी की प्रेरणा से ही हमारा सारा परिवार धर्म के मार्ग में जुड़ा था। संजीवजी की प्रेरणा से ही हमारे परिवार को ढाईद्वीप पंचकल्याणक में भगवान विराजमान करने का सौभाग्य मिला था। उनकी अस्वस्थता के दौरान भी लगभग रोज हमारी उनसे वीडियो पर बात भी हो जाया करती थी और वो हमारे साथ–साथ में कुन्दकुन्द शतक की गाथाएँ भी गाया करते थे। सिंगापुर मंदिर के ऑनलाइन दर्शन भी किया करते थे; लेकिन होनहार को कौन टाल सकता था? आरती की 17 फरवरी की सुबह संस्कृतिजी से लम्बी बात भी हुई थी; लेकिन हमें क्या पता था कि उसी दिन संजीवजी की भव्य आत्मा, देह को त्यागकर, संसार के सब रिश्ते–नाते तोड़कर उर्ध्वगमन कर जायेगी। हालांकि हम सब मोह के वश में पिछले एक महीने से नाना प्रकार के विकल्पों में लगकर, उनकी तबियत में सुधार लाने का प्रयास कर रहे थे; लेकिन संजीवजी की स्वयं की श्रद्धा इतनी दृढ थी कि इतनी भयंकर बीमारी होने पर भी वो बिलकुल सहज रहे। अपनी आत्मा में डुबकी लगाते रहे और अंत समय में बिलकुल शान्तभाव से अपने देह को त्याग दिया।

शेष पृष्ठ 41 पर...

जितना भी लिखा जाए थोड़ा ही होगा

– श्रीमती कमला भारिल्ल, जयपुर

प्रिय संजीव! तुम हम सब को असहाय जैसा छोड़ कर कैसे चले गए? विश्वास भी नहीं हो रहा है कि वास्तव में अब कभी भी तुमसे मिलना नहीं होगा। जब भी टी. व्ही. खोलती हूँ, सभी चैनलों पर तुम ही बोलते नज़र आते हो, पूर्व स्मृतियाँ ताजा हो जाती हैं।

तुमने तत्त्वज्ञान को स्वयं अपने में तो उतारा ही है और जनता को भी खूब लाभ दिया। तुम्हारी वाणी इतनी सरल थी कि सबको समझ आ जाती थी। मैं तुम्हारी नयचक्र की क्लास में जाती थी। तुम उसे इतनी सरलता से समझाते थे कि शीघ्र ही समझ में आ जाता था। जब भी कभी कोई प्रश्न पूछती तो फौरन ही उसका उत्तर देते थे। तुम्हें ऐसा नहीं लगता था कि यह क्लास तो विद्यार्थियों की है, मम्मी प्रश्न पूछती हैं तो मैं कैसे बताऊँ? क्लास के बाद भी थोड़ी देर रुककर चर्चा करते थे। मेरे कक्षा में पहुँचने पर तुम्हें बहुत प्रसन्नता होती थी।

तुम्हें धर्म के प्रति कितनी रुचि थी, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। सुबह 7 बजे से स्मारक में क्लास लेना, फिर 9 बजे से टोडरमलजी के मंदिर में जाकर प्रवचन करना। आज वह समाज दु:खी है कि हमारा वह मंदिर ही सुना हो गया। वहाँ का बच्चा-बच्चा टूट गया कि अब ऐसी सरलता से समझानेवाला कौन होगा? सारा विश्व दुखी क्यों नहीं होगा? क्योंकि तुमने छोटे-छोटे गाँव में जाकर लोगों को तत्त्व का ज्ञान कराया और अपनी गहरी छाप छोड़ी। तुम्हारे बारे में जितना भी लिखा जाए, सब थोड़ा ही होगा।

संजीव गोधा दृढ़ विश्वास के धनी

– श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, जयपुर

संजीव ने शास्त्री तो नहीं किया, पर वे शास्त्रियों से कम न थे। उन्होंने बड़े मंदिर में सुनील नाके से धर्म का अध्ययन किया था। कहते हैं कि - **'होनहार विरवान के होत चीकने पात'** वाली कहावत संजीवजी के ऊपर भी लागू होती है।

उनको अपने धर्म पर, अपने गुरुओं पर पूर्ण विश्वास था और वे उसी मार्ग पर चल पड़े, चलते रहे। उनको तो शायद अपने शरीर की परवाह भी न थी, उनको तो पड़ी थी कि सबको तत्त्व का बोध कराऊँ। उनके पैर में फ्रैक्चर हुआ, 21 दिन के लिए डॉक्टर ने पट्टा बाँधा, उसकी परवाह किए बिना बीच में ही वे पर्युषण पर्व में चले गए।

मैंने उनको बहुत समझाया कि यह बाद में बरसों तक परेशान करेगा, हुआ भी ऐसा ही; उनको अन्त तक परेशानी रही। पर वे अपने लक्ष्य पर अडिग थे। उसी आत्मविश्वास का फल है कि उन्होंने मरते दम तक शरीर की परवाह किए बिना ही अपने आपको अपनी श्रद्धानुवत् ढाल लिया।

इसी को कहते हैं, अपने में जमना, रमना और अपने में ही समा जाना। ऐसे पक्के विश्वास, दृढ़ श्रद्धान के साथ वे अपना जीवन सार्थक करके चले गए। वे शीघ्र ही मुक्तिरूपी लक्ष्मी का वरण करेंगे। उससे हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी इस योग्य अपने को बनाएँ, तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होग।

पृष्ठ 40 का शेष...

संजीवजी स्वयं भी अपने जीवन काल में सारे द्वन्द-फंद छोड़ कर सच्चे दिल से मुक्ति के मार्ग में लग गए थे और सबको उसी मार्ग में लगने की विधि बताते कभी थकते नहीं थे - उसका प्रभाव लोगों पर कितना पड़ता था, इसका साक्षात् उदहारण उनकी जीवन-संगिनी संस्कृतिजी और उनका सुपुत्र आर्जव है, जिनको हमने 2018 में तमिलनाडु की यात्रा के समय बहुत नजदीक से देखा था कि वो भी संसार के भौतिक ताम-झाम को छोड़कर हमेशा अपने पिता के पद-चिन्हों पर चलने की भावना भाता था और आज हमारे सामने है कि वो संजीवजी के जीवनकाल में ही उस मार्ग को अपनाकर स्वयं भी उसी मार्ग पर चल पड़ा है। संजीवजी के वियोग के बाद अब उसकी जैनधर्म के रहस्यों को समझने और जन-जन तक पहुँचाने की भावना और दृढ़ हो गयी है। दादा ने भी स्मारक के माध्यम से, उसको संजीवजी जैसा विद्वान बनाने की ठान ली है।

संस्कृतिजी और आर्जव ने इतनी विषमताओं में भी संजीवजी द्वारा बताये गए सिद्धांतों में अटूट श्रद्धा रखते हुए अद्भुत साहस का परिचय दिया है, उनके इस अद्भुत साहस से शिक्षा लेते हुए हम सब संजीवजी द्वारा बताये वीतरागी तत्त्वज्ञान के मार्ग पर बढ़ते रहने का संकल्प लेते हुए, मैं अपने पूरे परिवार और सिंगापुर जैनसमाज की ओर से श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूँ।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

विदेशों में भी तत्त्वज्ञान के स्तम्भ थे

- अतुल-चारू खारा, डलास अमेरिका

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी से प्रभावित और आदरणीय दादा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अति प्रिय, अनन्य शिष्य, हम सबके लाड़ले आदरणीय डॉ. संजीवजी गोधा, अब हमारे बीच नहीं रहे। यह न तो मन मानने को तैयार है, न ही दिल स्वीकारने को। बारम्बार एक ही विचार आता है कि यह क्या हुआ? क्यों हुआ?

उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व, सरलता, सौम्यता, तत्त्वप्रचार के लिये समर्पण, वाणी का प्रभाव, तत्त्वप्रेम, तत्त्वाभ्यास और ऐसे कई गुण, जिनने हर श्रोता के दिल को छू लिया था। सब एक क्षण में हमसे बिछड़ गए।

संजीवजी जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ़ नोर्थ अमेरिका के डायरेक्टर थे। पिछले दस सालों से उनके समागम का लाभ सभी सदस्यों को मिलता रहा। वे हमें तत्त्वज्ञान परोसते रहे और हम सब जिनवाणी का अमृतपान करते रहे। हर एक के दिल में उन्होंने एक खास जगह बना ली थी। हर साल अमेरिका और कैनेडा के अलग-अलग शहरों में सुबह सात से रात दस बजे तक JAANA का पाँच दिनों का शिविर और Dallas में तीन दिन का शिविर और आठों दिन सुबह-शाम तत्त्वज्ञान का अद्भुत लाभ हमारे लिए प्रेरणादायी बन गया था।

आपके साथ हुए हर शिविर, विधान और तत्त्वचर्चायें यादगार बन गईं। आप हम सबके इतने चहेते वक्ता थे कि हर एक को आज ऐसा लग रहा है कि हमने कुछ ऐसा खोया है, जिसकी पूर्ति होना नामुमकिन है।

आप दुनियाभर के आत्मार्थी, चाहे किसी भी उम्र के हों, सबके लिए तत्त्वज्ञान की एक मिसाल बने हुए थे। आपकी प्रेरणादायक वाणी सुनकर कितने सारे जीव इस तत्त्वज्ञान से जुड़ गए! आपने हजारों मुमुक्षुओं के दिल छू लिये थे। आपने अपना पूरा जीवन माँ जिनवाणी का मर्म पाने में और उसकी गहराई को जन-जन तक पहुँचाने में लगा दिया।

आपकी सौम्य छवि जो हमने अंतिम बार देखी, उसे नज़रों से दूर ही नहीं कर पा रहे हैं। बिना कुछ कहे अपनी मुस्कुराहटभरी नज़रों से आपने हमें यह संदेश दिया कि तत्त्वज्ञान का यह दीपक जलता रहना चाहिए। मुस्कुराहट भी ऐसी, जैसे इतनी असाध्य बीमारी का आप पर कोई असर ही नहीं था। हमने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि वह हमारी आखिरी मुलाक़ात होगी। आपकी याद आते ही एक तीव्र चुभन सी महसूस होती है, आँखों से अश्रु बहने लगते हैं; लेकिन आपको याद करने का यह तो सही रास्ता है नहीं, सही तो वही होगा कि हम सब आपके द्वारा बहायी गयी, तत्त्वज्ञान की धारा को अविरल बहायें और सबको इसी की प्रेरणा देते हुए, खुद भी इसमें आगे बढ़ें।

आपका इतनी अल्पआयु में विदा लेना हमें बिलकुल स्वीकार नहीं है; लेकिन क्या करें, होनी के आगे किसकी चलती है? संजीवजी, आपने हमें संसार की क्षणभंगुरता का अहसास करा दिया! सच में अब तो पक्का लगता है कि जिनवाणी की शरण ही सच्ची शरण है। आपके जाने से वेक्यूम-सा हो गया है, एक अवर्णनीय क्षति हो गई है।

आपने तो अपना काम कर लिया और अपना मनुष्य जीवन सार्थक कर लिया। आपकी प्रेरणा से हम सभी अपना मनुष्य जीवन सार्थक कर लें, इसी भावना से आपको शत-शत वन्दन।

तत्त्वप्रचार का सफल सफर

– डॉ. शान्तिकुमार पाटील
प्राचार्य : श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय

हमारे श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पंडित सुनीलकुमारजी शास्त्री नाके अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात जयपुर में अनेक स्थानों पर पाठशालाओं का संचालन करते थे। अपने छात्रों को अनेक विषय कंठस्थ कराते थे, फिर समय-समय पर उनकी प्रतियोगिताएँ मुख्यरूप से श्री टोडरमलजी वाले मंदिर में ही कराते थे, उनमें मुझे कभी निर्णायक व कभी अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित करते थे। तब मैंने बड़े मंदिर की पाठशाला के होनहार छात्र के रूप में प्रथम बार संजीवजी को देखा। तब से उनकी रूचि और लगन का ही परिणाम था कि उन्हें पाठ्य विषयों के अतिरिक्त कुंदकुंदशतक, शुद्धत्मशतक, योगसार आदि के पद्यानुवाद कंठस्थ थे।

कंठपाठ के पुरूधा ब्र. यशपालजी (अन्नाजी) के पास भी सुनीलजी शास्त्री संजीव को कंठपाठ सुनाने लाने लगे और फिर वे स्मारक भवन में संचालित शिविर की कक्षाओं में भी विशेष रूचि पूर्वक अध्ययन करने लगे। उन्होंने हमारे महाविद्यालय में विधिवत् प्रवेश तो नहीं लिया; परंतु लौकिक अध्ययन के साथ यहाँ की सभी कक्षाओं के विषयों का उन्होंने अध्ययन किया। सुनीलजी ने तो उन्हें नयचक्र तक का भी अध्ययन गहराई से कराया था।

वे जैन पथप्रदर्शक व वीतराग विज्ञान के प्रबंध संपादक के रूप में स्मारक से जुड़े। यहाँ के छात्रों के साथ संस्कृत की कक्षाओं में भी अध्ययन किया, फिर महाविद्यालय के छात्रों को नयचक्र, क्रमबद्धपर्याय का अध्यापन कराने लगे; इस तरह रुचि व प्रतिभा के बल पर देश विदेश में तत्त्व प्रचार-प्रसार की सफलता का उनका सफर रहा।

जब कभी उन्हें किसी शास्त्र के किसी प्रकरण संबंधी कोई जिज्ञासा होती अथवा विधानों में तथा विधि-विधान संबंधी कोई शंका होती थी, तब अनेकों बार मेरे से पूछते थे, इसप्रकार मेरा निकट संबंध रहा। उनके इसप्रकार असमय में चले जाने से मुझे यही बात ध्यातव्य लगती है कि -

अव्याबाध सुख को भोगें

– शैलेषभाई शाह, तलोद

आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामीजी द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आदरणीय भाई संजीवजी का हमेशा एक विशिष्ट स्थान रहा है। आपने अपनी रोचक शैली से बालबोध से लेकर श्री समयसारजी जैसे महान ग्रंथों पर सभा में स्वाध्याय करके सबका हृदय जीत लिया है।

आप अत्यन्त मिलनसार, सरल स्वभावी, अजातशत्रु थे। आपने सुपुत्र आर्जव को टोडरमल स्मारक भवन में धार्मिक पढ़ाई हेतु admission करवाकर लौकिक पढ़ाई से धार्मिक पढ़ाई का बहुत ज्यादा महत्त्व है, ऐसा शुभ-संदेश दिया है।

आपने अपनी धर्मप्रियता का विशेष परिचय भी करवाया है। आपने जिनशासन की प्रभावना में परिवार और शरीर को गौण करके देश-विदेश में प्रवास करके मुमुक्षु समाज का नाम भी रोशन किया है और जैन-अजैन सबको जैनधर्म का मर्म भी समझाया है।

अंत में जिसप्रकार यहाँ अल्पायु में आपका देहांत हो गया। उसीप्रकार अल्प समय में आपका भवांत हो जाए और चिरकाल तक आप अव्याबाध सुख को निरन्तर भोगें, ऐसी मंगल कामना।

यनो न किंचित्, ततो न किंचित्।
यतो यतो यामि ततो न किंचित्।।
विचार्य पश्यामि जगन्न किंचित्।
स्वात्भावबोधादधिकं न किंचित्।।

अर्थात् हम सभी को आत्मबोध पूर्वक आत्मानुभूति का सतत प्रयास करना चाहिए।

श्री धवलाजी में एक चर्चा आती है कि जिनवाणी का कोई एक सूत्र भी रुचि पूर्वक पढ़ता है तो वह आत्मा में इस प्रकार संस्कारित होता है कि आगामी भव में पुन: उपस्थित होकर आत्मध्यान में निमित्त बनता है

संजीव ने तो जीवनभर तत्त्वाभ्यास व तत्त्वप्रचार किया है उनके तो निश्चित ही उनके संस्कार के बल पर आगामी भाव में शीघ्र ही आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। उन्हें शीघ्र ही परम पद की प्राप्त हो यही हार्दिक श्रद्धांजलि।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

उनके अनोखे गुण

– पदम पहाड़िया, इंदौर
महामंत्री : श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर

आदरणीय संजीवजी ने प्रवचन–शैली एवं प्रवचन शृंखला को नए आयाम प्रदान किए, जो पहले कभी न सोचे गए थे और न ही किए गए थे। प्रतिदिन दिन में तीन बार बगैर किसी व्यवधान के लगातार प्रवचन करना और वह भी पूरे विश्व में घूमते हुए, यह असंभव सा है; परन्तु उन्होंने अपने समर्पण और निष्ठा भाव से यह असंभव कार्य करके दिखाया।

उनकी समय प्रतिबद्धता के लिए इतनी निष्ठा थी कि वे जहाँ कहीं होते, वहाँ पर ही मोबाइल और माइक लेकर प्रवचन शुरू कर देते थे और उनके श्रोता भी उतने ही वक्त के पाबंद एवं प्रतिबद्ध थे कि वे भी नियत समय पर वर्चुअल माध्यम से हो रही प्रवचन शृंखला में नियमित रूप से भाग लेते थे।

अपनी सरल एवं हृदयग्राही वक्तृत्वकला से उन्होंने पंथों की लकीर को न सिर्फ तहस–नहस किया; परन्तु कईं नए जैनेतर श्रोताओं को भी अपना नियमित श्रोता बनाया। उनकी अनुपस्थिति में यह नवीन जुड़नेवाले श्रोता आज अपने आपको असहाय महसूस करते हैं कि कौन उन्हें अब जिनवाणी का रस पिलायेगा और जैनधर्म की बारीकियों को समझने में मदद करेगा?

कठिन पारिभाषिक शब्दों को जितनी सरलता से वह समझा देते थे – यह उनकी अनोखी कला थी। आज जन–जन को जैनदर्शन के कठिन एवं पारिभाषिक शब्द भी समझ में आने लगे हैं और वे जैनदर्शन से स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करते हैं।

बिटिया संस्कृति मुझे हमेशा पापाजी कहकर संबोधित करती है और श्री प्रदीपजी चौधरी ने भी मुझे हमेशा अपना स्नेह प्रदान किया है। संजीवजी हमारी यादों में हमेशा जीवंत रहेंगे।

डॉ. संजीवजी is missing

पण्डित हेमचन्दजी हेम, देवलाली

अध्यात्मजगत का ओजस्वी वक्ता, विश्वविख्यात चमकता–दमकता सितारा, जीवन के मध्याह्न में ही दिवंगत हो अस्त हो गया।

मैं विनायकरूप पवित्र संजीवजी गोधा, जयपुर के देहवियोग का अविश्वसनीय; किन्तु सत्य समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया, आंखों में आँसू आये। 46 वर्ष की आयु में देहपरिवर्तन कर विदेहक्षेत्र में तीर्थंकर परमात्मा की साक्षात् दिव्यध्वनि सुनने चले गए।

जब भी संजीवजी देवलाली आते थे, मेरे रूम पर अवश्य आते और तत्त्वचर्चा करते थे। मुझे भी उनसे भी करणानुयोग संबंधी कुछ विशेष बातें जानने को मिलती थीं। शरीरं व्याधिमन्दिरम्, आत्मा ज्ञानमन्दिरम्; सत् शिव सुन्दरम् – ये पंक्तियाँ याद आ रही है।

जैसे टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के संस्थापक श्रीमान् पूनमचन्दजी गोदिका को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जैसे सातिश्य प्रज्ञा के धनी विद्वान मिल गए थे, जिनकी सूझबूझ से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय दिन दुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। ठीक वैसे ही डॉ. भारिल्लजी को एक युवा डॉ. संजीवजी गोधा मिल गए थे; परंतु अचानक एक ऐसी बीमारी से ग्रसित हो गए, जिससे उन्हें मनुष्यदेह छोड़कर स्वर्गवासी होना पड़ा। वे स्वयं अध्यात्मवेत्ता विद्वान थे, उन्हें देह छोड़ने का आभास हो गया था। इसलिए स्वरूप संबोधन पूर्वक समाधिरत हो गए थे।

मेरा छोटा भाई ऋषभ एवं भतीजा दीपक दोनों डॉ. संजीव गोधा के प्रवचन यूट्यूब पर नियमित रूप से सुना करते थे। आज वे बहुत ही बड़ी रिक्तता का अनुभव कर रहे हैं। वे ही क्या पूरे विश्व में फैले उनके हजारों श्रोता सभी खालीपन का अनुभव कर रहे हैं। वर्तमान में डॉ. संजीव गोधा जैसा प्रतिभाशाली आगम व अध्यात्म का वेत्ता मिलना दुर्लभ है। मैं प्रतिवर्ष जयपुर के शिविर में जाया करता था। सन 1993 में वे मुझे टोडरमलजी के मंदिर में प्रवचन करने के लिए ले गए। तब उनकी तत्त्व के प्रति तीव्र रुचि को देखकर मन प्रसन्न हुआ, मुझे लगा कि यह युवा एक दिन आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी जैसा प्रतिभाशाली विद्वान बनेगा।

प्रभावना बहुत करता नरम छे....

– रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर

अनेक पंच कल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा एवं शिविरों में संजीवजी के साथ रहना हुआ। पिछले 20-22 वर्षो से आत्मीय संबंध रहा। इस चिर परिचय ने मेरे चित्त में संजीवजी के विषय में कुछ अमिट छाप छोड़ी।

1- हमेशा प्रभावना के लिए तैयार

2- कोई VIP व्यवस्था की मांग नहीं करना

3- कोइ बाह्य आडंबर नहीं

4- कोई शिकायत नहीं

5- चारों अनुयोगो पर कमाण्ड होने पर भी नम्रता, मृदुता आदि अनेक गुण जो सभी विद्वानों के लिए अनुकरणीय हैं।

एक विद्वान को किसी भी अन्य विद्वान से ईर्षा या मनमुटाव व्यक्त या आव्यक्तरूप से होता ही है; लेकिन संजीवजी एक ऐसे विद्वान थे, जिनको किसी से ऐसा कुछ भी नहीं था। यदि पू. गुरुदेवश्री की उपस्थिति में संजीवजी होते तो गुरुदेवश्री के उद्गार अवश्य अनेक बार निकलते कि छोटी उम्र है, क्षयोपशम बहुत है, हजारों लोग सुनते हैं, प्रभावना बहुत करता नरम छे....

संजीवजी ऐसे वक्ता थे, जिनको मुमुक्षु, मित्र पक्ष, श्वेतांबर, अजैन सभी लोग नियमित सुनते थे। जैसे गुरुदेवश्री ने समयसारजी को सुबह की प्रवचन श्रृंखला में नियमित रखा, दोपहर में अलग-अलग शास्त्र लिए। ऐसे ही आज हर घर में संजीवजी नियमित सुने जाते हैं, दूसरा प्रवचन भले अलग-अलग वक्ता के सुनते हों।

भगवान महावीर की दिव्यध्वनि आयु के 42 से 72 अर्थात् 30 वर्ष खिरी। संजीवजी ने भी आयु के 16 से 46 अर्थात् 30 वर्ष तक प्रभावना की। (इसका मतलब यह नहीं की में दोनों में तुलना करता हूँ) 30 वर्ष में 28000 प्रवचन करना, यह अपने आप में अनुपम सिद्धि है।

उनका वियोग निश्चित ही मुमुक्षु समाज के लिए बहुत बड़ी अपूर्णीय क्षति है। हिम्मतनगर मुमुक्षु मण्डल एवं मेरी ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

संजीव सदैव सजीव रखूँगा

– पण्डित प्रदीप झांझरी

अध्यक्ष : कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन

जिनधर्म के सत्यमार्ग पर अग्रसर यह जीव कितनी तीव्र गति से स्व-पर उद्धार एवं प्रभावना के आसमानी शिखर की ऊँचाइयों को स्पर्श कर रहा था और यह क्रम बना ही रहता तो कितना अच्छा होता।

बचपन से जयपुर शिविरों में मेरी कक्षा में आगे बैठकर तीव्र जिज्ञासा एवं उत्साहित मन से तत्त्वग्रहण का भाव, उनमें स्पष्ट परिलक्षित होता था। पॉइन्ट नोट करना, याद करके सुनाना आदि अनेक-अनेक यादें मेरे स्मृति-पटल पर आज भी अंकित हैं।

मुझसे कहते, आपका वो गीत – सब झूठे रिश्ते नाते..मुझे बहुत पसन्द आया, मैं गुनगुनाता हूँ।

अब विचार आता है कि वह अंतरंग से बहुत वैरागी जीव रहा..तात्त्विक विचारधारा रही, उन शुभ परिणामों का ही सुफल उन्हें अब देव गति में पंचेपरमेष्ठी के सान्निध्य के रूप में मिल ही रहा होगा।

KKPPS दीपावली शिविर मंगलायतन 2022 में एक लघु नाटिका में टोडरमलजी का रोल करना बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कर उस मंचन को अमर किया। इस तरह अनगिनत यादों का पिटारा हृदय में समेटे मैं संजीव को सजीव रखूँगा।

धर्म उपदेशक के रूप हृदय में बसे थे

– डॉ. राजेन्द्र बंसल, गुरार

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के देह परिवर्तन का समाचार अति वेदना पूर्ण रहा। डॉ. संजीव गोधा का देह परिवर्तन ऐसे समय में हुआ जब वे कई कीर्तिमान स्थापित कर चुके थे और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जाने-माने अध्यात्मवेत्ता बन धर्मोपदेशक के रूप हजारों धर्म श्रद्धालुओं के हृदय में समा गए थे।

वह गंभीर से गंभीर विषयों को सरलता पूर्वक समझाते थे, उनका प्रतिपादन आगम के अनुसार होता था। उनका जीवन धर्म को अनुभूत करने और अपने श्रोताओं को धर्म में होने की प्रेरणा देता था। उनकी स्मृतियां सदैव हृदय में तरोताजा रहेंगी।

धर्ममय आत्मा शीघ्र ही पर्याय में पूर्ण धर्म को प्रकट करें, यही श्रद्धांजलि है।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

मनुष्य पर्याय की नश्वरता का बोध

– अजित जैन, बड़ौदा; अध्यक्ष : शाश्वतधाम, उदयपुर

आ. संजीवजी गोधा का देह परिवर्तन मुमुक्षु समाज का ही नहीं; अपितु समस्त जैनसम्प्रदाय के लिये दशक की सबसे बड़ी आघातजनक घटना है।

इतनी कम आयु में इतना ज्यादा क्षयोपशम, जिनशासन की प्रभावना के प्रति अत्याधिक समर्पण, जन–जन तक पहुँचाने का उनका अथक प्रयास सब को अचंभित करनेवाला था।

शायद यही कुछ कारण थे कि हजारों की संख्या में जैनमात्र ही नहीं; अपितु अन्यमत के लोग भी आ. संजीवजी भाईसाहब के प्रवचन नियमित सुनते थे और देश–विदेश में उन्होंने अपने एक बहुत बड़े श्रोतावर्ग का निर्माण किया था। आ. संजीवजी का इस तरह अचानक हम सब से बिछुड़ जाना अत्यन्त दुखदायी तो है ही; परन्तु अन्तिम साँस तक स्वाध्याय में निज स्वरूप में रमे रहने की, उनकी प्रवृत्ति हमें देह से भिन्न आत्मा के प्रति हमारे श्रद्धान को और मज़बूत करती है। साथ में इस मनुष्य पर्याय की नश्वरता का बोध कराती है। आ. भाईसाहब जाते–जाते हमें कितनी बड़ी प्रेरणा दे गये हैं।

उन्होंने हमें निश्चिन्त कर दिया

– श्रीमती सोनल–मुकेश जैन; महामंत्री : ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर

संजीवजी गोधा भाईसाहब जैसे व्यक्ति का मिलना ही बहुत मुश्किल है, फिर तो वह विद्वान भी थे। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व एक जैसा था। जब इनके (मुकेशजी) द्वारा मुझे पता लगा कि ढाईद्वीप रचना का निर्देशन भाईसाहब कर रहे हैं, तभी से मेरा उनसे सामान्य परिचय हुआ; लेकिन मुलाकात बहुत बाद में हुई।

ढाईद्वीप के निर्माण के प्रारंभ से अंत तक संजीवजी ने अथक मेहनत की, ढाईद्वीप निर्माण में कहीं हम निश्चिंत थे तो वो एक मात्र रचना को लेकर; क्योंकि भाईसाहब जयपुर से रचना का पूरा काम देख रहे थे।

उनके वियोग का दु:ख बहुत है। ढाईद्वीप की आधारशिला जब रखी जा रही थी, तब आपने ही ढाईद्वीप की रचना का प्रस्ताव रखा था, जो बन के साकार हुई है। आ. भाईसाहब निश्चित ही जहाँ भी होंगे, अपने स्वरूप में होंगे और शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करेंगे। वे हम सभी को जो शिक्षा देकर गए हैं, हम उस मार्ग पर चलें, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

समयसार मंत्री बन गये

– भरतभाई टिम्बाडिया, कोलकाता

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी जिनकी नस–नस में बसे थे, पू. गुरुदेवश्री जिनके हृदय में विराजमान थे, आ. छोटे दादा के अनन्य प्रिय शिष्य, अगाध विद्वत्ता के धनी, चारों अनुयोग के ज्ञाता, युवारत्न, खुद शास्त्री न होते हुए भी हजारों शास्त्रिओं के गुरु, सरलता और सहजता जिनका स्वभाव, आबाल गोपाल सबके प्रेरणास्रोत, ओजस्वी वक्ता, चुंबकीय आकर्षणवाले, अध्यात्मवेत्ता आदरणीय डॉ. संजीवजी गोधा भाईसाहब को शत–शत नमन।

जिनदेव, आचार्य भगवंतों की वाणी जो हमें पूज्य गुरुदेवश्री परोस गये, वह तत्त्व संजीवजी भाईसाहब ने अति सरल भाषा में हमें समझाया। पू. गुरुदेवश्री की संजीवनी वाणी संजीवजी भाईसाहब हमें घुटा गये।

तुम सिखा गये कि देह छूटने के पहले तुम दृष्टि में उसे छोड़ दो। गृहस्थ जीवन में समाधि पूर्वक जीवन जीने की कला हमें सिखा गये। अंत समय मे बस समयसारजी का घुटन और घोलन स्मरण रहा। वह समयसार मंत्री बन गये।।

इससे अधिक नहीं लिख पाऊँगा...

– डॉ. मनीष शास्त्री; एसोसियेट प्रो. कुन्दकुन्द महाविद्यायल, खतौली

जीवन में पहली बार महसूस हुआ कि जिनशासन के किसी महान प्रभावक का वियोग कितना हृदयविदारक हो सकता है। जब इंदौर रेलवे स्टेशन से ढाईद्वीप के लिए रवाना हुआ। तभी जो भाई मुझे स्टेशन लेने आया था, उसने संजीवजी के निःप्रतिकार रोग का समाचार दिया। उसके बाद मुझे नहीं मालूम कब ढाईद्वीप आ गया और कब कमरे में पहुँच गया। चलते-फिरते उठते-बैठते हरपल उन्हीं की सौम्य छवि दिखाई देने लगी।

डॉ. संजीव गोधा की यह छवि मन में आते ही एक विशाल दुनिया आँखों में साकार हो उठती। क्या यह दुनिया कुछ ही दिनों में प्रलय का ग्रास बन जायेगी? मन मानने को तैयार नहीं था। सभी स्तब्ध थे। किसी के पास कहने जैसा कुछ नहीं था; यद्यपि पंचकल्याणक की व्यस्तताओं में सब विवश थे; किन्तु सबके चेहरों की रौनक गायब थी। हम सभी सैकड़ों भाई एक-दूसरे से चिपककर रोना चाहते थे। ये क्या हो गया। वो शान्त, निश्छल, तेजस्वी छवि संसार से दूर जाती हुई स्पष्ट दिख रही थी। चिकित्सा की सभी पद्धतियाँ वेबस थीं। प्रतिकार के जो प्रयास चल रहे थे, उनकी सीमाओं का सभी को पता था। आखिरकार वह यथार्थ हमारे तत्त्वबोध की कड़ी परीक्षा लेने हमारे समक्ष आकर खड़ा हो ही गया।

मैने अपने जीवन में संजीवजी से बड़ा कोई श्रुतआराधक नहीं देखा। उनकी व्यक्तिगत आराधना एवं अतिशय प्रभावना का मूल कारण उनकी श्रुत-भक्ति थी। बाल्यकाल से ही जिनवचनों के सेवन से उनका जीवन खिल उठा था। जिनवाणी के लिए सर्वस्व समर्पण करने की भावना ने जीवन को लोकातीत गति प्रदान की। कोई फर्क नहीं पड़ता कि जीवन लंबा रहा या छोटा; अपितु महत्त्व इस बात का है कि जीवन सार्थक कितना रहा। संजीवजी का जीवन आराधना और प्रभावना, दोनों ही दृष्टियों से सार्थक रहा। वे जीवन में भी अत्यंत दृढ, शान्त, अनासक्त निरभिमानी सरल परिणामी रहे एवं जीवन के आखिरी समय को भी उन्होंने एकनिष्ठ होकर जिया, उन्होंने अपने शाश्वत अस्तित्व को स्वीकार करते हुए भौतिक जीवन की अस्थिरता का गहराई से अनुभव किया था। न कोई उत्तेजना, न किसी से कोई शिकायत, न कोई असंतोष का भाव, चेहरे पर बस एक ही भाव था, मानो कोई पथिक किनारे पर बैठकर नदी के प्रवाह को बस शान्त भाव से देख रहा हो।

यक्ष प्रश्न है कि जीवन व मरण कैसा होना चाहिए? इन दोनों का उत्तर उन्होंने कितनी सहजता से दे दिया। जीवन कैसा होना चाहिए इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने जिनवाणी के लिए जीकर एवं मरण कैसा होना चाहिए इस प्रश्न का जवाब उन्होंने मरण को सहज भाव से स्वीकार कर दे दिया। उनकी श्रुतभक्ति, ओजस्विता, सौम्यता, निष्ठा, सुबोध अभिव्यक्ति व निरंतरता के फलस्वरूप उनकी वाणी वहाँ तक पहुँची, जहाँ तक हम सोच भी नहीं सकते थे। ठेले पर सामान बेचने वाले भी उनके व्याख्यानों को सुनते-सुनते दुकानदारी करते देखे गए।

आध्यात्मिक तत्त्वोपदेशकों की न सुनने व उनके मंदिरों में न जाने की कसमें खाने वाले सैकड़ों लोगों के घर की चारदीवारों के अंदर संजीवजी कब पहुँच गये और पुश्तैनी मिथ्यात्व की जड़ों को कब उखाड़ दिया, मालूम ही नहीं पड़ा।

दुनिया कहीं की कहीं हो जाये, किन्तु सुबह-शाम नियमित समय पर आप यूट्यूब खोलिये, आपको संजीवजी की ओजपूर्ण वाणी निरंतर अज्ञान को ललकारते हुए मिल जायेगी। न परिवार देखा, न स्वास्थ्य, न दिन देखा, न रात, बस एक ही धुन थी कि उपलब्ध सर्वोदयी दिव्य जिनदर्शन को कैसे अधिक से अधिक लोगों की आँखों में तैरते हुए देख सकूँ।

हजारों लोग हैं, जिन्होंने जीवन में पहिला तत्त्वोपदेश संजीवजी से ही सुना, उनके लिए तो संजीवजी किसी दिव्यशक्ति से कम नहीं। जिनकी वाणी से उन्हें जीवन मिला, उनके जीवन-विराम की एक खबर ने उन्हें अनाथ कर दिया। क्या लिखें, क्या-क्या लिखूँ जीवन में अनेक स्थितियाँ ऐसी बन जाती हैं कि उसे शब्द देने में सारे शब्दकोश निरीह से दिखाई देने लगते हैं, उनका जीवन-मरण अपने आप में एक पुराण है। 43 वर्षों के मेरे जीवन मैं संजीवजी के वियोग से बढ़ी त्रासदी नहीं हुई। इससे अधिक मैं कुछ लिखने में समर्थ नहीं हूँ, जब समर्थ हो जाऊँगा, तब उपस्थित होऊँगा।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

उनके व्यक्तित्व के बिखरे मोती

– श्री राहुल गंगवाल, जयपुर
मंत्री : सम्यग्ज्ञान प्रचार–प्रसार ट्रस्ट

करीब 28 से 30 वर्ष पहले की बात है, जब सुनीलजी शास्त्री नाके, जयपुर के विभिन्न मंदिरों में धार्मिक कक्षाओं को संचालित कर रहे थे, उनके द्वारा एक कक्षा दिगंबर जैन मन्दिर, जनता कॉलोनी में ली जा रही थी और मैं उस कक्षा में मम्मी के साथ जाता था। तब वे अपनी कक्षा में ज्योति सेठी और संजीवजी का जिक्र करते थे।

उसके बाद दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर, जिसमें टोडरमलजी प्रवचन किया करते थे। उस मंदिर में आपसे प्रत्यक्ष मिलना हुआ। संयोग की बात है कि आपसे मिलने के कुछ समय बाद आपने जनता कॉलोनी जैन मंदिर में आकर नयचक्र की कक्षा लेना शुरू किया। तब आपसे विशेष परिचय हुआ और आगे चलकर यह परिचय साधर्मीपने और मित्रता में बदल गया।

मुझे याद है जब एक बार हम दोनों बड़े मंदिरजी जा रहे थे, तब किसी प्रसंग में मैंने कहा – देखो भैया, आप कितने दुबले–पतले और मैं कितना मोटा होता जा रहा हूँ। तब आपने तुरन्त कहा – इस शरीर का परिणमन स्वतंत्र है और अपने से भिन्न है, इसको मत देखो, इससे भिन्न अपने आत्मा को देखो, वही देखने लायक है। एक बार बातचीत में मैंने कहा – संजीवजी मुझे कम याद होता है। तब उन्होंने कहा – इसकी कोई चिंता नहीं करनी है, यह तो अपने–अपने क्षयोपशम के कारण ऐसा होता है। इतना तो याद रहता है कि मैं कौन हूँ? इसतरह से मुझे व मेरे अन्य साथियों को हमेशा पाठशाला, स्वाध्याय, प्रभावना के कार्यों के लिए मोटिवेट करते रहे थे।

पण्डित टोडरमल स्मारक में शिविर में शिविरार्थियों को लाने–लेजाने के लिए स्मारक से बस आती थी। उसमें कई बार मुझे उनके साथ आने–जाने का मौका मिला। तब मैंने देखा, शिविर में जिस गाथा पर प्रवचन हो रहे होते, वे आने–जाने के समय बस में, उन्हीं गाथाओं को याद करते; जबकि दूसरे लोग आपस में बातें करते रहते। सचमुच शुरू से ही ऐसी अगाध रुचि और तत्त्वज्ञान के प्रति समर्पण उनके जीवन में अद्भुत था।

जैनधर्म के प्रचार–प्रसार के लिए सन 2011 से विदेश यात्रा पर जाने लगे और उनकी प्रसिद्धि दिनोंदिन बढ़ने लगी; लेकिन प्रसिद्धि को कभी मान कषाय के रूप में परिणमित नहीं होने दिया और जीवन की सहजता को बनाए रखा।

बेटी के नामकरण के बारे में संजीव भैया से बात की, क्या नाम अच्छा हो सकता है? तब **ग** अक्षर के अनुसार नाम रखने की बात कही और मैंने अपनी बेटी का नाम **गाथा जैन** उनके कहने से रख लिया। इस बात से मैं ये कहना चाहता हूँ कि वे हमारे परिवार के ही अभिन्न सदस्य थे, उनके द्वारा मिले तत्त्वज्ञान और संस्कारों से ही, मैं और मेरा पूरा परिवार जुड़ा हुआ है। आज हमारी पारिवारिक एकता में संजीवजी की प्रेरणा सर्वाधिक है।

जनवरी 2023 में जब आप बीमार हुए और इंदौर से मुम्बई चले गए, तब मेरा मुंबई जाकर आपसे मिलना हुआ। डॉ. मेहता आपका इलाज तो कर ही रहे थे; लेकिन तत्त्वज्ञान के बीच में रखकर, उनकी समाधि की तैयारी भी कर रहे थे और संजीवजी उन्हें पूरा सहयोग कर रहे।

कहने का मतलब यही है कि वे अपने अंतिम समय में भी तत्त्वज्ञान और तत्त्वचिन्तन में जागरूक बने रहे। संजीवजी तत्त्वज्ञान के लिए बने थे; इसलिए तत्त्वज्ञान का प्रचार–प्रसार करते रहे और अंत में तत्त्वज्ञान में लीन हो गए।

बस! उनके जाने से समाज को एक बहुत बड़ी क्षति हुई है, जिसे पूरा नहीं किया जा सकता।

सिद्धालय के पथिक संजीव गोधा

– डॉ. अखिल बंसल

महामंत्री : अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ

सफेद कुर्ता-पाजामा व जैकिट के मध्य दमकता सौम्य, प्रभावी व्यक्तित्व अक्सर youtube पर अध्यात्म का अलख जगाता दिख जाता था; परंतु 47 वर्ष की अल्पवय में ही 17 फरवरी को वह सदा मुस्कुराता, धीर-वीर-गंभीर व्यक्तित्व सदा के लिए हम सब से दूर उस खोज में निकल गया, जिस का रास्ता सिद्धालय की ओर जाता है। वैसे तो संसार में जिसका प्रादुर्भाव हुआ है, उसका अभाव एक सुनिश्चित क्रिया है। अतः जो आया है, वह एक न एक दिन तो जाएगा ही। जन्म और मृत्यु वैसे ही हैं, जैसे दिन के बाद रात और सुख के बाद दुःख आते-जाते रहते हैं। इस परम सत्य का बोध भाई संजीवजी को निश्चित ही था। तभी तो वह अपना सारा समय अध्यात्म के सरोवर में गोते लगाने में व्यतीत करते थे।

संजीवजी का असमय चले जाना, हम सबकी ज्ञानचक्षु खोलने के लिए बहुत है। हम सभी स्वाध्यायी हैं तथा पण्डित दौलतरामजी द्वारा रचित छहढाला की निम्न पंक्तियाँ पढ़ते तो हैं, पर गुनते नहीं। वे लिखते हैं-

दुर्लभ लहि ज्यों चिन्तामणी, त्यों पर्याय लहि त्रसतणी

अब हमारे चेतने का समय है। यह शरीररूपी नौका दुःख के समुद्र को पार करने के लिए तथा जन्म-मरण से मुक्त होने के लिए सेतु के समान है। संयम एवं तपश्चरण इस मनुष्य पर्याय में ही संभव हैं।

हमें यह दुर्लभ मनुष्यभव मिला है। अतः सत्यम्, शिवम् सुंदरम् का वास्तविक बोधकर शिखरयात्रा पूर्ण करने का भाव जागृत करना चाहिए। कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी एक कविता में कहा है -

यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो, समझो जिसमें यह व्यर्थ ना हो

ये पंक्तियाँ हमें जीवन का बोध कराती हैं। यह पर्याय हमें नर से नारायण बना सकती है, इसके लिए गंभीरता से व्यक्ति प्रयास करें तो सिद्धालय का मार्ग कठिन नहीं है। मनुष्यभव की सार्थकता धर्माचरण को धारण करने में ही है, इस तथ्य से भाई संजीवजी अनभिज्ञ नहीं थे। तभी उन्होंने अध्यात्म का मार्ग अपनाया और पण्डित टोडरमलजी के मार्ग का अनुसरण किया।

कमल की पंखुड़ी पर पड़ी हुई ओस की बूंद का क्या हस्र होता है, इस तथ्य से हम सब भली-भांति परिचित हैं। वह पवन के एक झोंके मात्र से गिर पड़ती है और सदा के लिए विलीन हो जाती है। सभी संयम और साधना का सोपान चढ़कर नर से नारायण बनने की यात्रा पूर्ण करने की दिशा में आगे बढ़ें व संजीवजी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने भव का अभाव करें, इसी भावना के साथ विराम लेता हूँ।

आंखों से ओझल नहीं होता चेहरा

– डॉ. प्रवीणकुमार जैन

प्राचार्य – ढाईद्वीप शिक्षण संस्थान, इंदौर

डॉ. संजीवजी गोधा आज ऐसा नाम है, जिसने बहुत ही अल्प समय में इतना काम किया, जितना करने में अनेक वर्ष लग जाते हैं। किसी ने सच ही कहा है कि **सौ साल काम करने के लिए सौ साल जीने की जरूरत नहीं, जिंदगी में ऐसा काम करो, जो सौ सालों तक याद रखा जाए** यह पंक्ति संजीवजी पर चरितार्थ होती है। उन्होंने 47 वर्ष की उम्र में ही सैकड़ों वर्षों तक किए जानेवाले कामों को अंजाम दे दिया।

दुनिया में बहुत लोग ऐसे होते हैं, जो लोगों के दिल से उत्तर जाते हैं, वहीं गोधाजी ऐसे व्यक्तित्व थे, जो हर एक के दिल में उतर जाते थे, उनके व्यक्तित्व को ऊँचा उठा देनेवाली अनेक विशेषताओं में मुख्य 5 विशेषताएँ यहाँ कह रहा हूँ, जो अनेक लोगों का पथ प्रदर्शन करेंगी।

1. **कार्य की निरन्तरता,**
2. **आत्मविश्वास की परिपूर्णता,**
3. **व्यंग्य-कटाक्ष से परहेज,**
4. **पंथवाद के दुराग्रह से दूर**
5. **पूर्णता के लक्ष्य से शुरुआत।**

सच में वे एक वक्ता के साथ अच्छे श्रोता थे, लेखक थे, सम्पादक थे, श्रेष्ठ अध्यापक थे; आज्ञाकारी शिष्य, कुशल गुरु, आदि अनेक गुणों से युक्त थे।

श्री टोडरमल स्मारक में 13 साल तक उनका सान्निध्य प्राप्त किया, साथ में जैन पथप्रदर्शक व वीतराग विज्ञान पत्रिका के प्रबंधन का कार्य किया, खूब चर्चा की, स्वाध्याय किया। मुझे नहीं लगता कि वे मुझे छोड़कर कहीं चले गए। अभी भी प्रतिदिन लगभग 100 बार वे मेरी आँखों के सामने ही दिखाई देते हैं। उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा आँखों के सामने ही जीवंत नजर आता है।

बस भावना यही है, जैसा तात्त्विक जीवन उन्होंने जिया, मैं भी जियूँ और जीवन के अंतिम दिनों में जैसा उन्होंने भेदज्ञान का अभ्यास किया, मैं भी करूँ!

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

संजीविज्म

– महेश जैन, भोपाल
निर्देशक : तीर्थधाम ज्ञानोदय, दीबानगंज

जैन विद्वत–परंपरा में आदरणीय डॉ. संजीवजी का स्थान सदैव अग्रगण्य रहेगा। हम सभी ने अनेक प्राचीन विद्वानों को पढा है तथा अपने समय के प्राचीन विद्वानों को सुना भी है; लेकिन जहां ये सभी विद्वान किसी एक दिशा में निष्णात रहे हैं, वहीं संजीवजी भारतीय दर्शन–परंपरा से संबंधित जितनी विधाएं हो सकती हैं, उन सभी विधाओं में अप्रतिम थे, हैं और रहेंगे। सत्य तो यह है कि संजीवजी अपने आप में एक विधा है, उनकी अपनी शैली है, अपना एक अलग ही ढंग का सरल और सर्वग्राह्य प्रस्तुतीकरण है। सर्वग्राह्य से तात्पर्य जिनागम को ऐसी भाषा में प्रस्तुत करना, जहां विरोधी भी यह न कह सकें कि इन्होंने जैनसिद्धांत या जैनमत के रंचमात्र भी विपरीत प्रतिपादन किया।

चारों अनुयोगों में से किसी भी अनुयोग पर आप संजीवजी को सुनते जाइए और सुनते जाइए.... आपको कहीं भी यह महसूस नहीं होगा कि सुननेवाले को अथवा सुनानेवाले को विराम देने की आवश्यकता है। यहां तक कि प्रतिदिन उसी विषय को आप उनसे रिपीट भी करवाएं तो भी।

घनानंद की एक पंक्ति याद आती है –

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये ।

ऐसा ही उनका प्रतिपादन रहता है, जितनी बार सुने, उतनी बार आपको विषय में नयापन महसूस होगा। संजीव जी की एक विशेषता यह भी है कि एक ही विषय पर दो प्रवचन आप सुने दोनों में एक नवीनता आपको महसूस होगी।

संजीवजी अपने आप में एक विचारधारा हैं, एक युग हैं, इसीलिए हमने शीर्षक में संजीविज्म का प्रयोग किया है। उनका जितना भी काल रहा है वह अपने आप में संपूर्ण रहा है, भाषा की दृष्टि से, विषय की दृष्टि से, प्रतिपादन की दृष्टि से, प्रतिपाद्य की दृष्टि से, लेखन की दृष्टि से, सर्वग्राह्यता की दृष्टि से आप किसी भी एंगल से संजीवजी को देख लें, उनके संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व में संजीविज्म ही नजर आता है। उसको तोड़ पाना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है

मुझे याद है ज्ञानोदय की रचना, जब अपने प्रारंभिक चरण में थी और संभवत इसके शिलान्यास का कार्यक्रम था, तब संजीवजी भोपाल आए थे और मैंने पहली बार उनको यही भोपाल में सुना था। जब उनका प्रवचन समाप्त हुआ, तब मैंने उनसे कहा कि संजीवजी आज मैंने नए रूप में पंडित टोडरमलजी को देखा है और आपको सुनकर ऐसे लगा कि जैसे साक्षात टोडरमलजी प्रवचन कर रहे हो। वे मुस्कुराकर रह गए; परंतु उनके उस प्रवचन से मैं इतना प्रभावित हुआ कि अगले जयपुर के शिविर में मैं केवल संजीवजी की कक्षा अटेंड करने गया और क्रमबद्धपर्याय विषय पर ५ दिन तक उनकी कक्षा अटेंड की। तब से लेकर आज तक मैंने उनके प्रायः अनेक विषयों पर प्रवचन सुने हैं और जब कभी विषय समझ में नहीं आया और उनसे फोन पर बात की तो उन्होंने बड़े ही सहजता के साथ शंका का समाधान किया। विगत २ वर्ष पूर्व हमारे बड़े बेटे को कार्य वश उनके यहाँ रहना था, इस दौरान उनसे अक्सर फोन पर बात हो जाती थी। उन बातों में बच्चे के कार्य के संबंध में तो १ मिनट बात होती थी, पर १० मिनट उनसे मैं विभिन्न विषयों पर शंका–समाधान कर लेता था। ज्ञानोदय भी उनका तीन–चार बार आना हुआ, वे हमेशा ज्ञानोदय के विद्यार्थियों को लेकर मुझसे व्यक्तिगत रूप से चर्चा करते थे तथा बच्चों का स्तर विशेषकर जैनदर्शन के क्षेत्र में कैसे आगे बढ़ाया जाए, इस पर अपना अमूल्य मार्गदर्शन देते थे। मैं भी प्रयास करता था कि उनके मार्गदर्शन का यथावत पालन हो सकें।

आज संजीवजी हमारे मध्य नहीं हैं; किंतु संजीविज्म हमारे बीच में हैं और हमेशा रहेंगे। जब तक मोक्षमार्ग प्रकाशक, त्रिलोक रचना, समयसार जैसे गूढ़ विषयों पर विद्वानों के मध्य चर्चाएं जीवन्त रहेगी, तब उन चर्चाओं के मध्य संजीविज्म साकार रूप में उपस्थित रहेगा।

तुम याद बहुत आओगे.....

– डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर

प्रिय संजीव,

तुम्हारी तत्त्व-निष्ठा, तुम्हारी गुरु-निष्ठा, तुम्हारा तत्त्वज्ञान के प्रति समर्पण, तुम्हारा वात्सल्य, तुम्हारा अनुशासन, तुम्हारी विनम्रता, ... सबकुछ अत्यन्त ऊँचे दर्जे का था। तुम्हारी जितनी प्रशंसा की जाए, उतना कम है; तुम्हें याद करते हैं, तो आँखें नम हो जाती हैं, इतनी भी क्या जल्दी थी, तुम्हें जाने की; तुम्हारा इतनी जल्दी जाना, सम्पूर्ण समाज को अन्तस् तक क्षुब्ध तो कर ही गया; बल्कि एक वैराग्यपूर्ण संदेश भी दे गया कि जितनी जल्दी हो सकें, उतनी जल्दी आत्म-कल्याण में प्रवृत्त तो हो ही जाना चाहिए।

साठोत्तरी या अधेड़ अवस्था होने का इन्तजार करना, भयंकर भूल हो सकती है, कभी-भी बुलावा आ सकता है - यह तुमने वाणी के द्वारा नहीं, मानो करके ही समझा दिया।

वास्तव में तुम तो तुम ही थे, अंत समय में तुम्हारा धैर्य और तुम्हारी अन्तर्मुखी वृत्तियाँ, सबकुछ बहुत-बहुत प्रेरणादायी रहीं, आज भी वे आँखों के सामने झूलते रहते हैं। तुमने जीना तो सिखाया ही, मरना भी सिखा दिया।

तुमने तो अपना काम कर ही लिया, तुम्हारे साथ हम भी अपना काम कर जाएँ - ऐसी प्रेरणा मैं स्वयं लेता हूँ और समाज को भी अवश्य लेना चाहिए; बस, इतना ही कहना चाहता हूँ। तुम याद बहुत आओग।

प्रेरणादायक युवा विद्वान

– डॉ. उमापति शास्त्री, चेन्नई

मिथ्यात्व सेना के विरुद्ध सम्यक्त्व की आयुधशाला के सक्षम, धारदार व अचूक अस्त्रों में अपरिहार्य अस्त्र, प्रिय बंधु संजीवजी गोधा का असामयिक अवसान जिनवाणी के पिपासुओं के मध्य एक रिक्ति को पैदा कर गया। वे डॉ. भारिल्ल के प्रमुख सिपहसालार थे, जिनपर उनका अतीव प्रेम और विश्वास सदा रहा।

कतिपय अवसरों पर संजीवजी से भेंट हुई, अति संक्षिप्त ही सही फिर भी उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त हुआ।

श्रवणबेलगोला में एवं तमिलनाडु यात्रा के दौरान तमिलनाडु में जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के विषय में लंबी वार्ता भी हुई और सीमित संसाधनों से जूझ रहे तमिलनाडु के तत्त्वप्रचार को सहयोग देकर प्रभावना के परचम को ऊँचा उठाने की महती भावना उनके हृदय में थी, यह जानकर मैं गदगद हो गया। प्रेरणावर्धक उनके वचन, सदा ही हमारे भविष्य के कार्यक्रमों के लिए उर्वरता प्रदान करते थे।

परमागम ऑनर्स के अध्येताओं के बीच भी वे पर्याप्त प्रसिद्ध थे। जो हिंदी जानते थे वे सीधे ही उनके प्रवचन सुनते थे; बाकी लोग उनकी पुस्तकें व प्रवचनों के तमिल में अनूदित उद्धरणों से उन्हें चाहने लगे थे।

संजीवजी, अपने स्वाध्यायमय श्रम, समर्पण एवं जिनवाणी माँ के प्रति सेवाभाव के साथ समाज के प्रति भी अपने उत्तरदायित्वों को बखूबी साथ लेकर चलनेवाले थे। अपने वरिष्ठ एवं कनिष्ठ साथियों के लिए प्रेरणादायक थे। उनके द्वारा रिक्त जिनवाणी-सेवा कार्यक्रम की कड़ी को हम सपूत आगे लेकर चलें, यही उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि होगी।

जैनसमाज के प्रिय पण्डितों में एक

– डॉ. जयराजन शास्त्री, चेन्नई; केन्द्रिय विद्यालय संगठन

पण्डित संजीवजी गोधा से मेरा पहला परिचय 1995-96 के दौरान टोडरमल स्मारक में, अगस्त शिविर की कक्षाओं में हुआ। वे देश-विदेश की जैनसमाज के प्रिय विद्वानों में से एक थे। उनके प्रवचन को सुनने के लिए लोग हमेशा लालायित रहते थे। मैंने स्वयं उनके द्वारा लिखित कालचक्र का अध्यापन परमागम ऑनर्स के विद्यार्थियों के लिए कराया है, उनकी कृति कालचक्र निस्संदेह एक **लघु शोध प्रबंध** है।

कोविड काल के दौरान उनकी करणानुयोग से संबंधित कक्षाओं को ऑनलाइन सुनने का संयोग बना। विशेष क्षयोपशम के धनी होने के साथ-साथ जिनागम के हर विषय को सरल बनाकर परोसने की कला, उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने द्रव्यानुयोग के साथ ही प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग का अध्यापन कराके समाज को एक नई दिशा दी।

कुछ साल पहले जब उनसे मुलाकात की, तब मैंने उनके साधर्मी वात्सल्य का भी अनुभव किया। सदा हंसते-मुस्कुराते भावविभोर होकर जिनवाणी का रसपान करानेवाले संजीवजी की कमी सदा खलेगी। मैं तमिलनाडु शास्त्री परिषद् की ओर से उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

एक युग का अन्त

– पण्डित राजकुमार शास्त्री; उपाध्यक्ष : शाश्वतधाम, उदयपुर

कोई कितना जिया यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि किस तरह जिया यह महत्त्वपूर्ण है। डॉ. संजीव गोधा, आज हमारे बीच नहीं हैं, वे अल्पायु में ही हम से जुदा हो गये। वे हमारे साथ कम रहे, पर जितने रहे, संजीवनी ही जीवन पर्यन्त पीते और पिलाते रहे।

21वीं सदी के पूर्वार्द्ध के सकल जैनसमाज के युवा प्रभावक प्रवचनकारों का जब इतिहास उल्लेखित किया जायेगा तो निस्सन्देह 21वीं सदी के प्रारंभिक 22 वर्षों का समय संजीव गोधा युग के रूप में ही नामांकित किया जायेगा।

संजीवजी का जीवन पण्डित टोडरमलजी की ही तरह अध्यात्म–सिद्धान्त–आचरण की त्रिवेणी से स्नान होकर भक्ति, वैराग्य, विनम्रता, दृढ़ता, सरलता, सहजता, निर्लोभता, निष्पक्षता, कष्ट सहिष्णुता, जिनधर्म प्रभावना की उत्कट भावना इत्यादि गुणों से सुरभित था। माता–पिता से प्राप्त तत्त्वज्ञान के संस्कार पण्डित टोडरमल स्मारक भवन तथा आदरणीय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य तथा मार्गदर्शन में इस तरह से पल्लवित पुष्पित व फलित हुये कि जिनकी छाया, सुगंध व स्वाद का लाभ देश–विदेश के हजारों साधर्मियों ने प्राप्त किया।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में उनसे परोक्षरूप से लाभान्वित मुमुक्षु समाज प्रवक्ताओं में आप एकमात्र ऐसे प्रभावक प्रवक्ता थे, जिनकी वाणी से आचार्य कुन्दकुन्ददेव का अध्यात्म, सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्राचार्य के सिद्धान्त, समन्तभद्राचार्य का श्रावकाचार और रविषेणाचार्य का पौराणिक इतिहास अर्थात् चारों ही अनुयोग समान आदर के साथ प्रवाहित होते थे। आपकी इसी विशेषता से न केवल मुमुक्षु समाज बल्कि देश की सकल जैनसमाज आपकी श्रोता थी। जैनसमाज के त्यागियों, विद्वानों, श्रेष्ठियों में सर्वत्र आपको स्नेह व आदर प्राप्त था।

पिछले 15 वर्षों में तो संजीव गोधा मुमुक्षु समाज में आयोजित कार्यक्रमों की अनिवार्यता हो गये थे। कोरोना काल एक आपदा के रूप में हमारे बीच आया पर इसको स्वर्णिम अवसर के रूप में उपयोग करते हुये भाई संजीवजी ने बालबोध भाग 1 से समयसार तक प्रतिदिन तीन समय ऑनलाइन कक्षायें संचालित कर घर–घर में आबाल–वृद्ध को जिनवाणी रूपी संजीवनी पिलाकर तनाव व अवसाद में जाने से बचा लिया।

सर्वदा अति सक्रिय रहने की उनकी प्रवृत्ति ऐसा अनुमान कराती है कि संभवतः उन्हें आभास था कि मुझे अधिक समय मिले या न मिले। अत: जो समय हाथ में है, उसका भरपूर उपयोग कर लेना चाहिये, कल पर कुछ न छोड़ा जाये। समय कम हो तो मंजिल तक पहुँचने के लिये स्पीड बढ़ना ही एक उपाय है और यही काम संजीवजी ने किया। उन्होंने कक्षा–प्रवचन–गोष्ठी–विधान जो भी छोटे–बड़े ऑनलाइन–ऑफलाइन कार्यक्रम हो सभी में अपनी उपस्थिति देकर 94 वर्ष में किये जाने योग्य कार्यों को 47 वर्षोंमें निपटाया और हम जैसे श्रोताओं का साथ छोड़कर चल दिये सीमन्धरनाथ जैसे वक्ता के समवसरण की ओर। हो गया एक युग का असमय में अन्त। संजीवजी के साथ हर व्यक्ति का कोई न कोई संस्मरण है। वे सबको अपने लगते थे। इसलिये मैं भी अपनी ओर से इतना ही कहना चाहता हूँ कि संजीवजी समर्पण के माध्यम से मेरे द्वारा प्रसारित हर सन्देश व साहित्य व गतिविधि के अनुमोदक थे।

समर्पण ने जब प्रशासनिक सेवायों में जानेवाले समाज के युवावर्ग के लिए प्रयास खोलने का निर्णय किया तब संजीवजी ही प्रयास की नींव के पत्थर बने, जिन्होंने अपने प्रयासों से श्री राहुलजी गंगवाल से संपर्क करके जयपुर में निःशुल्क आवास उपलब्ध करवाया और प्रयास के प्रथम केन्द्र की घोषणा सिंगोली पंचकल्याणक में जन्मकल्याणक के अवसर पर 5 दिसम्बर 2021 को उन्होंने स्वयं ने की। ये प्रयास के राष्ट्रीय संयोजक थे, प्रयास के छात्रों की कक्षायें भी उन्होंने लीं।

उनके देहवियोग के प्रसंग पर पर में शाश्वतधाम, सिद्धायतन, समर्पण, प्रयास और संस्कार सुधा की ओर से श्रद्धांजलि प्रेषित करता हूँ और भावना भाता हूँ कि मैं भी आप जैसी ही गति बढ़ा कर स्व–पर हित हेतु यथाशक्ति निरन्तर संलग्न रहने का प्रयास करूंगा।

निकटवर्ती मोक्षार्थी : संजीवजी गोधा

– अशोक जैन, भोपाल
अध्यक्ष : तीर्थधाम ज्ञानोदय, दीवानगंज

जगत में बहुत विरले ही जीव होते हैं, जो जग के समस्त प्रपंचों से दूर होकर मात्र आत्मकल्याण की अभूतपूर्व भावना से अपने जीवन को जीवंत रखते हैं, ऐसी महान विभूति थे हम सभी के प्रिय डॉ. संजीवजी गोधा।

मैंने सन् 1998 से जयपुर शिविर में जाना प्रारंभ किया। तभी से स्मारक में नयचक्र की कक्षा लेते हुए 22-23 वर्ष के एक ओजवान आभामंडल युक्त युवा को बड़ी सरलता व सुगम वाणी से विशाल जनसमूह को प्रभावित व आकर्षित करते हुए देखा, तब अचंभा होता था कि आदरणीय संजीवजी ठीक वैसे ही प्रतिभा व विलक्षणता के धनी हैं, जैसे आज से 300 वर्ष पूर्व आचार्यकल्प पण्डित श्री टोडरमलजी थे।

संजीवजी गोधा का भोपाल की पावनधरा पर आगमन 2003 या 2004 के दशलक्षण पर्व पर हुआ था। उस समय भी उन्होंने जनसमुदाय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी थी। तीर्थधाम ज्ञानोदय के विषय में कहें तो जब संजीवजी को शिलान्यास के समय आमंत्रण दिया तो उन्होंने सहर्ष आने की स्वीकृति प्रदान की व सम्मिलित भी हुए। साथ ही नये संकुल के निर्माण में प्रमुदित होकर हर्ष व्यक्त किया।

पंचकल्याणक के अवसर पर आदरणीय संजीवजी ने तीर्थधाम ज्ञानोदय में पधारकर अपने ओजपूर्ण प्रभावी वाणी से सहस्रों मुमुक्षुओं को मोहित किया। अगस्त 2022 में आयोजित जिनदेशना शिविर में एवं सिद्धचक्र महामंडल विधान के अवसर पर आपके माध्यम से जिनतत्त्व की जो प्रभावना हुई, उसकी कोई सानी नहीं थी।

वास्तव में जिस जीव के मोक्ष की प्रबल इच्छा होती है, वह ज्यादा समय संसार में नही रमता। आदरणीय डॉ. संजीवकुमारजी गोधा निरन्तर स्वाध्याय की प्रेरणा व उत्कृष्ट जीवन को जीने की प्रेरणा हम सभी को देते रहे। वैराग्य का क्षण वास्तव में बड़ा भावुक करनेवाला होता है; परंतु भावुकता में हम आदरणीय संजीवजी की दी हुई सीख को कहीं विस्मृत नहीं कर लेवें। अत: काल का कोई भरोसा नहीं, तत्क्षण आत्मकल्याण करो - उनके द्वारा दी गई यह उक्ति हम सभी के जीवन रूपी मानस-पटल पर टंकोत्कीर्ण हो और उनका भौतिक देह-वियोग हमारे आत्मकल्याण की नीव बने, इसी भावना के साथ....

धर्मामृत का पान कराया

– नरेश लुहाड़िया
अध्यक्ष: वीतराग विज्ञान ट्रस्ट अजमेर

प्रसिद्ध पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकाएँ जैन पथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान के कुशल संपादक एवं पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के यशस्वी अध्यापक तथा सम्पूर्ण देश-विदेश के हजारों साधर्मी जनों को ज्ञानामृत का पान कराने वाले अध्यात्मवेत्ता जैनरत्न डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का हमसे चिर विरह हो गया।

प्रतिदिन प्रातः 9.20 एवं रात्रि 8 बजे का समय होते ही लौकिक सभी कार्य बन्द हो जाते थे और मैं एवं मेरी धर्मपत्नि आशा उनके प्रवचन श्रवण करने बैठ जाते थे कहीं पर भी रहें; किन्तु हम उनके नियमित श्रोता रहे।

विगत वर्ष फाल्गुन अष्टान्हिका पर्व में आदरणीय गोधाजी सपत्निक प्रवचनार्थ हमारे अजमेर आये थे। तब अजमेर जैनसमाज एवं आस-पास के अनेक स्थानों के साधर्मीजनों ने भरपूर लाभ लिया था।

आदरणीय गोधाजी ने हमें वर्षों धर्मामृत का पान कराया और जाते-जाते भी हमें संसार की असारता, शरीर की नश्वरता और भोगों की क्षणिकता को प्रत्यक्ष दिखाते हुए हमसे सदा-सदा को विदा हो गए।

ऐसे अद्भुत महान व्यक्तित्व के धनी का महाप्रयाण निश्चित ही जैनसमाज के लिए अपूरणीय क्षति है ऐसे वैराग्य के प्रसंग पर निश्चित ही हम सबको संकल्पित होना चाहिए। तीर्थंकर भगवतो की दिव्यदेशना को अवश्यमेव हृदयंगम कर मनुष्य भव सफल करना चाहिए।

इसी संदर्भ में पू. गुरुदेव श्री का वह वाक्य स्मरण हो आता है कि आयुष्य की स्थिति पूरी होने से पहले ही भगवान को जान लेना उसको जाने बिना तेरे संसार का अन्त आने वाला नहीं है।

अन्त में आदरणीय गोधाजी अपनी धार्मिक भावना के फलस्वरुप शीघ्र परम सुख शांति को प्राप्त हो आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, वीतराग विज्ञान ट्रस्ट अजमेर एवं लुहाड़िया परिवार की ओर से विनम्र भावांजलि !

अध्यात्मवेत्ता

डॉ.संजीवकुमार गोधा

संजीव जी संजीवनी हैं...

– पण्डित अशोक लुहाड़िया, मंगलायतन

अनेकांतमयी इस जैनशासन की अविरल धारा को अनवरत रूप से प्रवाहित करने वाले डॉ संजीव जी गोधा का वियोग मुमुक्षुसमाज के लिए ही नहीं; अपितु सकल जैन समाज के लिए एक अविस्मरणीय प्रसंग है।

वास्तव में संजीवजी, संजीवनी बूटी बनकर इस कलिकाल में जन्मे। जिसप्रकार लक्ष्मण जी के मूर्छित हो जाने पर संजीवनी बूटी से उन्हें पुनर्जीवित किया गया था, उसी प्रकार कोरोना की महामारी में हजारों लाखों लोग जब मिथ्यात्व, अज्ञान और भय से ग्रस्त थे, तब आप संजीवनी बूटी बनकर उपस्थित हुए और समग्र जैन समाज के लिए तत्त्वज्ञान की वैक्सीन बनकर उपस्थित हुए।

तत्वज्ञान हि जीवानाम् , लोकद्वयसुखावहम् अर्थात् तत्त्वज्ञान ही वास्तविक अमृत है, जो इस लोक और परलोक दोनों में जीवों को सुख प्रदान करता है। आदरणीय संजीवजी ने अपना समस्त जीवन इसी अमृत को पीने और पिलाने में समर्पित कर दिया।

भयकारी परिस्थितियों में वे एक मसीहा के रूप में उपस्थित हुए और वीतरागी जैनशासन के अमृत तत्वों के माध्यम से जन–जन को रसास्वादन कराया। उनके प्रवचनों से लिए गए कुछ बिंदु यहाँ अंकित करता हूँ –

संजीवनी बूटी का देखो रे कमाल,
राग रूप विकारी भावों का होगा बुरा हाल,
सिद्धलोक पहुँचेगा जीव होकर खुशहाल,
सुख अरु शांति से फिर रहेगा अनंत काल,
ज्ञान और वैराग्य का भरा हो जिसमें माल,
ऐसे संजीव को बारंबार धन्यवाद।

- एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता, एक पर्याय दूसरी पर्याय में कुछ नहीं करती, एक परमाणु दूसरे परमाणु का कुछ नहीं करता, यह एक समय का स्वतंत्र सत् है।
- कर्म के कारण राग नहीं, राग के कारण ज्ञान नहीं।
- द्रव्य त्रिकाल शक्तिमान है , गुण शक्ति है और पर्याय एक समय की योग्यता है।
- पाप–पुण्य भाव ही बंध है, एक वीतराग भाव ही मुक्ति है।
- उपादान से कार्य होता है, निमित्त से नहीं।
- लौकिक पदार्थों को भोगने से या उनसे दूर भागने से सुख नहीं मिलता, अलौकिक चेतन तत्त्व को भोगने से एवं निरंतर जानने से सुख की धारा बहती है।
- सुखी होने के लिए विकल्प सामग्री मत जोड़ो, उनमें सुख बुद्धि छोड़ो।
- विश्व में सुख का कारण वैराग्य और दुख का कारण राग है।
- जिस तरह नदी में नाव रहे तो चलेगा, पर नाव में नदी नहीं आनी चाहिए, उसी तरह संयोग भले उपलब्ध हों, पर अपने उपयोग में नहीं आने चाहिए।
- अनित्य का बोध हुए बिना नित्य की यात्रा असंभव है।
- अज्ञानी मौत से डरता है, ज्ञानी से मौत डरती है।
- इंद्रिय सुखों में सुख की कल्पना करना ही पाप का बीज है।
- जो शरीर को अपना माने, इंद्रियज्ञान को ज्ञान और इंद्रियसुख को सुख माने वह चलता फिरता मुर्दा है।
- हिंसादि पापों का फल अधिकाधिक 7वाँ नरक अर्थात् 33 सागर है; परन्तु मिथ्यात्व महापाप का फल निगोद है, अतः सर्वप्रथम इस महापाप से डरना।
- अंतर्दृष्टिपना ही सर्वत्र उपयोगी है, स्वयं को अंतरंग से देखोगे तो ज्ञान होगा, शरीर को अंतरंग से देखोगे तो वैराग्य होगा।
- राग का पक्ष लोगे तो संसार में रखड़ोगे और ज्ञायक का पक्ष लोगे तो सिद्धालय में जा पहुँचोगे।
- जो अपना आत्महित नहीं सोचता, वो दरिद्री है।
- संयोग में वियोग बसे, भोग में रोग बसे, तत्वचिंतन में धर्म बसे।
- संसार कोयले के समान है। ठंडा हो तो कालापना देता है और ऊष्ण हो तो जलाता है उसी प्रकार संसार राग करने योग्य तो नहीं, द्वेष करने योग्य भी नहीं; मात्र भेदज्ञानपूर्वक उपेक्षा करने योग्य है।
- असाता के उदय में ही ज्ञान की कसौटी होती है।
- मृत्यु सूचना देकर नहीं आती, अतः तू मरण का समय आने से पहले ही चेत जा।

हम सब संजीव गोधा हैं?

– पण्डित सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर

बचपन में टोडरमल स्मारक में खेलते हुए, उनकी सरल सौम्य मुद्रा को निहारा करता था, उस समय जब वे जाने-पहचाने विद्वान नही थे; तब से उस व्यक्तित्व की सकारात्मकता को पहचानता हूँ मैं। दिखते ही चेहरे पर बस एक मुस्कुराहट और आते-जाते हाल-चाल पूछ लेना।

तत्त्व की इतनी गहरी रुचि होगी और भविष्य में इतने सुयोग्य विद्वान बन जाएँगे, इसका अन्दाज़ तो शायद किसी को नहीं होगा। चाचा-भतीजा, बड़े भाई, आप कोई भी नाम दें हमारे रिश्ते को, वह हमारे आपसी स्नेह के आगे कमतर ही पड़ेगा।

तत्त्वज्ञान की धारा में उन्होंने ऐसी डुबकी लगायी और डुबकी लगाकर उस धारा को ऐसी गति प्रदान की कि जिसकी व्याख्या के लिए शब्द कम हैं। आज जिनधर्म का झंडा पहले से कई गुना ज़्यादा ऊँचा कर गए हैं वे।

लोग पूछते थे क्या करते हैं आप? वे गर्व से कहते थे कुछ नहीं करता हूँ; परन्तु मैं आज गर्व से कहता हूँ, भैया, जो आप करते थे वो कोई नहीं करता था। कमाने-धमाने के चक्कर में तो सारी दुनिया पड़ी है, आपने तत्त्व की जो कमाई की, वो कोई नहीं कर पाया। इतना कर गए कि मैं कई बार अकेले में कहता था कि थोड़ा आराम तो कर लो, स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं है, पर उन्हें तो इस मनुष्यभव की दुर्लभता और समय की क़ीमत का पूरा आभास था; इसलिए वे रुके नहीं, बस दौड़ते रहे। दिन में दो-तीन बार प्रवचन करने का श्रम वे इसलिए करते थे; क्योंकि वे खुद ही कहते थे, **जब हम पढ़ाते हैं, तब पढ़ते हैं। उन्हें पढ़ना था, अधिक से अधिक पढ़ना था इसलिए प्रवचन करना था।**

मैं उनके अंतिम दिनों का साथी बन सका, नज़दीक से सहारा दे पाया, उन यादों को हमेशा संजोके रखूँगा। जब पता चला की भैया को एक गम्भीर बीमारी है और उनकी रिपोर्ट डॉक्टर ने फ़ोन पर मेरे पिताजी (शुद्धात्मप्रकाशजी) को बतायी तो माथा चकरा गया। डॉक्टर ने जब रिपोर्ट हाथ में थमायी तो रज़ाई के नीचे रिपोर्ट छिपाकर समझ रहा था कि दुनिया से सच छिपा लेंगे और सच छिपाकर संजीव भैया को बचा लेंगे, पर होनी को कौन टाल सका है? मुंबई जाते वक़्त गाड़ी में बैठे-बैठे उनका हाथ ज़ोर से पकड़ा था, हिम्मत देने के लिए या हिम्मत लेने के लिए, कह पाना मुश्किल है।

संजीव भैया का जाना मेरे जीवन के लिए एक बहुत बड़ी घटना है। ख़ुद को सम्भाल पाना मुश्किल है। ऐसा लगता है जैसे संसार ने थप्पड़ मारकर हमें चेताया है कि मेरा यह स्वरूप है, इसे समझ लो, धोखा मिले तो फिर मत पछताना।

पल भर के लिए सोचें कि जो संजीव भैया के साथ हो गया, वह हमारे साथ हो गया तो? हो तो सकता है ना? आप कहेंगे शुभ-शुभ बोलो, अब भला पर्याय का बदलना कब से अशुभ हो गया? संजीव भैया ने तो अपना भव सम्भाल लिया, पर क्या हमने अपना सम्भाल लिया है? यदि हमारी आयु भी 46 हुई तो क्या हम संभल गए हैं? यह विचारने की ज़रूरत है, इसलिए मैं कहता हूँ, हम सब संजीव गोधा हैं। विचारना होगा।

मेरे गुरू, मेरे आदर्श

– पण्डित अनेकान्त शास्त्री भारिल्ल

संजीव भाईसाहब मेरे गुरू, मेरे आदर्श थे। हसमुख व्यक्तित्व के साथ-साथ उनका ज्ञान बहुत ही विशद एवं विस्तृत था।

उनके द्वारा लीं गई नयचक्र एवं क्रमबद्ध पर्याय की कक्षा मुझे आज भी याद हैं। वे किसप्रकार कठिन से कठिन विषय को कितनी आसानी से समझा देते थे। उनकी भाषा शैली विषय को एकदम बांधे रखती थी। आदर्श अध्यापक के साथ-साथ उनका जीवन भी शुद्ध सात्विक था। तत्त्वप्रचार के लिए उनका परिश्रम अद्वितीय है। जिसप्रकार youtube पर उन्होंने Subject wise हर विषय कि Playlist तैयार की हैं, वह आगामी कई दशकों तक लोगों को जिनवाणी से जोडने में सहायक रहेगी।

वे शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष पद को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

सत्पथ पर चल रहे थे

– पण्डित विपिन जैन, नागपुर
संस्थापक : सत्पथ फाउंडेशन, नागपुर

जब संजीवजी का जीवन देखते हैं तो किसी कवि की लिखी ये पंक्तियां सार्थक नजर आती हैं कि –

चाहे जितना घना अंधेरा, घिरा रहे जग के आंगन में
दीपक जिनके पास सत्य का, वे प्रकाश में ही जीते हैं

उनके सुखद जीवन का राज भी श्रुत का सान्निध्य था। समूचा विश्व जब राग–द्वेष के अंधकार से भाव मरण करकरके आकुल–व्याकुल होकर विषय–कषाय में छटपटा रहा था। ऐसे में आप जिनवाणी की संजीवनी को पी–पी कर वीतरागी निराकुल मार्ग का आनंद लेते हुए सबको इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा निरंतर देते हुए... स्वयं भी सत्पथ पर चल रहे थे और जगत को भी प्रेरणा दे रहे थे...

सच में जीवन तो संजीवजी ने जिया... बचपन से ही जिनशासन की छत्रछाया मिली, पाठशाला का सुयोग मिला, आदरणीय छोटे दादा का मार्गदर्शन मिला और गुरुदेवश्री के प्रभावना योग में पल्लवित होकर प्रभावना भी की... जिनवाणी को बिना किसी भेदभाव के सबको उपलब्ध कराया ... देश–विदेश में जैनसमाज के खंड–खंड समुदायों को अखंड चैतन्य का रस पूर्ण समर्पण भाव से पिलाया... सत्पथ के माध्यम से हजारों साधर्मियों को जिनशासन से जोड़ा।

उन्हें सिर्फ जिनवाणी सुनाने में रस था। किसको सुना रहे हैं, इसका विचार वे नहीं करते थे, उनके लिए सभी सभाएँ समान थी।

जीवन के अंतिम दिनों में भी वे विचलित नहीं हुए, दर्शन–पूजन, चिंतन–मनन में वही उत्साह देखने को मिला, यह तत्त्वज्ञान का ही सुफल है।

संस्कृति भाभी से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए कि किसतरह धैर्यपूर्वक सामनेवाले के विचार के अनुसार ही उसे अनुकूलता प्रदान की जाए...

पता नहीं ये परिवार किस मिट्टी का बना है? महाशोक में भी विवेक नहीं खोया, अरहन्त भैया ने रोते भी यही कहा भाईसाहब 48 मिनिट में करना है, ये जैसा चाहते थे, वैसा ही हो...और वैसा ही हुआ।

आत्मार्थी विद्वान संजीवजी गोधा

– आत्मार्थी कमल बोहरा, कोटा

आप सत्य स्वरूप जान चुके थे और सभी जीवों को बता रहे थे। आप तत्त्व की बरसातें कर रहे थे और सभी जीव उसमें न्हवन करने का प्रयास कर रहे थे। आपने बहुतों को जगाया है और वे जाग रहे हैं।

आपकी चैतन्य, वाटिका में सिंचन बराबर हो रही है और उसी तत्त्वज्ञान के जल से हमारी वाटिका को भी सिंच रहे थे। अब प्रयास हमको करना है, यह व्यर्थ न चला जायें।

आप अपने सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करें, इसी भावना के साथ।

सच पूछो तो सत्पथ का मैने सिर्फ ढांचा खड़ा किया था, उन्होंने उसमें प्राण फूंके.... निष्पक्ष व्यक्तित्व का पक्ष मिलना, मेरे जीवन काल का स्वर्णिम हिस्सा था। उनको खोने के बाद मेरे पास कुछ खोने को नहीं बचा है। .....किसी का विश्वास जीतना बहुत मुश्किल है, जिस युग में हम जी रहे हैं, खून के रिश्ते भी संदेह के घेरे में हैं, ऐसे समय में उन्होंने मेरे ऊपर विश्वास किया और अपना पूर्ण समर्थन देकर मुझे आत्मबल प्रदान किया। वे निर्दोष प्रभावना के पक्षधर थे, यह हम सबने प्रत्यक्ष देखा है, उनके उपकारों का ऋण कैसे चुकाऊँगा... अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर मुझे साथ रहने दिया, यही उनका मेरे ऊपर असीम वात्सल्य है ... वे सिखा कर चले गए कि विषम से विषम परिस्थितियों में समता रखना ही जीवन है, श्रुत के सान्निध्य में रहना ही उपाय है।

मूलाचार ग्रंथ में समाधिमरण का दूसरा नाम ही स्वाध्यायमरण बताया है और उन्होंने उसे सार्थक कर दिखाया। विद्वानों का वियोग शोक का नहीं, संकल्प का विषय है, सभी श्रुत के अभ्यास का संकल्प लें जीवन को निर्मल बनाएँ। यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि है।

कम समय में बहुत प्रभावित किया

– पण्डित महावीर पाटील, सांगली

डॉ. संजीवजी गोधा के स्वर्गवास समाचार से शायद ही कोई जैन व्यक्ति अनभिज्ञ रहा होगा। इस बात से सहज ही ज्ञात होता है कि वह समाज में कितनी गहराई से जुड़े थे।

डॉ. संजीवकुमारजी का इतना कम अवधि में सकल जैनसमाज पर प्रभाव हो जाने का सबसे बड़ा कारण पण्डित टोडरमलजी कृत मोक्षमार्ग प्रकाशक के प्रथम अध्याय पेज नंबर 14 वक्ता के स्वरूप में लिखा है - प्रथम तो वक्ता कैसा होना चाहिये? कि जो जैन सिद्धांत में दृढ़ हो; क्योंकि यदि स्वयं श्रद्धानी न हो तो औरों को श्रद्धानी कैसे करें? श्रोता तो स्वयं ही से हीन बुद्धि के धारक हैं। उन्हें किसी युक्ति द्वारा श्रद्धानी कैसे करें? और श्रद्धान ही धर्म का मूल है। तथा आगे लिखा पुनश्च वक्ता कैसा होना चाहिए? जिनको शास्त्र वांचकर आजीविका आदि लौकिक कार्य साधने की इच्छा न हो तथा श्रोताओं से वक्ता का पद ऊँचा हो - इन चार लाइनों का डॉ. संजीवजी के जीवन पर इतना प्रभाव रहा कि अंतिम क्षण तक इसका पालन किया। यही कारण है कि वे इतनी कम अवधि में सकल जैनसमाज पर आपना इतना महान प्रभाव डाल सके।

वर्तमान परिपेक्ष्य में इतने कम समय में जैन तत्त्वज्ञान को जनमानस में प्रभावित पद्धति से उतारने का काम डॉ. संजीवजी गोधा ही कर सके। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है देश-विदेश में आयोजित हो रहीं, उनकी श्रद्धांजलि सभाएँ, जिनमें समाज के प्रमुख मंडल, समिति, परिषदों के साथ ही त्यागी, व्रती, मुनिराजों द्वारा भी संजीवजी के तत्त्वज्ञान में योगदान की भरपूर चर्चा की जा रही है।

संजीवजी की प्रवचन-शैली पर थोड़ा विचार किया, तब एक बात दृष्टिगोचर हुई कि जैसे भगवान के समवसरण में भगवान की दिव्यध्वनि लोगों को अपनी-अपनी भाषाओं में सुनाई देती है। कुछ वैसे ही संजीवजी हिंदी भाषा में प्रवचन करते और अनेक भाषाओं के लोग उसे अपनी-अपनी भाषाओं में परिवर्तित कर लेते।

कुछ समय पहले संजीवजी से फोन पर बात हुई मैंने कहा कि देश-विदेश में जितने दैनिक श्रोता हैं।, उसमें सबसे अधिक संख्या दक्षिण भारत की है। इतना कहते ही संजीवजी ने कहा अभी दक्षिण से श्रोताओं में काफी वृद्धि हुई है और अभी दक्षिण के लिए निश्चित ही काम करना है।

डॉ. संजीवजी के तत्वप्रचार में योगदान की चर्चा पूरे दक्षिण जैनसमाज में तैरती रहेगी। अंत में हम सभी दक्षिण प्रांत के साधार्मियो की ओर से उन्हें भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित करता।

आचरण के सहज प्रेमी संजीवजी

– डॉ. दीपक वैद्य, जयपुर

भाई संजीवजी से मेरा परिचय वर्ष 1995 में हुआ। मैंने जब आयुर्वेदाचार्य करने के बाद टोडरमल स्मारक में शास्त्री की पढ़ाई के लिए प्रवेश लिया, तब समविचारी होने के कारण संजीवजी से सहज ही मित्रता हुई। जब यहाँ पर पण्डित किशनचंदजी, अलवर आये थे, तब वे उस समय जौहरी बाजार से उनके व्याख्यानों को सुनने के लिए आते थे; तब हम साथ में बैठकर सुनते थे और कुछ चर्चाएँ होती थीं।

जब भी हमारा जौहरी बाजार जाना हो तो वह साथ में मंदिर वगैरह कराने का उत्साह रखते थे। संजीवजी से हमारी आत्मीयता इतनी थी कि हर विषय पर खुलकर चर्चा होती थी। संजीवजी भाईसाहब चरणानुयोग का खूब पक्ष रखते थे और यथासंभव जीवन में पालन भी करते थे। औषधि लेने के लिए वह मेरे पास अनेकों बार आए। हमेशा अभक्ष्य एलोपैथी औषधि से बचने का उनका प्रयास रहता था। आप इतने अच्छे स्वाध्यायप्रेमी और कंठपाठ के माहिर थे कि दादा जब मंच पर से प्रवचन करते तब एक-एक उदाहरण उनकी ही शैली में नीचे से ही दादा के बोलने से पहले ही बोल देते थे।

जीवदया के प्रति उनकी सजगता का एक प्रसंग बारबार याद आ रहा है। बण्डा, सागर (म.प्र.) में संस्कार शिविर के समय मई की गर्मी में मैं कूलर नहीं चलाता था और वे मेरे स्थान पर ही रहने आए थे तो उन्होंने भी उस बात को समझकर निभा करके कूलर नहीं चलाया। बहुत बार हम वर्षों बाद भी मिलते थे; लेकिन आत्मीयता में ऐसी ऊर्जा थी, लगता ही नहीं था कि हमें मिले हुए काफी समय हो गया है। उनकी सरलता और सहजता तो देखने योग्य ही थी जिसका तो हर कोई कायल रहा ही है। उनके अनेकों संस्मरण मुझे तत्त्वज्ञान सन्मुख होने की निरंतर प्रेरणा देते रहेंगे।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

जोशीले अंदाज वाले संजीवजी

– अंकुर शास्त्री, भोपाल

अभी तो बड़े सलीके से सुन रहा था तुमको
जमाना, पर तुम्हीं सो गए दास्तां कहते-कहते

माँ जिनवाणी की पताका को देश-दुनिया में पूरी शान से लहराने का सफर, अभी बस शुरू ही तो किया था। जो हमें पसंद नहीं करते थे, उस पक्ष में भी आपने अपनी सरल, सुबोध शैली से खुद की मौजूदगी दर्ज कराकर शुद्ध तत्त्वज्ञान के ग्रहण का रास्ता अभी ही तो प्रशस्त किया था। अभी ही तो जागना शुरू हुई थी जन-जन की सुषुप्त मिथ्यात्व की कारा.. पर ये क्या?

सुन रहा था जमाना बड़े जागे मन से तुम्हें
और तुम ही चल दिए
बिना ठीक से अलविदा किए हमें।

आज भी याद है वो दिन शायद 4 अगस्त 2002 की तिथि रही होगी, जब टोडरमल स्मारक के अगस्त शिविर में पहली बार किसी 25-26 साल के युवा को बड़ी सरलता के साथ, छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करते हुए जन भाषा में बड़े धाराप्रवाह और जोशीले अंदाज में आप्तमीमांसा पर कक्षा लेते देखा था। मैंने तब स्मारक में प्रवेश ही लिया था, आगम अध्यात्म की विशेष समझ तो नहीं थी, पर आपके अंदाज ने मानो मुरीद ही बना लिया।

बाद में आपसे कई विषय अपने अध्ययनकाल के दौरान प्रथम बार पढ़ने मिले और जिस शैली में अबोध बालक को अपना कायल करने की क्षमता थी वो कालांतर में जन-जन की प्रिय हो गई, इसमें क्या आश्चर्य! बाद में मुझे गुरु शिष्य से बढ़कर मित्रवत् स्नेह आपका मिला। तत्त्वप्रचार, स्वाध्याय के लिए सतत प्रोत्साहन भी मिलता रहा; लेकिन अब भी बहुत कुछ ऐसा था, जो आपसे चर्चा करनी थी, आपसे पूछना था, आपसे सीखना था; पर नियति की विडंबना; कि ये वहीं पटाक्षेप करती है, जहाँ एक लंबी कहानी की आस होती है।

मुझे आज भी याद है टोडरमल स्मारक से हमारी विदाई के वक्त कही आपकी बात कि ये 50 वर्ष का भविष्य, हमारा भविष्य नहीं है; हमारा भविष्य तो है -

रहिए अनंतानंत काल, यथा तथा शिव परिणये

उस भविष्य के लिए तैयारी आप तो यकीनन उस भविष्य को संवारने सादि-अनंत काल के महासौख्य को पाने अनंत की यात्रा पर गतिमान हो गए और शीघ्र ही अपने पुरुषार्थ को प्रबल कर कुछ ही भवों में मुक्तिश्री के स्वामी होंगे; लेकिन आपकी अनुपस्थिति में तत्त्व प्रभावना के जगत में यहाँ जो शून्य उभरा है, वह एक लंबे अरसे तक भर पाना मुमकिन न होगा।

पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित, छोटे दादा द्वारा विस्तारित जैनदर्शन के महान सिद्धांत क्रमबद्धपर्याय को जीवनभर आपने सरलता से प्रचारित कर जन-जन के हृदय का हार बनाया और उसका विचारकर परिणामों में समता लाने का प्रयास भी करते हैं; लेकिन बारंबार विचारने पर भी नियति के कुछ सत्यों का हृदय में उतरना कठिन है।

भाईसाहब, कम वक्त में जो ज्यादा काम कर गए हैं, वह हम सबके लिए प्रेरक है और आपको देख हम कह सकते हैं कि **जिंदगी लंबी नहीं, बड़ी होना चाहिए।**

बेशक आपके जीवन के पल, हमारी आशा के अनुरूप जितने होने चाहिए थे, उतने न रहे हों, पर जो अवदान आपने इस छोटे से समय में दिया, वो अनमोल है और पूरा विश्वास है कि तत्त्व की जिस फुहार से आपने जन-जन को भिगोया है स्वयं भी उसमें भीगकर अपना प्रयोजनीय कार्य सिद्ध कर लिया है।

आपको चाहनेवाले तत्त्व के पिपासुजन भी इस वज्रपात के वक्त जिनवाणी माँ का ही अवलंबन लेंगे और स्वयं भी संसार, शरीर, भोगों की क्षणभंगुरता का विचारकर **झटति निज हित करो** के लिए पुरुषार्थी होंगे। भाव तो बहुत हैं, जो इस वक्त उमड़ रहे हैं, पर उन्हें क्रमबद्धरूप में शब्दों का लिबास देना नहीं बन पा रहा है, आखिर में बस इतना ही -

तुम्हारे यूं चले जाने से इक दरक पलट गया।
वो इक आसमां मानो, कहीं से यूं ही सरक गया।।

पुरुषार्थ की जागृतमूर्ति गोधाजी

– प्रद्युम्न फौजदार
मंत्री : तीर्थधाम सिद्धायतन, द्रोणगिरि

पुरुषार्थ की जागृतमूर्ति तत्त्वाभ्यासी डॉ. संजीवजी न केवल मुमुक्षुओं के प्रेरणास्रोत थे; बल्कि मित्रपक्ष और युवाओं के आइकॉन थे।

देश और दुनिया के चहेते आदरणीय डा. संजीवजी गोधा अब हमारे बीच नहीं हैं; लेकिन उन्होंने अपने हजारों प्रवचन में वस्तुतत्त्व की गहरी और सूक्ष्म व्याख्या कर जन-जन को आत्मसात् कराया है। आपका जीवन तो चलती-फिरती प्रेरणा था ही, मरण ने भी सुषुप्त चेतना को झकझोर कर रख दिया है।

डॉ. संजीवजी से मेरा परिचय म.प्र. के खड़ैरी गांव में स्वाध्याय मंदिर के किसी विशेष आयोजन में हुआ। उसके बाद तीर्थधाम सिद्धायतन में धार्मिक गाथा निलय के लोकार्पण समारोह के अवसर पर मिलना हुआ। आप अत्यन्त सहज, सरल प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व थे।

कितना जिया; यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, कैसे जिया; यह महत्त्वपूर्ण है। उनके पैर धरती पर टिके रहे और आसमान छू लिया। इस बात को कहने में अतिशयोक्ति नहीं है कि आपका देह परिवर्तन सल्लेखना पूर्वक हुआ है। डॉ. संजीवजी का देह परिवर्तन भव भ्रमण का अंतिम चरण है। विदेही होने की उनकी यात्रा शीघ्र पूरी होगी।

मेरे छात्र ही बने मेरे गुरू

– डॉ. महावीरप्रसाद जैन, उदयपुर

वर्तमान समय में संपूर्ण जैनसमाज में एक विशिष्ट स्थान बनानेवाले डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का संपर्क मुझसे मेरे छात्र के रूप में हुआ। सत्र 1989-1990 में घी वालों के रास्ते, बड़ा मंदिर में जैन पाठशाला चलती थी, उसमें यह नियमित आनेवाले छात्रों में थे।

1 जनवरी 1990 को नववर्ष पर मेरे द्वारा लिखित नाटक **भक्तों की पुकार** कराया गया था। उसमें आपने ज्ञानचंद का रोल किया था; क्योंकि इस नाटक में सबसे बड़ा रोल याद करने का यह ही था। इनकी स्मरण शक्ति अच्छी थी। ये शीघ्र याद कर लेते थे। इस कारण इन्हें यह रोल दिया गया था।

आपसे अंतिम मुलाकात हमारे मंदिर श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, नेमिनाथ जैन कॉलोनी, सेक्टर 3, उदयपुर के 8 से 10 सितम्बर 2022 में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में हुई। आपके द्वारा सुबह-शाम जो व्याख्यान हुए, जिससे अच्छी प्रभावना हुई।

पूरे जैनसमाज में सबसे ज्यादा सुने जानेवाले वक्ता होने पर भी आप अहंकार से दूर थे, सरल हृदयी के साथ बाह्य आचरण भी आपका श्रेष्ठ था। कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। ऐसे व्यक्तित्व के धनी पर मुझे गर्व है।

इतिहास बन गए हैं

– नितिनभाई शाह, मुम्बई

आदरणीय संजीवजी भाईसाहब से मेरा परिचय पहली बार 2010 के दशलक्षण पर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय में हुआ।

उनका विशेष-ज्ञान, समझाने की शैली और श्रोताओं से जुड़ने की शक्ति बिल्कुल अद्भुत थी। पहली बार मैंने जैन भूगोल की चर्चा सुनी और कई ऐसी बातें जानी जो पहले कभी नहीं सुनी थी। तब से मेरा उनके साथ जुड़ाव हो गया और मेरी जैनधर्म में रुचि और गहरी हो गई।

उनका सरल स्वभाव और साधर्मियों की ओर विशेष लगाव हमेशा याद रहेगा। उनका बस एक ही लक्ष्य था, घर-घर में तत्त्वज्ञान पहुँचाना, उनने देश-विदेश में इतने कम समय में तत्त्वज्ञान का संदेश पहुँचाया कि यह इतिहास बन गया।

मुझे उनका लाभ फिर कई बार मिला और ख़ास कर covid के समय में प्रतिदिन। वे मेरे गुरु हैं, मैं समझता हूँ कि यह सूरज ढल जाने से पूरे जैनसमाज का एक साथ अत्यन्त पाप का उदय आ गया है।

पण्डितजी तो निकट मोक्षगामी हैं - अब भी हम उनके बताए मार्ग पर नहीं चलेंगे तो हमसे बड़ा अभागा कोई नहीं है।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

संजीवजी सबके हैं...

– पण्डित संजय शास्त्री; सर्वोदय अहिंसा, जयपुर

कनाडा से आमंत्रण हो या खड़ेरी से, दशलक्षण का कार्यक्रम सिंगोली में हो या सिंगापुर में संजीवजी एक ही उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों के लिए स्वीकृति देते थे और जाते थे।

दिगम्बर-श्वेताम्बर क्या, तेरापंथ-बीसपंथ क्या, अन्य समाज के लोग भी उन्हें अपना मानते थे। यह हमने उनके वियोग के बाद सोशल मीडिया के माध्यम से देखा ही था। उस पर आलम ये कि वे सत्य प्रतिपादन से भी पीछे नहीं हटते थे।

उनके व्याख्यान-कक्षायें दिन में 3-4 बार चलती थीं। इसी बीच जब कोई शिविर-संगोष्ठी-विधान आदि के कार्यक्रम आते थे, तो वे श्रोताओं को सूचना देते हुए कहते थे कि अभी आप लोग उस शिविर या कार्यक्रम में जुड़ जाना। अपनावाला प्रवचन तो बाद में यूट्यूब पर सुन लेना।

कार्यक्रम सूचना की कुछ बानगी देखिए -

- अपने ज्ञानोदय, भोपाल का शिविर है अक्टूबर में। सभी को शामिल होना है उसमें।
- अपने जैनिज्म थिंकरवाले नीरजजी ऑनलाइन गोष्ठी करा रहे हैं, सभी को जुड़ना है।
- अपने मकरोनिया (सागर) की विद्वत्-संगोष्ठी है। सर्वोदय अहिंसा पर आयेगी। बढ़िया कार्यक्रम है। सभी जरूर लाभ लेवें।
- अपने शिखरजी के संकुल में वार्षिकोत्सव होनेवाला हैं, सभी उसका अवश्य लाभ लेवें।

वे सभी संस्थाओं, व्यक्तियों का नाम अपना शब्द जोड़कर ही लेते थे। अपना ज्ञानायतन, अपना सत्पथ, अपने सोनागिरवाले, अपने विदिशावाले प्रमोदजी, अपने दीपकराजजी, अपने साधर्मी आदि।

सर्वोदय अहिंसा द्वारा आयोजित कहान-समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के वे निर्देशक थे, पर उन्हें जहाँ से भी आमंत्रण मिला, वे गये। पहले इस लेख का शीर्षक सर्वोदयी संजीवजी सोचा था, पर लगा कि यह रखना भी उनकी विशालता को कम करना है। संजीवजी को सर्वोदय का, सत्पथ का या टोडरमल स्मारक का कहना उनके व्यक्तित्व को सीमित करना है। वे तो असीमित थे, सबके थे, सबके हैं।

जिनवाणी के सच्चे सपूत

– डॉ. सचिन्द्र शास्त्री

प्राचार्य : आदिनाथ विद्या निकेतन, मंगलायतन

आ. संजीवजी भाईसाहब निसंदेह संजीदा व्यवहार के अपने में मस्त रहने वाले व्यक्तित्व थे, उनका विकल्प वो स्वयं थे, अपनी धुन के पक्के थे। उन्होंने अल्पवय में ही जिनवाणी के सच्चे सपूतों में अपना नाम दर्ज करवा लिया है। उनने एकलव्य की भांति शिक्षा-दीक्षा लेकर तत्त्वज्ञान ग्रहण किया और चौगुनी क्षमता से श्रोताओं को भावविभोर करते हुए रसास्वादन कराया।

हम सभी उनके बतलाए मार्ग पर निरन्तर बढ़ें और वे भी अपने अंतिम लक्ष्य सिद्धत्व की प्राप्ति करें, इसी मंगल भावना से विराम.....

सहजता की प्रतिमूर्ति डॉ. संजीवजी गोधा

– डॉ. वीरचन्द्र जैन, शास्त्री

मेरे प्यारे भाईसाहब, अब यादों में रह गये। आपका जीवन एक सहज व्यक्तिव से भरा हुआ था।

एकबार की बात मुझे ध्यान है जब आप कुण्डलपुर आये थे, तब मैं शास्त्री कर रहा था। तब आपसे एक बार कहा कि भाईसाहब घर चलना है। कुछ समय बाद ही आपकी ट्रेन थी। फिर भी आप मेरे घर पर पधारे, उसके बाद कभी भी मिलना होता था, तो भाईसाहब बोलते, आपके घर कब चलना है। मुझे आज वो दिन बार-बार रूला देता है। पर आज धैर्य के साथ कहता हूँ कि उनके द्वारा दिया गया तत्त्वज्ञान खाली नहीं जायेगा।

हम जिंदगी भर आपके द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण कर तत्त्वज्ञान का प्रचार करते रहेंगे। इसके अलावा कुछ भी कहने में समर्थ नहीं हूँ।

छुट्टी वाला दिन आया ही नहीं

- डॉ टी.सी. जैन, भरतपुर

आदरणीय डॉ. संजीवजी गोधा से मेरा परिचय तो पुराना है; किन्तु विशेष लगाव मेरा पिछले 3-4 वर्ष से रहा, मैंने इनके मोक्षमार्ग प्रकाशक, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, संयमप्रकाश, समयसार एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर जो भी प्रवचन हुए हैं, वो आद्योपांत पूरे सुने हैं। डॉ. संजीवजी गोधा में ज्ञान एवं आचरण का सटीक तालमेल देखने को मिलता था, उनकी सरलता के दो संस्मरण लिख रहा हूँ।

पहिला करीब 2 वर्ष पहिले, मैंने उनके प्रवचन सुनते हुए, उनकी आवाज में फर्क तथा गले की खराबी महसूस की। तब मैंने कुलीजन तथा मिश्री उनके घर भिजवाई, उन्होंने ली और कहा कि ठीक है थोड़ा फर्क है। मुझे लगा कि वो बहुत ही सरल हृदयी तथा सहज हैं, बिना किसी मीन-मेख के जो कहा वो स्वीकार कर लिया।

दूसरी ये बात अभी दिसम्बर माह की हैं। जब वे मंगलायतन जा रहे थे तो मेरे पास अनिलजी शास्त्री के माध्यम से उनकी सूचना आयी कि भरतपुर में कोई हाडवैद्य है क्या? उनकी लिंगामेन्ट इन्जरी को दुरुस्त कराना है; क्योंकि ऐलोपेथी में उसका ईलाज संभव नहीं हो पा रहा है, मैंने अनिलजी को कहा कि अभी कोई जानकारी में नहीं है, ढूंढकर बताऊँगा। बाद में मेरे निकटवर्ती एक वैद्य - डॉ. अंकित चतुर्वेदी उनका इलाज करने के लिए तैयार हो गये, उनको इस इलाज का अनुभव था, वो गवर्मेन्ट सर्विस में हैं, उन्होंने छुट्टी लेकर जयपुर आकर उनके पैर को देखा तथा उसका ट्रीटमेंन्ट शुरू कर दिया। डॉ. अंकित ने मुझे बताया कि वो बहुत सहज भाव से इलाज करवाते हैं, उनका उन्होंने लीच (जॉक) थैरेपी से भी इलाज किया। उनके जॉक थैरेपी के दौरान ट्रीटमेंट कराते हुए भी उन्होंने बिना कोई हिले-डुले सहजता से प्रवचन किया।

दूसरी बार जब डॉ. अंकित उनका इलाज, टोडरमल स्मारक में कर रहे थे, तो मैं उनसे मिलने गया था, तब डॉ. अंकित ने उनसे कहा कि आप 15-20 दिन तक बाहर का प्रोग्राम मत बनाओ, उन्होंने कहा कि जून तक मैंने टाइम दे रखा है, उसके बाद 15-20 दिन तक लगातार यहाँ रह लूँगा तब वैद्यजी को आप छुट्टी लेकर बुला लेना, तब कम्पलीट इलाज करा लेंगे। पर अफसोस कि वो15-20 दिन की छुट्टी वाला दिन आ ही नहीं पाया ।

डॉ. संजीव गोधा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि

- डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन
अध्यक्ष : जैन अध्ययन केन्द्र, मुम्बई

माननीय डॉ. श्री संजीवजी गोधा जिनवाणी के सच्चे सपूत थे और तत्त्वप्रचार की उनकी गतिविधि वाकई सराहनीय है। वे अत्यन्त कर्मठ और समय के पाबन्द थे और तत्त्वप्रचार के लिए पूरी तरह समर्पित थे। यहाँ तक कि इसके लिए उन्होंने आजीविका का भी त्याग कर दिया था। बचपन से मैं उनको जानता था, वे अत्यन्त प्रतिभा के धनी थे। श्रोताओं को बांधकर रखनेवाली शैली में वे प्राय: दिन में तीन बार प्रवचन किया करते थे, जिन्हें हजारों तत्त्वपिपासु लोग लाइव सुनते थे।

उपदेश सिद्धांत रत्नमाला की 53वीं गाथा में लिखा है कि जो पुरुष शास्त्र स्वाध्याय आदि भले आचरण करनेवाले जीवों को सदा काल धर्म का आधार देता है और उनका निर्विघ्न शास्त्र स्वाध्याय होता रहे, ऐसी सामग्री का मेल मिलता रहता है, उस पुरुष का मूल्यांकन कल्पवृक्ष या चिंतामणि रत्न से भी नहीं हो सकता है। अर्थात् वह पुरुष उनसे भी महान है।

इस प्रसंग पर कहना चाहता हूँ कि मैंने भी उन्हें 2016 में प्रवचनार्थ अपने विश्वविद्यालय में आमंत्रित किया था, तब उन्होंने 13 एवं 14 सितम्बर को दो प्रवचनों में कालचक्र को समझाया था। सुननेवाले प्रत्येक श्रोता ने तब उन्हें बहुत सराहा था।

धीरे-धीरे मैंने भी उनसे प्रेरणा लेकर तीन लोक विषयक अध्ययन किया और तीन लोक पर संक्षिप्त पुस्तक की रचना भी की, मैंने अपनी पुस्तक प्रकाशन के पूर्व उनके अवलोकनार्थ भेजी और तत्पश्चात् भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से सन् 2019 में वह प्रकाशित हो गई थी। इसप्रकार उनकी प्रेरणा से मैंने भी तीन लोक विषय में गति प्राप्त की। उनसे सभी को प्रेरणा लेकर प्रतिदिन स्वाध्याय का नियम लेना चाहिए, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

सरलस्वभावी, निरभिमानी डॉ. संजीवकुमारजी गोधा

– श्रुतेश सातपुते शास्त्री, नागपुर

प्रबन्ध सम्पादक : वीतराग विज्ञान (मराठी)

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निधन का समाचार प्राप्त हुआ, तब मैं विद्यालय में अध्यापन कर रहा था। हाथ से पुस्तक छूट गई, मैं नि:शब्द हो गया, कुछ बोल ही नहीं पाया, विद्यार्थी पूछते रहे - सर क्या हुआ, क्या हुआ? पर..मैं नि:शब्द।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में सन् 1996 से 2000 तक के अध्ययन काल में शास्त्री प्रथम वर्ष के बाद नयचक्र क्रमबद्धपर्याय की कक्षा के माध्यम से संजीवजी से सम्पर्क में आया एवं अनेक कार्यों के माध्यम से मैं ऑफिस के सम्पूर्ण स्टाफ के सम्पर्क में था।

महाविद्यालय में मेरा अध्ययनकाल पूर्ण होने पर आ. अन्नाजी व डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के द्वारा वीतराग विज्ञान (मराठी) के प्रबंध संपादन का कार्यभार मुझे सौंपा गया। तब से ही आ. संजीवजी भाईसाहब के साथ प्रतिदिन कार्य करने का अवसर मिला। मासिक के प्रकाशन की कार्यप्रणाली संजीवजी भाईसाहब द्वारा ही सीखकर कार्य चलाता रहा। वीतराग विज्ञान का कवर डिजाइन, तब जयपुर प्रिन्टर्स प्रेस में तैयार किया जाता था, तब आ. संजीवजी के साथ अनेक बार वहाँ गया। शाम को देरी न हो, इसलिए कई बार भाईसाहब भोजन हेतु मुझे अपने घर लेकर जाते थे। अपनी विद्वत्ता अथवा हमारे अध्यापक होने का किंचितमात्र भी अभिमान उन्हें नहीं था।

मेरे नागपुर आने पर सत्पथ फाउण्डेशन के कार्य हेतु भी उनसे जुड़ने का अवसर मिला। तब भी उतने ही स्नेह और सद्भाव से मिलते और साथ में चर्चा और कार्य करते। वे सत्पथ पाठशाला में बच्चों को दिए **'भगवान बनने जन्मे हम'** के नारे को सार्थक करने की राह पर चल पड़े हैं; परन्तु हमें तो अनाथ कर गए। अब वह ओजस्वी, प्रेरणादायी वाणी कौन सुनाएगा?

अपनी भवयात्रा को शीघ्र विराम देकर निजात्मा में ही निवास करें, यही भावना...

लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. संजीव गोधा

– डॉ. शान्तिसागर शास्त्री, शिरट्टि

अतिथि व्याख्याता : जैनशास्त्र एवं प्राकृत विभाग

मेरे स्नेही डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एक ज्ञान-वैराग्य एवं अध्यात्म प्रधान लोकप्रिय प्रवचनकार थे। जब इनकी हिन्दी में कालचक्र किताब प्राप्त हुई तो मुझे अति आनन्द का अनुभव हुआ। यह कालचक्र का यथार्थ स्वरूप बताने वाली महत्त्वपूर्ण एवं एकमात्र अत्यन्त श्रमपूर्वक संग्रहित कृति है, जिसे हमारे विद्यार्थियों के लिए तथा विद्वानों के लिए भी बहुपयोगी जानकर मैंने मेरे प्यारे संजीवजी की अनुमति लिए बिना ही, उन्हें अश्चर्यचकित करने हेतु कालचक्र का कन्नड़ में सम्पादन व अनुवाद किया है। बाद में जब उन्हें यह कन्नड़ कालचक्र भेजी तो उसे देखकर, तत्त्वज्ञानरूपी गोदान के गोधा अर्थात् गौड़ा, मुखिया डॉ. गोधाजी को असीम आनन्द व आश्चर्य हुआ, बाद में इस कालचक्र के मलयालम् में अनुवाद को देखकर के तो वे गुणश्रेणी आनन्दित हुए।

इसके पश्चात् कन्नड़ कालचक्र को हमारे मैसूर विश्वविद्यानिलय से एवं मलयालम् कालचक्र को केरल के कोई प्रतिष्ठित शैक्षणिक केन्द्र से प्रकाशित करने का मेरा मन्तव्य मैंने उनके समक्ष व्यक्त किया तो वे गदगद हो उठे और उन्होंने सानन्द अनुमति दी।

प्रकाशन हेतु प्रयास भी चल रहा था; परन्तु तबतक वे हम सब को छोड़कर चले गये, तथापि इन किताबों का प्रकाशन कार्य निश्चित होगा, उनके इस स्वप्न को साकार करने का मैं पूर्ण प्रयत्न करूँगा। पर, वे कार्य सरकारी होने से उनकी प्रतीक्षा ही कर सकते हैं। यदि हमारे पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से वे प्रकाशित होगी तो, देश-विदेशों में जिनधर्म की प्रभावना करनेवाले संजीवजी की पुण्यतिथि के सुअवसर पर प्राप्त हमें प्राप्त हो सकती है।

वे जहाँ भी हों, जिनधर्म की महती भावना करें, साथ ही हम जैसे सभी संतप्त मानसों को शान्त करें। पुनश्च स्नेही डॉ. संजीवजी गोधा को नमन करते हुए....विराम।

प्रभावक पुण्यात्मा : आदरणीय संजीवजी

– पण्डित जितेन्द्र राठी, पुणे

जो चेतन के भीतर झाँका, उसने ही बस जीवन देखा।
बाकी ने तो खींची रे, परितप्त तटों पर रेखा।।

आदरणीय बाबू युगलजी की उक्त पंक्तियाँ नरभव की सार्थकता किसप्रकार की जा सकती है? इस बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है।

प्रत्येक व्यक्ति मनुष्य-पर्याय की दुर्लभता को समझकर निज शुद्धात्मा के लक्ष्य की ओर उन्मुख हो - इस परमोपकारी भावना से विगत अनेक वर्षों से संजीवजी भाईसाहब माँ जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में पूर्णत: सहजभाव से निरभिमान और निष्पक्ष होकर समर्पित थे। मानो, उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य ही निश्चित किया था कि अब रूकना नहीं, थमना नहीं, चाहे कुछ भी हो; किन्तु जिनवाणी और आत्मकल्याण की बात घर-घर पहुँचाना है।

और क्यों न हो? जिनधर्म आराधक, प्रभावक, प्रचारक पुण्यात्मा जीवों को संसार विकल्पों से अधिक धर्म और धर्मी जीवों के कल्याण के ही विकल्प ज्यादा आते हैं। और इसी कार्य पूर्ति हेतु वे सदैव तत्पर भी रहते थे। आज देश और दुनिया में शायद ही कोई जैनपरिवार ऐसा हो जो संजीवजी भाईसाहब से प्रत्यक्ष भले ही न हो, किन्तु परोक्षरूप से रुबरु न हुआ हो।

आप केवल जिनवाणी के प्रचारक ही नहीं, अपितु चारों ही अनुयोगों के ज्ञाता, न्यायविद्या के कुशल विशेषज्ञ, वीतरागी तत्त्वज्ञान को सहज और सरल भाषा में सबके हृदय में बसानेवाले, कोरोना काल में भी जिनवाणी के माध्यम से सबको सहारा देनेवाले, देश-विदेश और घर-घर में तत्त्वज्ञान की अलख जगानेवाले निर्दोष प्रभावक थे।

व्यक्तिगत रूप से कुछ कहूँ तो भाईसाहब के साथ विगत 24 वर्षों की न जाने कितनी स्मृतियाँ संजोयी हैं, जिनमें से क्या लिखें और क्या-क्या याद करें? स्मारक में प्रवेश होने पर शास्त्री प्रथम वर्ष से ही तत्त्वज्ञान पाठमाला, क्रमबद्धपर्याय, नयचक्र आदि विषयों का अध्यापन उन्होंने हमें कराया, अत: वे प्रथमत: तो मेरे गुरु हैं।

तत्पश्चात् 2003 से उनके साथ ही सहयोगी की भूमिका में वीतराग-विज्ञान और जैन पथप्रदर्शक के सह संपादकत्व का कार्य किया। जिनके माध्यम से वे मेरे लिए एक प्रेरक, मार्गदर्शक, अध्येता, प्रवचनकार, चिंतक, लेखक, संपादक और इन सबसे बढकर किसी भी कठिनाई में साथ खडे रहनेवाले सहारा थे।

भाईसाहब की कार्यकुशलता और कार्यतत्परता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रात्रिकालीन उनके प्रवचन के पश्चात् वे कम्प्यूटर और मोबाईल के द्वारा वीतराग विज्ञान और जैनपथप्रदर्शक का कार्य रात के 1-2 बजे तक मेरे साथ ऑनलाईन करते थे। इसी बीच परिवार और बच्चों के हालात पूछने से भी चूकते नहीं थे, यहीं उनकी सर्वमान्य व्यावहारिकता भी थी।

एक बार मेरे दोनों ही बालक कु. गाथा और चि. कलश ने कार्य के बीच में ही उनको फोन पर तत्त्वार्थसूत्रजी के दो अध्याय सुनाने चाहे, तो सारा काम छोडकर सुनने में मस्त हो गये और कहने लगे कि **''बहुत धर्मात्मा जीव हैं, बडे होशियार हैं, इनसे इसीप्रकार और भी तैयारी कराओ।''** देवलाली शिविर के समय और नया क्या याद किया? कहकर बच्चों के द्वारा कण्ठस्थ समयसार की 38 गाथाएँ सुनीं और खूब प्रशंसा करने लगे। यह यहाँ लिखने का उद्देश्य केवल इतना ही है कि भाईसाहब के लिये कोई बड़ा हो या छोटा सभी के प्रति उनका हृदय गुणग्राहकता और उसे धर्ममार्ग में आगे बढाने के लिये करनेवाला था।

आपके हृदय में वरिष्ठजनों के प्रति जितना सम्मान और आदर था, उतना ही प्यार छोटे बच्चों के प्रति भी था। और सहृदयी मित्र मिलते तो वे भी अपनी प्रसिद्धि और अन्तराष्ट्रियता भूलकर मित्रवत् हो जाते। उनसे मिलनेवाले किसी भी साधर्मी को ऐसा नहीं लगता था कि वह बहुत बडे, ख्यातिप्राप्त, प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। आदरणीय संजीवजी भाईसाहब ने अपने जीवन, व्यवहार और प्रवचनों के माध्यम से हम सबमें भेदविज्ञान की महत्ता और मनुष्यपर्याय की दुर्लभता, दोनों का ही स्वरूप उजागर कर दिया। निज आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त कर वे देहरूप से हम सबके बीच से विदा हो गये, किन्तु उनकी वाणी और तत्त्वचिंतन द्वारा वे चिरकाल तक समस्त जैन समाज के स्मरणीय और वंदनीय रहेंगे। तत्त्वज्ञान के यथार्थ श्रद्धान से उन्होंने अपना मार्ग मुक्तिवधु की प्राप्ति हेतु अग्रसर कर दिया। अब, यह तत्त्वज्ञान की धारा प्रवाहित करने में हम कोई कसर नहीं छोडेंगे, यही उनके प्रति यथार्थ भावांजलि है।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

अध्यात्मजगत के उदीयमान नक्षत्र : डॉ. संजीवकुमारजी गोधा

– प्रमोद जैन, विदिशा

अनादिकाल से भावमरण से चकचूर जीवों को, सोनगढ़ से संजीवनी बूटी लाकर, उन्हें जीवन प्रदान कर एवं जन्म–मरण के महादुःख से छुडाने में अपने प्रभावशाली प्रवचनों के द्वारा निमित्त बन रहे आदरणीय डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, अब हमारे बीच नहीं रहे।

पण्डितजी विलक्षण मेधा के धनी थे और अपने प्रवचन में अध्यात्म के गहन सिद्धांतों की चासनी लपेटकर पिला देने में उद्भट गोधाजी के उपकार को हम कभी भुला नहीं पायेंगे।

मात्र 47 वर्ष की अल्पवय में देश और विदेश में अपने असीम ज्ञान का डंका बजा कर ना जाने कितने लाखों लोगों के लिए आप प्रिय रोल माडल बन चुके थे।

आपका ज्ञान अगम्य, अनुपम और कथनशैली बहुत जादूभरी थी। पंचमकाल के इस नि:कृष्ट समय में प्रतिदिन दोनों समय चलनेवाली समवशरणवत् सभा का अब क्या होगा? आपके जाने से मानों हमारा जीवन अन्धकारमय हो गया और हम अपने को अनाथ–सा महसूस कर रहे हैं। वे तो जहाँ भी गए होंगे, अपने ज्ञान का प्रकाश बिखेरते रहेंगे।

मिलनसार व्यक्तित्व - एक संस्मरण

– आदीश–ममता जैन, दिल्ली

विश्वासनगर दिल्ली में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान के दौरान डॉ. संजीवजी गोधा को मैंने कहा आपका मोबाइल स्टैंड बहुत अच्छा है। संजीवजी ने मुस्कुरा कर कहा आपको पहुँच जाएगा। मजाक समझकर बात आई, हो गई और हम भूल गए। लगभग एक वर्ष बाद ब्राह्मी सुंदरी विद्या निकेतन, विश्वासनगर दिल्ली के कार्यक्रम में पण्डित श्री संजीवजी पधारे एवं प्रवचन उपरांत उन्होंने अपनी धर्मपत्नी संस्कृतिजी को इशारा किया और उन्होंने मोबाइल स्टैंड का पैकेट हमें भेंट किया, उनकी इस अदा पर हम (मैं और मेरी पत्नी ममता) फिदा हो गए।

उन्होंने कहा – यह स्टैंड भाभीजी को स्वाध्याय सभा संचालित करने में सहयोगार्थ उपहार जानना। यह था उनके मिलनसार व्यक्तित्व का एक उत्कृष्ट नमूना।

हमारी स्वाध्याय सभा सायंकाल 7:00 से 8:20 तक चलती है, उसके तुरंत बाद हम संजीवजी को यूट्यूब पर सुनते थे। लिंक खुलते ही, अपनी उपस्थिति दर्ज कराते ही, संजीवजी तुरंत बोलते थे आदीशजी भाईसाहब दिल्ली से। उनके इसी व्यक्तित्व के कारण देश–विदेश में हजारों लाखों व्यक्ति उनसे जुड़ते चले गए।।

जल्दी चले गए

– डॉ. महेन्द्र जैन मुकुर

जैनसमाज के अलावा अन्य समाजों के विद्वानों एवं जिज्ञासु श्रोताओं द्वारा सुने जानेवाले तथा भारत के साथ–साथ दुनिया के लगभग बीस से अधिक देशों में जिन्हें लोग सरल प्रवचनकार के रूप में जानते हों, सुनते हों, ऐसा व्यक्तित्व जिसने प्रवचनों के माध्यम से अध्यात्मजगत को तत्त्वज्ञान की गहरी दृष्टि से अवगत कराया हो, जो सरलता से तत्त्व को प्रतिपादित करने में महारथ हासिल रखते हों तथा सभी प्रकार के विवादों से परे, पंथ–संप्रदाय आदि से दूर जिनकी पहुँच सभी जगह हो, ऐसे अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का 47 वर्ष कीअल्पायु में असमय इस दुनिया को छोड़कर चले जाना वास्तव में विद्वत्जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

सरल शैली में कठिन से कठिन वस्तु को सरलकर वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में युवाओं को हृदयंगम कराने की उनकी विशेषता अपनेआप में अनूठी थी।

अल्पायु में निर्भीकता से सत्य कथन करने की अनूठी कला यही उनकी अद्वितीय विशेषता रही है।

सरल वक्तृत्व कला के धनी संजीवकुमारजी आप बहुत जल्दी चले गए। आपकी संप्रेषणमयी जिन व्याख्या को समझकर सभी आत्महित करें, ऐसी मंगल भावना के साथ श्रद्धासुमन अर्पित हैं ।

क्या कहूँ ...? क्या न कहूँ.....?

– पण्डित नगेश जैन, पिड़ावा
महामंत्री : कुंदकुंद प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन

आदरणीय डॉ. संजीवजी गोधा के देह-वियोग का समाचार सुनकर मन अत्यंत दुख और पीड़ा को महसूस कर रहा है। जैनजगत के एक दैदीप्यमान नक्षत्र, अध्यात्मगगन के ज्ञानसूर्य, ओजस्वी वक्ता, जिन्हें सुनने के लिए हजारों लोग प्रतिदिन लालायित रहते थे, ऐसे युवा विद्वान का असमय वियोग होना अत्यंत दुखदायक है। आपके वियोग से जैनसमाज के साथ-साथ मुमुक्षुसमाज को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति असंभव ही प्रतीत होती है।

मोक्षायतन, पिड़ावा के प्रति आपके परिवार का समर्पण जिस दिन निर्माण प्रारम्भ हुआ, उसी दिन से रहा है। आप मोक्षायतन के निर्देशक थे। आपकी गहरी भावनाएं इस संकुल से जुड़ी हुई थीं। आज आप हमारे बीच नहीं हैं, यह कहते हुए विश्वास भी नहीं कर पा रहा हूँ।

क्या कहूँ, क्या न कहूँ...? तत्त्वज्ञान की प्रभावना, आराधना में ही आपका सम्पूर्ण जीवन समर्पित था। आपने जीवन में जो तत्त्वज्ञान का रसास्वादन सभी को कराया है, उससे जो लोगों ने सीखा है, उससे कहीं ज्यादा आपका वियोग क्रमबद्धपर्याय और कालचक्र जैसे सिद्धान्तों का साक्षात् दिग्दर्शन करा गया। आपका जीवन तो प्रेरक रहा ही है; लेकिन आपकी मृत्यु का प्रसंग भी जनमानस को क्रमबद्धपर्याय का ज्ञान कराता रहेगा और निरंतर तत्त्वज्ञान की आराधना और प्रभावना हेतु प्रेरित करता रहेगा।

डिजिटल युग के टोडरमल : संजीवजी

– पण्डित शुद्धात्म जैन शास्त्री
निर्देशक : समयसार विद्यानिकेतन, ग्वालियर

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। आप अपने सहज, सरल स्वभाव व सरल शैली से जन-जन के हृदयहार बन गये थे। देश जब कोरोना महामारी के विषम काल में घरों में कैद था और महामारी से जन-जन भयभीत था। उस भयंकर काल में आप डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रयोग करते हुये घरों में कैद लोगों को ऑनलाइन माध्यम से ही तीन-तीन समय तत्त्वज्ञान के माध्यम से अमृत-रसायन का पान कराकर उनके चित्त में शांति प्रदान करने का अद्भुत कार्य कर रहे थे।

2019 में भी समयसार विद्यानिकेतन **आत्मायतन**, ग्वालियर के पथप्रदर्शक के रूप में आपसे निवेदन किया तो सहज स्वीकृति प्राप्त हुई, इसी के साथ समय-समय पर जानकारी भी लेते थे। आवश्यकतानुसार तन-मन-धन से सहयोग भी करते थे।

संजीवजी ने अल्प सयम में ही ऑनलाइन माध्यम से इतना काम किया है कि यदि उन्हें वर्तमान डिजिटल युग का टोडरमल कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। भले ही संजीवजी भौतिक शरीर से आज हमारे बीच नहीं हैं; लेकिन सकल जैनसमाज में घर-घर ऑनलाइन प्लेटफार्म पर तीन समय सुने जा रहे हैं।

इस अपेक्षा से विचार करें तो वह युगों-युगों तक हमारे बीच रहेंगे और हम उनके माध्यम से तत्त्वज्ञान को पीकर अपने-अपने भव का अन्त करेंगे।

हँसता हुआ नूरानी चेहरा

– पण्डित सोनू शास्त्री, सोनगढ़

अनेक आये और चले गये, आते रहेंगे और जाते रहेंगे। यह ही संसारचक्र है। कुछ नाम कर जाते हैं। कुछ का नाम ही बहुत कुछ कर जाता है। आदरणीय संजीवजी गोधा, यह नाम ही एक Brand बन गया और जगत के लिए बहुत कुछ कर गया। अल्पवय में अनेक उपाधि से विभूषित हुए, यह उनकी तत्त्वाराधना का ही सुफल है।

जिनवाणी के कठिन से कठिन विषय अपनी विशेष शैली से सरल, सुबोध भाषा में समझाना, यह कोई उनसे सीखें।

मेरे लिए सबसे उत्तम बात उनका हँसता हुआ नूरानी चेहरा, जो जिनवाणी के मर्म को समझाते हुए सभी को आकर्षित करता था और आगे भी उनकी वाणी सुननेवालों को करता रहेगा।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

संस्मरण में संजीवजी

– श्रीमन्त नेज शास्त्री, जयपुर

प्रबन्ध संपादक : वीतराग-विज्ञान कन्नड़

आज संपूर्ण जैनसमाज में ऐसा शायद ही कोई हो जो डॉ. संजीवजी को नहीं जानता हो, उन से अपरिचित हो। वे वर्तमान युग के बहुत बड़े प्रभावक और प्रसिद्ध विद्वान थे। चारों अनुयोगों के संतुलित अध्ययन से वे अपने स्वयं के, अपने परिवार के तथा उनके सान्निध्य में आए समाज के अनगिनत लोगों के कल्याण में निमित्त बने।

कोरोना काल में लोग दुकान, व्यापारादि बन्द करके जब घर में बैठे थे, वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें, उस समय आदरणीय डॉ. संजीवजी ने You Tube का सदुपयोग करते हुये सुबह, दोपहर, शाम और रात्रि लगातार स्वध्याय की परंपरा विशेषरूप से चालू रखी, जिससे हजारों लोग लाभान्वित हुए।

डॉ. संजीवजी का मात्र प्रवचनकार के रूप में ही नहीं; अपितु लेखन, संपादन, अध्यापन आदि सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इसके अलावा उनका सामाजिक व्यवहार, उनका स्वभाव, उनकी प्रवृत्ति भी अनुकरणीय थी। छोटे हों या बड़े हों, वे सभी के साथ मिलनसार और सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे। मैं 26-27 वर्ष से उनके संपर्क में हूँ। उनको मैंने अच्छे से देखा है, उनके साथ खूब बैठा हूँ और खूब चर्चायें की हैं। उनके व्यवहार से हमेशा ही Positive vibration मिला है। प्रेरित हुआ हूँ; उनका काम की प्रति जुझारुपन, एकाग्रता, लगन, श्रद्धा व अंदर का उत्साहपना सभी सीखने योग्य है, जिसका मैंने भी व्यक्तिगत अनुकरण किया। मुझको कभी कोई काम की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने बढचढकर व्यक्तिगत सहयोग किया है। मेरा ही नहीं, अनेक लोगों का तन-मन-धन से अथवा तत्त्वज्ञान से सभी तरह का सहयोग किया है। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं।

सबसे बड़ी आघातजनक घटना

– उल्लासभाई जोबालिया, मुम्बई

जैनसमाज के युवा मनस्वी डॉ. संजीवजी गोधा का देह-परिवर्तन हमारे लिए अपूरणीय क्षति है।

देश-विदेश में वीतरागी निराकुल मार्ग की प्रेरणा देनेवाले, जैनरत्न, अध्यात्मचक्रवर्ती आदि अनेक उपाधियों से विभूषित, हजारों साधर्मियों को सत्पथ पर लगानेवाले आ. संजीवजी गोधा का देह-परिवर्तन सबसे बड़ी आघातजनक घटना है।

हमें मोक्ष का मार्ग दिखलानेवाले, संयम और सदाचार का बोध देनेवाले और समय का सार समझानेवाले संजीवजी को शत-शत नमन। वे सदेह तो हमारे सामने नहीं है; पर अपने प्रवचनों के माध्यम से के सदा हमारे दिल में जीवंत रहेंगे।

इसका मुझे व्यक्तिगत दु:ख हैं, हम तो बस इतनी भावना भाते हैं कि वे भले ही हमारे बीच में नहीं है; परन्तु उन्होंने जो हमें दिया है और हमने उनको देख-देखकर जो सीखा है और उन्होंने हमें जो सिखाया है, उसको हम अपने जीवन में उतारने का पूरा प्रयास करें।

मनुष्यगति में मान कषाय की अधिकता मानी गयी है और समाज में देखा भी जाता है; परन्तु वे इसके अपवाद थे। से मैं निजी अनुभव से कह रहा हूँ, वे मान-अपमान में भेद भी नहीं जानते थे। ऐसे व्यक्ति के व्यक्तित्व के सामने सभी विभूतियाँ फीकी है, उनको समझना है या उनकी आदर्श जीवनशैली का राज जानना है तो उनके प्रवचनों को सुनो और आगामी प्रकाशित होने वाले उनके साहित्य को भी पढिए और अपना ज्ञान एवं परिणामों को निर्मल बनाइये। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जीवन में सहजता इसी से आयेगी। संजीवजी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने भव को सुधारने का प्रयास करें। इसी मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ।

सरलता की साक्षात मूर्ति

- पण्डित अनिल शास्त्री, जयपुर

सरल स्वभावी होए, ताके घर बहु सम्पदा...

उक्त पंक्ति पण्डित द्यानतरायजी ने दसलक्षण पर्व की पूजन में उत्तम आर्जव धर्म के अर्घ्य में लिखी है।

आर्जव धर्म का संबंध माया कषाय से रहित परिणामों की सरलता से है। और भाईसाहब भी सरलता की साक्षात मूर्ति ही थे। मैंने व्यक्तिगतरूप से उन्हें सभी कार्यों में सरल और सहज ही देखा है और जो सरल स्वभावी होते हैं, उनके घर पर धन-दौलत रूप सम्पदा की कमी नहीं होती है; भाईसाहब के यहाँ भी लौकिक रूप से किसी प्रकार की कोई कमी न थी। बाह्य सुख-सुविधायें पूर्ण थीं; ये तो लौकिक सम्पदा की बात हुई साथ ही पारलौकिक दृष्टिकोण से देखें तो यहाँ हमें वह अनंत गुण रूपी सम्पदा समझना चाहिए जो कि जगत में सभी के पास होती है; किंतु जगतजनों की दृष्टि उस ओर नहीं जाती है और वे बाह्य सम्पदा को प्राप्त करने में ही जीवन बर्बाद कर देते हैं; जबकि भाईसाहब ने उस आत्मिक अनंत गुण रूपी सम्पदा को प्राप्त ही नहीं किया; बल्कि अपनी वाणी से जन-जन को उस सम्पदा से परिचित भी कराया और वर्तमान काल को धन्य किया।

जिनका वर्तमान अच्छा होता है, उनका भविष्य भी अच्छा ही होता है। वर्तमान में भाईसाहब ने आत्मज्ञान और सम्यग्ज्ञान का ही प्रचार किया; आत्म ज्ञान + सम्यक् ज्ञान = केवलज्ञान। अर्थात् यह रास्ता केवलज्ञान की ओर ही जाता है। भाईसाहब भी निश्चित ही अल्पकाल में केवलज्ञान को प्राप्त करके मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

उनके जीवन से क्या प्रेरणा लें? उन्होंने अपने चारों तरफ ऐसा परिकर तैयार किया था, जहाँ धर्म से जुड़े लोग उनके चारों तरफ थे, चाहे उनके घर-परिवार के सदस्य हों, रिश्तेदार हों, मित्र हों, यहाँ तक कि अंतिम समय में उनका उपचार करनेवाले डॉ. आशीषजी मेहता भी धर्म से ही जुड़े हुए थे, जो उनसे यथासमय तत्त्वचर्चा भी किया करते थे।

अब हम विचार करें कि यदि अचानक ऐसी परिस्थिति हमारे साथ बन जाए तो क्या हमारे पास इसप्रकार का वातावरण उपलब्ध है? और इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यदि हमें ये सब मिल जायें तब भी हमारा आत्मबल और मनोबल इतना प्रबल हो कि हमें इन सबकी जरूरत ही न पड़े। हम स्वयं ही, स्वयं के बल से स्वयं में लीन होने की सामर्थ्य रखते हों। ज्ञानं ज्ञाने प्रतिष्ठितम्।

आदरणीय भाईसाहब ने तो स्वयं के बल से स्वयं में लीन होकर अपने जीवन को सार्थक कर लिया। अब हमें भी शीघ्र यही करना है।

यादें जयपुर की एवं संजीवजी की

- पण्डित दीपक अथणे,
(अंतरभारती विद्यालय, इचलकरंजी, महाराष्ट्र)

अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवजी गोधा के चले जाने की बात मन को स्वीकार ही नहीं हो रही है। संजीवजी के जाने से मुमुक्षु समाज ही नहीं; अपितु पूरे जैनसमाज को बहुत बड़ी क्षति पहुँची है।

पिछले 22 सालों से मैं संजीवजी के मार्गदर्शन में रहा हूँ। संजीवजी हमें क्रमबद्धपर्याय एवं नयचक्र पढ़ाते थे, उनकी शैली एवं स्वभाव से हम सभी स्नातक बहुत ही प्रभावित थे।

एक छोटा सा प्रसंग है- पिछले साल मई 2022 में हेरले में पाँच दिन का शिविर लगवाया था। वहाँ भाईसाहब और संस्कृति भाभी पूरे दिन के लिए पधारे थे। इतने सालों के बाद भी उन्होंने मुझे पहचान लिया और बोले - दीपक भाई कैसे हो? वे हमारे गुरु थे, मार्गदर्शक थे। फिर भी हम उन्हें आपना बड़े भाई के समान ही मानते थे।

मैंने जीवन में जो भी धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक क्षेत्र में उन्नति की है। वह सब स्मारक एवं संजीवजी की प्रेरणा से है। 26 नवम्बर 2022 को मेरी अंतिम बात उनके जन्मदिन पर हुई थी। उनका संदेश उनके शब्दों में - **यह जन्म उत्कृष्ट साधना के लिये मिला है, बचा हुआ शेष जीवन यथासंभव साधना और आराधना पूर्वक बीते। अब तक तो जीवन उत्कृष्ट रीति से बीत रहा है, आगे भी निर्विघ्न साधना होती रहे।** इसप्रकार उनके मुख से निरंतर शुद्ध आत्मा की बात ही निकलती थी।

ऐसे हम सभी के प्रिय, प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक, सरल-सहज स्वभावी, मृदुभाषी, हितैषी आ. संजीवजी शीघ्रातिशीघ्र संसारचक्र से पार होकर पंचमगति अर्थात् सिद्धगति प्राप्त करें...

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

अब तुम अमर भए, न मरेंगे.....

– अमित जैन 'अरिहंत'

अध्यात्मजगत के दैदीप्यमान नक्षत्र, अध्यात्मजगत के ज्ञानसूर्य, जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान, चारों अनुयोगों के कुशल ज्ञाता, अध्यात्मचक्रवर्ती, मुमुक्षु समाज के हृदयहार, जन–जन के लाडले, ओजस्वी वक्ता डॉ. संजीवजी गोधा का देहवियोग का समाचार अंतस्पटल पर जैसे ही आया, वैसे ही मानो मन टूट–सा गया हो, ऐसा महसूस हुआ। एक स्तब्धकारी घटना घट गई हो, ऐसा प्रतीत हुआ।

आज भी मन अपने अंतर से यह विश्वास नहीं कर पा रहा है कि डॉ. संजीवजी गोधा अब हमारे बीच नहीं रहे; परंतु यह सत्य है कि अब वह हमारे बीच नहीं रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन तत्त्वज्ञान की प्रभावना में ही समर्पित किया। ऐसा महसूस हो रहा है जैसे कि हमारा मार्गदर्शक चला गया और मार्गदर्शन रह गया, व्यक्ति चला गया और व्यक्तित्व रह गया।

मुझे भाईसाहब के साथ में उठने–बैठने और उनके मुखारविंद से तत्त्वज्ञान का रसपान करने का अवसर प्राप्त हुआ है। भाईसाहब की सबसे बड़ी विशेषता जो मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, वह यह थी कि भाईसाहब विद्वान तो बहुत बड़े थे; किंतु उनके अंदर विद्वत्ता का रंचमात्र भी अभिमान नहीं था।।

अभी दिसम्बर 2022 में अंतिम बार हमारा भाईसाहब से ज्ञानोदय, दीवानगंज, भोपाल में मिलना हुआ। तब भाईसाहब ने मुझसे पूँछा कि अमित आजकल क्या चल रहा है तुम्हारा? मैंने कहा **भाईसाब सागर में डी.पी.एस. में सर्विस करता हूँ।** भाईसाहब बोले – **वह तो ठीक है; लेकिन मैं स्वाध्याय की पूँछ रहा हूँ कि स्वाध्याय चल रहा है कि नहीं।** मेरा कहना है कि यदि स्वाध्याय नहीं चल रहा है तो स्वाध्याय करो; बाकी तो सब व्यवस्थाएँ अपनेआप चलती ही रहेंगी। इस प्रेरणा से ऐसा लगता है कि मानो वे हमें यह संदेश देना चाहते हों कि प्रचार–प्रसार आदि तो सब व्यवस्थाएँ हैं, मूल तो स्वाध्याय करो, जिससे कल्याण होना है। निश्चित ही भाईसाहब की प्रेरणा हमारे लिए एक संकल्प का कार्य करेगी।

भाईसाहब ने जितना अपने जीवन में क्रमबद्धपर्याय, कालचक्र आदि का ज्ञान प्रवचनों के द्वारा जन–जन को कराया है, उससे कहीं ज्यादा उन्होंने अपनी मृत्यु से भी सबको सिखा दिया कि यह संसार, शरीर, भोग ये वास्तव में नश्वर हैं, पता भी नहीं चलेगा कि मौत कब आ जाएगी; इसलिए जितना जल्दी हो, उतने जल्दी अपना कल्याण कर लेना चाहिए।

भाईसाहब के साथ बिताए हुए पल भुलाए नहीं जा सकते हैं, आपको याद करता हूँ तो आपका मुस्कुराता हुआ चेहरा याद आ जाता है, आपमें विद्वत्ता तो थी ही; लेकिन उसके साथ आपके जीवन में जो सरलता और सहजता थी, वह प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित किए बिना नहीं रहती थी।

आपने अपने जीवन में प्रवचनों के द्वारा जो तत्त्वज्ञान का अमृत घोला है, निसंदेह उस तत्त्वज्ञान से अपने आपको हमेशा के लिए आप अमर कर गए, आपके जो 28000 प्रवचन उपलब्ध हैं, वे हमेशा आपका अहसास कराते रहेंगे। निश्चित ही आप अल्पकाल में मोक्ष प्राप्त करेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है।

आपके प्रिय भजनों में से **अब हम अमर भए, न मरेंगे**, यह पंक्ति यही कहती हैं कि निश्चित ही आप अमर थे और अमर रहेंगे। देह का वियोग तो संयोग का वियोग है; बाकी आपने जो कार्य किया है, उस कार्य से आप सदा ही अमर रहेंगे। आपके प्रति मैं हृदय से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और सम्पूर्ण परिवार के प्रति हृदय की गहराइयों से संवेदना व्यक्त करता हूँ।

आपका असमय चले जाना हम सबको अधूरा कर जाना है, और वह आपके द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलकर ही पूर्ण होगा। आपका वियोग भी हमारे लिए एक प्रेरणा का कार्य करेगा और अपने कल्याण के प्रति जागरूक करेगा। आपके प्रति पुन:–पुन: अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपके मोक्षगमन की कामना करता हूँ।

संजीवजी का जाना जैसे भरी दोपहरी में सूर्य का अस्त होना

– हीराचन्द बैद, जयपुर

गुलाबी नगर की उर्वरक भूमि ने अनेक जैन विद्वत्रत्नों को जन्म दिया है। राजपुताना भूमि की माटी की सौंधी-सौंधी सुगन्ध को भारत ही नहीं; अपितु दुनियाभर में महकाने में युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने अहम् भूमिका निभाई है।

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी डॉ. संजीवजी गोधा की प्रवचन शैली बहुत ही सम्मोहक होने से हर आयु वर्ग का श्रोता एक बार उनको सुनकर उनका ही होकर रह जाता था। जैनधर्म के प्राथमिक ज्ञान से लेकर संयम प्रकाश, समयसार जैसे अनेक ग्रंथों व विषयों पर ऐसा प्रवचन करते थे कि कोई भी श्रोता पूरा सुने बिना बीच में नहीं छोड़ता था।

यूँ तो डॉ. संजीवकुमारजी गोधा को जयपुर में आयोजित अनेक गोष्ठियों व विधानों में सुना था; लेकिन कोरोना काल में तो प्रतिदिन सायं 8 बजे से यूट्यूब चैनल पर नियमित सुनने का अवसर मिला।

इन प्रवचनों के दौरान जयपुर की स्थापत्य कला, जैनमन्दिरों, विद्वानों एवं जयपुर की कला व संस्कृति के प्रसंग के दौरान मैं तुरन्त ही विषय सम्बन्धी सन्दर्भ सामग्री लिख कर पोस्ट करता तो तुरन्त ही संजीवजी मेरा नाम बोलकर कहते थे कि वो हीराचन्दजी बैद साहब ने बता भी दिया। नियमित रूप से मेरा नाम बोलने के कारण यूट्यूब पर सुननेवालों में मेरी भी पहचान बनी, इसके लिए डॉ. संजीवजी का तहे-दिल से शुक्रगुजार हूँ।

जयपुर जैनसमाज के अधिकांश धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों में मैं डॉ. संजीवजी के प्रवचनों का उल्लेख करता और कहता कि मेरे कहने पर ही सही एक बार संजीवजी को अवश्य सुनना।

जयपुर में जिन-जिन ने भी मेरे कहने से डॉ. संजीवजी को सुना फिर तो वो उनके नियमित श्रोता हो गये। इन श्रोताओं के जीवन में आये खासे बदलाव को मैंने स्वयं ने देखा व महसूस किया है।

स्मारक में जब भी सुबह डॉ. संजीवजी की कक्षा होती, तब वे पहले श्री सीमन्धर जिनालय में दर्शन करने आते, मेरे हाथ से गंधोदक लेकर हर्षित होते थे। सदैव हंसमुख रहनेवाले संजीवजी जब भी मिलते बहुत ही आत्मीयता से बात करते थे। उनके माध्यम से अभी बहुत-सा काम होना बाकी था पर वे अचानक ही हमारे बीच से चले गये, मानों दोपहर में ही सूरज अस्त हो गया हो। हम उनके कामों को थोडा बहुत भी आगे बढ़ा सकें, वही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वह दीवार बीच में नहीं होती

– पण्डित राजेशकुमार शास्त्री, जयपुर

सन 1995 में जब मैं शास्त्री अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रहा था, तब संजीवजी से टोडरमल स्मारक में मिलना-जुलना शुरू हुआ और यह सिलसिला निरंतर चलता रहा और गहराता गया।

पिछले 27 वर्षों में मैं और मेरा परिवार उनके बहुत नजदीक रहा। इस दौरान हम दोनों के परिवारों के बीच गहरे आत्मिक पारिवारिक संबंध बन गए और एक-दूसरे का ध्यान रखने लगे।

किसी शिविर में जाना हो, पंचकल्याणक में जाना हो, किसी की शादी में जाना हो अथवा किसी के मरण में जाना हो तो भी साथ-साथ जाते-आते थे। आप जयपुर निवासी थे और मैं बाहर से आकर यहाँ रह रहा था। ऐसी स्थिति में मुझे आगे बढ़ाने में और परिवार का ध्यान रखने में न केवल आपका; बल्कि पूरे परिवार का सहयोग निरंतर मिला है। आपके सहयोग वात्सल्य को मैं शब्दों में नहीं पिरो सकता हूँ, उसे तो मैं मात्र अनुभव कर रहा हूँ।

20 दिसंबर 2022 को पंडित टोडरमल स्मारक में अंतिम बार उनसे मिला। 17 फरवरी 2023 को संजीवजी अब नहीं रहे -यह खबर सुनी, तब मेरी स्थिति **काँटो तो खून नहीं** जैसी हो गई। मानों मृत्यु जीवन का सत्य है, अंतिम सत्य है, परम सत्य है; लेकिन मैं उसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था। संजीवजी के द्वारा तत्त्वज्ञान के प्रचार- प्रसार के क्षेत्र में अभूतपूर्व और बहुत तेजी से कार्य किया गया। जैसे कि उनको पता हो कि मेरे पास समय बहुत कम है।

आपने अपनी सीमाओं से बाहर निकल कर विश्व की जैन समाज में तत्त्वज्ञान की अलख जगाई है। संजीवजी अध्यात्मजगत के बेशकीमती कोहिनूर थे। उनके इस तरह से हमारे बीच में से चले जाना अध्यात्मजगत के धर्मपिपासुजनों के लिए एक भयंकर त्रासदी से कुछ कम नहीं है ।

मैंने संजीवजी के रूप में एक मित्र, सहयोगी, पड़ोसी, साथी, साधर्मी, साधक, आराधक, उपासक, प्रचारक, आत्मस्थ और समाधिस्थ को खो दिया है। आप यादों के रूप में हमेशा मेरे और मेरे परिवार के साथ रहेंगे।

अध्यात्मवेत्ता

डॉ. संजीवकुमार गोधा

मेरे मार्गदर्शक संजीवजी : कुछ स्मृतियाँ

– पण्डित ऋषभ शास्त्री, दिल्ली
असिस्टेन्ट प्रोफेसर; बैंगलोर, यूनिवर्सिटी

जो सत्य है वह ही कहें, क्या लाज भय आशा उन्हें?
जो विश्व के मिथ्यात्व पर वज्र से आघात दें।
अज्ञान से दहते जगत को देख करुणा से भरें,
वे जिनवचन संजीवनी से तृप्त जगती को करें

जिनधर्म को मनमें समा, प्रतिरोम में उभरा हुआ;
इस ओज से इस तेज से इस विश्व को मोहित किया।
हो वृद्ध या बालक क्या, दिन–रात क्या हो देश क्या?
प्रत्येक जन के चित्त में इस धर्म की महिमा जगा

जग को लगा निरपेक्ष फिर भी जग–प्रशंसा से सदा
जिनधर्म का सत्पुत्र ही उपकार ऐसा कर सका।
निश्चिन्त हूँ, जिनधर्म ऐसे वज्र–स्तंभों पर खड़ा;
गदगद हृदय संतुष्ट हो, उनके चरण में नत पड़ा।

ये पंक्तियाँ आदरणीय संजीवजी भाईसाहब की उपस्थिति में विश्वास नगर, दिल्ली में उनके प्रति समर्पित करने का अवसर मिला था। मैं क्या जानूं कि मेरी निश्चिन्तता को चीरते हुए वह वज्र–स्तम्भ इतनी जल्दी गिर पड़ेगा। टोडरमल महाविद्यालय के मेरे अध्ययनकाल में आदरणीय भाईसाहब से 3 वर्षों तक साक्षात् कक्षाओं का लाभ मिला, जिसने मेरे लिए सैद्धांतिक ज्ञान की नीव रखी। उनके तेज, सरलता, प्रसन्नता, दृढ़ता, वात्सल्य, ज्ञान, ओज आदि से हृदय मुग्ध था। किसी भी प्रश्न के समाधान हेतु, उनका होना ही मन को संतुष्ट कर देता था।

उन्होंने समाज को सर्वस्व दिया; किन्तु ऐसा लगता है कि समाज ने उनके साथ न्याय नहीं किया, उनके देहावसान के लगभग 2 माह पूर्व जब 23 दिसम्बर, 2023 को उनका बैंगलोर पधारना हुआ, मुझे भी उनके साथ वहाँ जाने का अवसर मिला। वहाँ रमेशजी भण्डारी के घर पर चर्चा होते हुए उपस्थितजनों के द्वारा उनसे कहा गया कि आप अपने पैर का ध्यान रखिए और कुछ समय बैंगलोर में रहकर ही इसका इलाज कीजिए। तब संजीवजी बोले कि समाज में हर कोई यह कहता है कि कहीं और मत जाओ, पर अपना प्रोग्राम कोई कैंसिल नहीं करता। यह सुनकर बड़ा खेद हुआ। समाज को मात्र अपने लाभ की पड़ी है; किन्तु उनके मुख पर जिनधर्म की सेवा की प्रसन्नता थी। ऐसे निस्पृह और प्रभावी सेवक सदियों में विरले ही होते हैं।

वे मेरे लिए एक गुरु, बड़े भ्राता, मित्र सदृश रहे। उन्होंने मुझे सदैव अपना विशेष वात्सल्य दिया, उनका वियोग भी मुझे धर्ममार्ग में और अधिक सावधान कर गया। ये सदैव मेरे आदर्श और मार्गदर्शक रहेंगे व मैं सदैव उनके उपकारों का ऋणी रहूँगा। वे अपने शेष भवों में अनेकों के कल्याण में निमित्त होते हुए, शीघ्र ही इस संसारचक्र से पार हों, ऐसी कामना है।

साथ बिताया समय याद रहेगा

– विवेक शास्त्री, इन्दौर

आदरणीय संजीवजी के लिये कुछ लिखता आज सूर्य के सामने दीपक दिखाने जैसा है। सोचा भी नहीं था कि आदरणीय भाईसाहब के बारे में श्रद्धांजलि लिखनी पड़ेगी। आदरणीय भाईसाहब के साथ मुझे कई बार कई जगह पर विधान, शिविर, पंचकल्याणक आदि कार्यक्रमों में रहने का अवसर मिला। उनके साथ बिताया समय जीवनभर याद रहेगा। आपका अगाध ज्ञान, सरलता, आपके विषयों का प्रस्तुतीकरण, तार्किकशक्ति, बेजोड़ प्रतिभा सम्पूर्ण जैनसमाज एवं सम्पूर्ण विश्व के लिये अद्भुत वरदान थी।

तत्त्वप्रचार का बेजोड़ कार्य अभी प्रारंभ ही हुआ था कि आपका चला जाना समाज में एक शून्यता उत्पन्न कर गया। मानव आपने संपूर्ण समाज को यह सिखा दिया था कि तत्त्वज्ञान के बिना जीवन जीने का कोई महत्त्व नहीं है। आपके साथ बिताए अनगिनत पलों की यादें मेरे दिल और दिमाग में दौड़ रहीं है, पर अभी बस इतना ही कहूँगा कि आपने जो तत्त्वज्ञान हमें दिया है, हम उसी के लिए जीवनभर समर्पित रहें, यही आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

आ. संजीवजी : एक श्रेष्ठ अध्यापक

- पण्डित संयम शास्त्री, नागपुर

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय बैच 37 का छात्र होने से, मैंने आ. भाईसाहब से शास्त्री प्रथम वर्ष में क्रमबद्धपर्याय और सर्वार्थसिद्धि तथा शास्त्री द्वितीय-तृतीय वर्ष में परमभावप्रकाशक नयचक्र पढ़ा। उन दिनों सुबह दो प्रवचन, दोपहर में दो कक्षाएँ और रात्रि में एक प्रवचन - इसप्रकार पाँच प्रवचन हुआ करते थे। तभी से बहुत आश्चर्य हुआ करता था कि वे इतनी हिम्मत और शक्ति कहाँ से लाते हैं, शायद इसे ही एक गहन अध्येता होना कहते हैं।

एक बार की बात है कि संजीवजी शास्त्री प्रथम वर्ष की कक्षा में सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ में अध्याय 2 सूत्र 8-9 के अन्तर्गत उपयोग विषय पढ़ा रहे थे। तब उन्होंने कहा था कि जब जिस ज्ञेय सम्बन्धी दर्शनोपयोग चलता है, तब ज्ञान गुण आगामी विषय के अवलोकन की तैयारी करता है तथा जब ज्ञानोपयोग चलता है, तब दर्शन गुण आगामी विषय के अवलोकन की तैयारी करता है; लेकिन इस बात को गले उतारना मुश्किल था, तो मैं आगम-प्रमाणों के साथ उनसे कक्षा में ही उलझ पड़ा, उन्होंने बिना अपना आपा खोए गम्भीरता का परिचय दिया और बाद में चर्चा करके उस विषय के सम्बन्ध में समुचित विचार करने हेतु आश्वासन दिया।

शायद इसे ही नीर-क्षीर विवेक कहते हैं; क्योंकि वे चाहते तो एक विद्यार्थी के विचार मज़ाक में टाल देते या विषय पर विचार करने के स्थान पर मेरे व्यवहार पर प्रहार कर सकते थे; किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ और सम्बन्ध बहुत प्रगाढ़ हुए।

प्रतिवर्ष शिक्षक-दिवस के दिन मैं अपने सभी गुरुओं को याद किया करता हूँ। हर वर्ष सर्वाधिक लम्बी चर्चा आ. संजीवजी से ही हुआ करती थी। वे बड़े प्रेम से बातें सुनते और हाल-चाल पूछा करते थे। शायद इसे ही प्रेम कहते हैं; क्योंकि उसमें फिक्र का ज़िक्र हुआ करता है।

आरोन पंचकल्याणक में मुझ जैसे जैन-दर्शन के नवोदित विद्यार्थी को आपने बड़े ही गर्व के साथ सम्मान दिया। शायद यही उनकी दूरदृष्टि थी। निश्चित तौर पर समयसार के ज्ञायक भाव का, प्रवचनसार के साम्यभाव का, नियमसार के निजभाव का, टोडरमलजी की भावभासना का, गुरुदेव की क्रमबद्धपर्याय का और दादा हुकमचन्द भारिल्ल की सहजता का प्रतिपादन करनेवाले आप दैदीप्यमान सूर्य थे, हैं और रहेंगे।

जग में थे पर जग से न्यारे थे

- पण्डित शुभम शास्त्री

प्राचार्य - ज्ञानोदय दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

ढाईद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद जब आदरणीय संजीवजी भाईसाहब के असाध्य रोग के बारे में सुना तो दिल गवाही ही नहीं दे रहा था कि ऐसा भी कुछ हो सकता है। कान यह सुनने को राजी ही नहीं था कि आपका रोग लाइलाज है और एक दिन अचानक ही यह समाचार आता है कि - संजीवजी नहीं रहे।

आदरणीय संजीवजी इस युग की एक अद्वितीय भेंट थे। उनकी सभाओं का समा मात्र बाहर में दिखने वाली ओजपूर्ण निडर-निर्भय करती हुई वाणी नहीं; बल्कि अन्तरंग की परिणति थी। उनकी अन्तिम भेंट में उन्होंने बताया था कि समाज की अपेक्षाएँ बहुत होती हैं, इसलिए मुझे कहीं बाहर जाकर प्रवचन करने से अच्छा अपने कमरे में एकान्त में बैठकर प्रवचन करना अच्छा लगता है।

उनके अनुयायी कुछ इस कदर थे, मानो रामानन्द सागर की रामायण चल रही हो। अध्यात्म प्रेमी जैनसमाज का ऐसा कोई घर नहीं था, जहाँ कोई न कोई आपका प्रशंसक न हो।

भव्य जीवों के भाग्य से आप आये और अपने में समाते हुए आप चले गये। हाँ! आप चले गये एक युग प्रभावक बनकर, सुषुप्त चेतना को झकझोरकर।

जिन संजीवजी को हम जानते थे, जिनको हमने सभाओं में निडरता के साथ, मोह की सेना से युद्ध करते देखा था, अपनी ओजस्वी शैली में सुषुप्त चेतना को जगाते हुए देखा था, जिसका एकमात्र संकल्प था कि प्राणी मात्र को मैं इस तत्त्वज्ञान से जोड़कर रहूँगा। प्राण जायें तो जायें, पर जिनधर्म रहना चाहिए...। वह संजीवजी गोधा, जब समय आया तो अपने में समा गये। जैसे बाहर में थे वैसे ही अन्दर में थे, जो तत्त्व की धारा उनकी वाणी से प्रसूत होती थी, वही तत्त्व की धारा उनके अन्तरंग को प्रक्षालित करती थी। जग में थे पर जग से न्यारे थे।

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

हमेशा याद रहेंगे संजीवजी भाईसाहब

– पण्डित गौरव उखलकर, जयपुर

आदरणीय संजीवजी भाईसाहब एक अच्छे विद्वान् अनेक विषयों के मर्मज्ञ थे। लाखों लोग उनके प्रवचनों के माध्यम से धर्म का श्रवण करते थे तथा मुमुक्षु समाज के एकमात्र विद्वान् जिनकी बातें समाज में सर्वमान्य होती थीं।

हमारे लिए तो वे दूसरे टोडरमलजी ही थे, उनकी मेरे जीवन में अनेक प्रसंगों में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं। शिष्य, अधिकारी और अभिभावक के रूप में उनके अनेक प्रेरणास्पद प्रसंग हैं।

विद्यार्थी जीवन में तो उन्होंने क्रमबद्ध और नयचक्र का अध्यापन कार्य कराया ही; परंतु उनकी एक खासियत थी कि उन्हें कक्षा में हर एक छात्र का नाम याद रहता था और वे नाम लेकर पूछते भी थे। कमजोर होशियार किसी प्रकार का भेदभाव उनके पास नहीं था।

कक्षा में अनेक ग्रंथों के उद्धरणों का उच्चारण ऐसे करते थे जैसा कि कंठस्थ ही हैं। उनकी छंद बोलने की स्टाइल को देखकर मुझे भी इसतरह अपनी योग्यता बनाने की प्रेरणा मिल जाती थी। जब भी कोई कार्यक्रम होता तो उसमें वे स्वाध्याय करने एवं कराने की प्रेरणा अवश्य देते थे।

अधिकारी के रूप में उनके विषय पूर्ण होने पर छात्रों की परीक्षाएँ लेने हेतु पेपर बनवाना और उनकी जांच करवाना। इस कार्य को करने के लिए उनके घर जाना, अंक टोटल करने में मेरा सहयोग करना और मुझे मैन रोड तक छुड़वाना। उनका यह मदद करने का स्वभाव मुझे हमेशा याद रहेगा। मेरी माताजी ने मुझे उनके जैसा बनने की प्रेरणा दी है।

अभिभावक के रूप में उनकी अपने पुत्र आर्जव के प्रति एक ही भावना रहती थी कि वह अच्छा विद्वान् बन जाएँ और विद्वान् को केंद्रित करके ही उनकी सारी बातें मेरे से होती थीं। हम सब उनके जैसे तो नहीं बन सकते; लेकिन उनके जैसा बनने का प्रयास करें, यही उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

पहला विकल्प संजीव गोधा

– पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर

डॉ. संजीवजी गोधा के साथ कार्यक्रमों में साथ में जाने पर अपनेआप में एक गौरव की अनुभूति होती थी। भाईसाहब की सहजता, सरलता, सादगी, गुणग्राहकता, मधुरता हमें प्रभावना के लिए प्रेरित करती है।

आप आज भी अपने ज्ञान के रूप में हमारे बीच विद्यमान हैं। आपने हमें बोलना सिखाया, प्रवचन करना सिखाया, जयपुर में होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम में साथ में ले जाकर समाज को पढ़ना सिखाया। मुझे तो आज भी ऐसा ही लगता है कि अगले कार्यक्रम में ही हम भाईसाहब के साथ बैठकर संचालन करेंगे। भाईसाहब हमें जीवन जीने की दिशा प्रदान कर गए। किशनगढ़ में होने वाले कार्यक्रमों में वह मुझे साथ ले जाते थे। इस दौरान जो चर्चाएँ होती थी, वह अद्भुत थी।

आपने जो समाज को प्रदान किया वह अद्वितीय है। कोविट जैसी महामारी ने भी आपके प्रवचनों के सामने घुटने टेक दिए थे। आपके प्रवचनों ने लोगो को महामारी का अहसास ही नहीं होने दिया। इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनिया में जो तत्त्व की प्रभावना की है, वह अपने आप में बेजोड़ है। अब कोई इंटरनेट के माध्यम से सरल, सुबोध, निष्पक्ष धर्म का स्वरूप समझना चाहेगा तो उसे सबसे पहला विकल्प यदि कोई प्राप्त होगा तो वह होगा, डॉ. संजीव गोधा। क्योंकि उन्होंने यूट्यूब पर जो सुव्यस्थित प्रवचन का एक विशाल संकलन किया है, वह किसी ग्रन्थ छपाने से कम नहीं है। आने वाले समय में अनेक लोगों के भव का अभाव करने में वह निमित्त बनेगा।

प्रभावना

भाईसाहब का कल्पना से परे स्नेह

– श्रीमती प्रीति जैन, जयपुर

भाईसाहब के साथ मेरा एक संस्मरण मेरी स्मृति में आता है और आज भी मन विस्मय से भर जाता है।

बात है फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व 2021 की। इस अवसर पर अलवर मुमुक्षु समाज द्वारा श्री कहान समयसार शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत श्री समयसार मण्डल विधान का आयोजन किया गया था। आदरणीय भाईसाहब के निर्देशन में यह विधान हो रहा था। हमारा परम सौभाग्य था कि हम भी भाईसाहब के साथ ही जयपुर से अलवर जा रहे थे। भाईसाहब तो वहाँ रुके, पर हम एक दिन बाद लौट आये। अजितजी भाईसाहब के घर से शाम को जब हम निकल रहे थे। वहीं भाईसाहब उकाली ले रहे थे, हमने जय जिनेन्द्र किया और जाने के लिए बाहर आ रहे थे। तभी हमने देखा कि भाईसाहब पीछे से एक घूँट उकाली लेकर ही, कुल्ला कर हमें विदा करने के लिए बाहर आ गये, उनका यह कल्पना से परे स्नेह देख हम दंग रह गए। उन्होंने ऐसा नहीं सोचा कि पूरी उकाली लेकर जाऊँ या क्यों ही जाऊँ, कल ही तो साथ में आये थे और ये लोग जयपुर ही तो जा रहे हैं, बाद में तो रोजाना ही मिलते रहेंगे।

वो तो सहज ही बाहर आये और हमारे रवाना होने के बाद ही वहाँ से वापस गये। वो पल सोचकर आज भी मन विस्मय से भर जाता है कि कोई इतना सरल कैसे हो सकता है। भाईसाहब का ऐसा स्नेह मात्र हमारे प्रति नहीं; अपितु सभी सदस्यों के प्रति रहा करता था।

मेरी उड़ान के जीवित पंख - संजीवजी

– पण्डित सोमिल जैन, दलपतपुर

बात 2019 के अगस्त शिविर की है। आज से 4 साल पहले मैं नया नवेला लेखक एक महान व्यक्तित्व को अपना नमूना दिखाने अपने होस्टल जयपुर शिविर में पहुँचा था। तमन्ना थी कि अपना लिखा उस व्यक्तित्व को दिखाऊँ, जिससे यह सब कुछ सीखा था। मुझे पता था ये सागर को बूंद, सूरज को दीपक दिखाने जैसा है; लेकिन बालक बुद्धि मैं क्या करता! शिविर में यहाँ-वहाँ उनसे टकराया और बोला भी कि भाईसाब मैंने बुक लिखी है आपको देना है कब आ जाऊँ? तो उनके मुंह से सहज ही निकलता **कभी भी ले आना**।

विद्यार्थियों के लिए हमेशा उपलब्ध रहने के कारण ही शायद आज सारे विद्यार्थी उनके जाने से टूट चुके हैं। मैंने उनको बच्चों से कभी ये कहते नहीं सुना कि **मेरे पास टाइम नहीं है।** ऐसा व्यक्तित्व जो हमेशा तत्त्वज्ञान के लिए समर्पित रहा, उसका बखान इन चंद शब्दों से नहीं हो सकता।

आखिरकार शिविर की एक शाम मैंने उनको देखा और अपनी किताब लेकर बिना संकोच किए उनके पास पहुँच गया। ये वो पल था जब उन्होंने किताब हाथ में लेकर बार-बार उसे देखा फिर मुझे देखा और कंधे से अपनी तरफ खींचकर शाबाशी दी, वहीं खड़ी संस्कृति भाभी ने भी किताब की सराहना करके मेरा उत्साह दुगुना कर दिया। भले मेरी किताब हिंदी उपन्यास के रूप में थी जो धार्मिक नहीं थी; लेकिन विद्यार्थियों की प्रतिभा के कद्रदान भाईसाब हमेशा थे। अन्त में भाईसाब से ये सुनकर कि **मैं ये किताब जरूर पढ़ूंगा।** मैं आत्मविश्वास के आखिरी लेविल पर पहुँच गया और किताब से बड़ी उपलब्धि मेरे लिए उनकी शाबाशी हो गई। बस यही उनसे आखिरी मुलाकात थी।

जब भाईसाहब यहाँ ज्ञानोदय आये तो बड़ी खुशी हुई थी कि उनसे मिलूँगा; लेकिन जिस दिन मैं ज्ञानोदय पहुँचा, वो इंदौर निकल चुके थे तब ऐसा लगा जैसे मेरी सारी खुशी सुमेरु पर्वत से नीचे गिरकर धराशाई हो गई हो।

खुशकिस्मत हूँ कि मैं उनका शिष्य था और ताउम्र रहूँगा; क्योंकि उनकी बातें, उनकी यादें और उनके साथ की एक सुंदर तस्वीर मेरे टूटे आत्म विश्वास को जगाती रहेंगी।

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

अध्यात्मजगत के दैदीप्यमान दिवाकर डॉ. संजीव गोधा

– डॉ. सतीशकुमार जैन
अध्यापक : दिल्ली पब्लिक स्कूल, अलीगढ़

जैनदर्शन के अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त मेधावी विद्वान, मेरे अनुज, आदरणीय संजीवजी गोधा जैनसमाज के समकालीन विद्वानों में अग्रगण्य हैं।

जब मैं 1991 में शास्त्री कक्षा में अध्ययनरत था, तब उन्होंने मेरे सीनियर सुनीलजी नाके, शास्त्री की पाठशाला में बालबोध, वीतराग विज्ञान पढ़ते हुए तत्त्वज्ञान के ऐसे संस्कार सीखे, जिसके चलते लौकिक शिक्षा के साथ भवतापहारी आध्यात्मिक शिक्षा जीवन का ध्येय बन गई।

जैनागम के गूढ़तम सिद्धांतों, आगम के चारों अनुयोगों, न्याय, क्रमबद्धपर्याय आदि का अध्ययन कर पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभावना योग में, अध्यात्मरस से भीगकर, अल्पवय में ही तेजगति से बढ़ते हुए, ऐसे विद्वान बन गए कि जनसामान्य के हृदय में उतर गए। जिनशासन की प्रभावना करते हुए आपने जिनशासन के सिद्धांतों को सीखा, सिखाया और आखिर में उसका प्रेक्टिकल भी कर दिखाया।

सकारात्मक सोच के साथ युवावर्ग व बच्चों को धर्म से जोड़ना वर्तमान-युग की आवश्यकता ही नहीं; अपितु अनिवार्यता है, जिसमें आपको महारथ हासिल थी। वैराग्यमयी जीवन और उच्च विचार आपके जीवन के अभिन्न अंग थे। अंतरंग में आध्यात्मिक रुचि और आत्महित की मुख्यता से स्वाध्याय व समाधि में रत रहते थे।

जिनधर्म को माननेवाला ऐसा कोई वर्ग बाकी न रहा होगा, जो संजीवजी की संजीवनी से प्रभावित न हुआ हो। वचनों से माधुर्य, चिंतन से छलकती आध्यात्मिकता, लेखनी से उभरते लेख, जटिल वैचारिक गुत्थियों को सरल शैली में समझाने की अद्भुत क्षमता को देखकर समाज की, आप पर अटूट श्रद्धा हो गई और लोग अति चाव से आपको सुनने लगे।

आपका व्यक्तित्व सहज और चुम्बकीय है। सहज इसलिए कि आपके साथ चाहे सैल्फी लेना हो या शंका समाधान करना हो तो सहज स्वीकृति मिल जाती थी और चुम्बकीय इसलिए कि जो आपसे एक बार मिल लेता है वह आपकी ओर खिंचा चला आता है।

वर्चुअल दुनिया पर राज करने वाले संजीवजी ने जिनधर्म की पताका को यूट्यूब, फेसबुक के माध्यम से हजारों नवयुवकों, वृद्धों को तत्त्वज्ञान का रसास्वादन कराया। जिन-अध्यात्म का शंखनाद आपके द्वारा बनाए गए यूट्यूब चैनल से होता रहेगा। इन महान उपकारों के लिए जितना अभिनंदन किया जाए उतना कम ही है।

आदरणीय श्री संजीवजी गोधा ने कड़ी मेहनत, दूरदृष्टि, पक्के इरादे व अनुशासन से हर क्षेत्र में शून्य से शिखर तक की सफल यात्रा की। जिनवाणी की सेवा के लिए आपको सदैव स्मरण किया जायेगा। आप अल्पकाल में मुक्ति वधु को प्राप्त करेंगे। ऐसी मंगल कामना के साथ विनम्र श्रद्धांजलि।

एक मैं और एक आप (संजीव जी):

– कृतिका अरिहंत जैन, सिंगापुर

एक मैं जो आज आत्मा से भिन्न शरीर को अभिन्न माने बैठी हूँ, और एक आप जो अपने चेतन तत्त्व को शरीर से पृथक माने बैठे थे।

एक मैं जो संयोगों से सुखी होने का प्रयास कर रही हूँ, और एक आप जो संयोगों के बीच भी अपने ही आनंद रस का पान कर सुखी हो रहे थे। एक मैं जो मिथ्यात्व दूर करने के असहज उपाय कर रही हूँ, और एक आप जो दादा की सहजता का चिंतवन कर भव सागर से पीर होने की पूर्ण तैयारी कर चुके थे ।

एक मैं जो आज भी आपके वियोग से अत्यंत दुखी हूँ, और एक आप जो स्वयं वैरागी की भाँति सबको वैराग्य का पाठ पढ़ा रहे थे। एक मैं जो अपनी प्रभुता भूल पर-द्रव्य से सुख की कल्पना कर रही हूँ, और एक आप जो निज प्रभुता को पहचान स्वयं में लीन हो रहे थे।

एक मैं और एक आप का सफ़र बस यही ख़त्म हो जाये और आप सम मैं भी बन जाऊँ – यही मेरी भावना है।

प्रभावना

आपके बहुत उपकार हैं।

– अदनी शाह, भरूच

आपके लिए तो वैसे हमारे पास कोई शब्द ही नहीं है कि आपने हम पर क्या उपकार किया है; लेकिन फिर भी अपनी भावनाओं को थोड़ा सा व्यक्त कर रही हूँ।

जब से लॉकडाउन हुआ तब मैं आपके परिचय में आई तब से लेकर आज तक आपके प्रवचन को सुनती आई हूँ। तत्त्व में रुचि भी मुझे आपके प्रवचन के माध्यम से आई।

जितना प्रेम सब सधर्मी को आपके प्रति था उतना ही प्रेम आपको भी सभी साधर्मी के प्रति था। इसलिए तो आप भी प्रतिदिन सारी समस्याओं को सुलझाकर समय पर आ जाया करते थे और जैनधर्म के प्रचार का जोश, वात्सल्य, सरल स्वभाव आपकी तरफ किसी भी साधर्मी को चुंबक की तरह आकर्षित करता था। आपको live सुनने की हमारी प्रबल इच्छा हमें भोपाल शिविर में खींच लाई। हमने आपके साथ ३ दिन बिताए जो हम कभी नहीं भूल पाएंगे।

आपने जीते जी तो सबको बहुत कुछ सिखाया; लेकिन जाते-जाते भी बहुत कुछ सिखा गए। आपने तो अपना काम कर लिया है और जहाँ है, वहाँ भी करते होंगे; लेकिन हमें बहुत कुछ करना बाकी है। हम भी आपकी बताई राह पर जरूर चलेंगे। आपने हमारे लिए जो मेहनत दिखाई है, उसे अवश्य ही सार्थक करेंगे।

जिनवाणी के अटूट श्रद्धानी

– राजेन्द्र कोचर

श्री गोधाजी को मैं नियमित सुनता हूँ, उनका जिनवाणी के प्रति जो श्रद्धाभाव था, वह अटूट था। उनका समझाने का लहजा बहुत ही सरल एवं स्पष्ट था, जिससे आमजन को जैनधर्म एवं अपनी आत्मा के प्रति रुचि बढ़ती ही जाती थी। मैं तो एक धनवान व्यक्ति हूँ। मेरी आत्मा के अलावा सब तुच्छ संपत्ति है, मुझे बहुत सीखने को मिला; परंतु नियति को जो मंजूर होता है, वही होता है।

कहा भी है – **जो जो देखी, वीतराग ने,सो सो होसी वीरा रे,**
अनहोनी कबहूँ न होसी,काहे होत अधीरा रे।

हमें गोधाजी ने वह अमृत पिलाया है कि हम उसे कभी भूल नहीं सकते और यदि भूल गए तो ऐसा समझेंगे कि मैं आज तक समझा ही नहीं। अंत में मैं एक हूँ, शुद्ध हूँ, अनादि अनिधन हूँ, मेरा जो होना है, वह निश्चित है। तीन लोक, तीन काल में मेरा कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। अच्छे विचार, अच्छे भाव रखें, सभी का कल्याण होगा। इसी भावना के साथ मेरी व मेरे परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

एक अलग ही छवि के व्यक्ति थे

– स्तुति पीयूष जैन, जयपुर

संजीव भैया मुमुक्षु समाज के एक हीरो से कम नहीं थे। मैं उन्हें 20 साल से देखती आ रही हूँ। वे हमेशा से ही ऐसे शांत, सहज सरल स्वभाव वाले व्यक्ति थे। वे मुझे अपने परिवार के ही एक सदस्य जैसे लगते थे; क्योंकि वे जब भी मेरे घर आते थे तो मुझे कोई बाहर का बडा विद्वान आया है ऐसा महसूस ही नहीं होता था। भैया ने सभी को प्रवचन के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाई और अंत समय में उस पर्याय को कैसे सार्थक करें यह प्रेरणा भी दी।

उनके देह परिवर्तन से मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे परिवार के ही किसी सदस्य का वियोग हो गया हो। वे जाते-जाते मुझे यह प्रेरणा दे गए कि सिर्फ एक स्वाध्याय ही शरण है और अपना अमूल्य जीवन अपने भव विराम में ही लगे। मेरा शेष जीवन तत्त्व आराधना में ही बीते, यही संजीव भैया को मेरी ओर से श्रद्धांजलि है।

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

कम समय में बहुत कुछ सीखा

– अश्वनी जैन (दिल्ली/जयपुर)

आज वह कार्य करना पड़ रहा है, जिसको करने की कभी जीवन में कल्पना भी नहीं की थी, आदरणीय संजीव गोधाजी के लिए श्रद्धांजलि नोट लिखना.. कल्पना करके ही कम्पन हो जाती है। संजीवजी मेरे बड़े भाई, मेरे मार्गदर्शक, मेरे सलाहकार और जीवन का एक अभिन्न अंग बन गए थे। यूँ तो मैं उनसे सिर्फ सवा दो साल पहले ही मिला था, पर इतने कम समय में ही उनसे इतना प्यार, वात्सल्य और अपनापन मिला कि मैं अपने परिवार सहित दिल्ली से जयपुर शिफ्ट हो गया।

उनके साथ मुझे धर्म-प्रभावना की यात्रा पर जाने का सौभाग्य भी मिला, जिसमें उनके जीवन को और करीब से जानने का अवसर मिला, मैंने अनुभव किया कि वह व्यक्तित्व, जिनके दर्शनमात्र से लोग अपने को सौभाग्यशाली समझते थे। वे सरल, निस्पृह और मिलनसार व्यक्ति थे।

उनकी धर्म प्रभावना के बारे में तो मैं क्या लिखूँ, उस बारे में तो जैनसमाज का प्रत्येक वर्ग स्वयं साक्षी है ही, उनके साथ शास्त्र भेजने आदि का कार्य संभालने का सुअवसर मिला तो मैंने अनुभव किया कि प्रत्येक सुननेवाले को शास्त्र मिले, इसके लिए उनकी कितनी भावना रहती थी। कितने लोग मुझसे दान कहाँ कर सकते हैं आदि के बारे पूछते तो मैं आगे भाईसाहब से पूछता तो उनका निस्वार्थ और इंडिफरेंट नेचर देख कर मैं दंग रह जाता, हमेशा वो मुझे यही कहते कि हमें इन चक्करों में पड़ना ही नहीं, जिसको जहाँ करना है स्वयं कर लेगा। उन्होंने न कभी कोई धन इकट्ठा करने की योजना बनाई और न कभी किसी योजना के लिए किसी से बोला, पूरा उपयोग नि:स्वार्थ धर्म प्रभावना में लगाया, जिसका ही यह फल है कि इतनी अभूतपूर्व प्रभावना दुनियाभर में हो पाई।

उनके जीवन के अंतिम समय में भी मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला बिल्कुल आकुलता रहित, शांत परिणामों में देह त्याग कर उनको जाते देख मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। अपने जीवन को उनके दिखाए मार्ग पर आगे बढ़ाते हुए, मोक्ष में उनसे शीघ्र अतिशीघ्र मुलाकात करूँगा।

पूरा साल इंतज़ार करते थे

– अखिल-चारु, आर्यन जयपुर (Ex USA)

संजीवजी हमारे बहुत घनिष्ठ मित्र थे। पूरे साल इनके USA आने का इंतज़ार रहता था और जब संजीवजी USA आते थे तो हम उनसे मिलने का कोई भी मौका नहीं छोड़ते थे। हम उम्र थे तो मित्रता कब हो गयी पता नहीं चला और वह भी ऐसी की उनके आने पर ऑफिस से छुट्टी लेकर उनके साथ चर्चा के लिए उनको घर पर ले आता था।

कुछ साल पहले इंडिया आने के बाद मेरे मन में इनके प्रति अहोभाव इतना बढ़ गया कि मेरे सहज इनके चरण स्पर्श करने के भाव होने लगे; लेकिन मुझे पता था कि ये नहीं छूने देंगे। कईं बार अकेले में साथ खड़े या घूमते हुए भी इनके चरण स्पर्श करने का भाव मन में आया; लेकिन हिम्मत नहीं हुई; क्योंकि उससे उन्हें संकोच होता और वे मित्रता के नाते छूने ही नहीं देते।

पता नहीं हमने कैसे पूर्व जन्म के कार्य किये होंगे जो ऐसे जिनवाणी माता के शिरोमणि का साथ मिला। आज सोच रहा था कि संयोग इतना कम ही क्यों मिला? तो उत्तर आया कि वे शायद पूर्व भाव की मित्रता के कारण, हमें इस भाव में सिर्फ जगाने आया थे, सही मार्ग बताने और उसके प्रति उत्साहित करने आये थे। काम हो गया तो चले गए ताकि ये सीखा सकें की परतंत्रता की छाया में पौधे विकसित नहीं होते, आगे का रास्ता हमें स्वयं तय करना होगा। जिस रह पर वो चले, उस राह पर हमें भी चलना होगा, बिना रुके, एक भी दिन चुके बिना, पीछे देखे बिना, बस चलते रहना होगा। ये ही हमारी संजीवजी के प्रति सही श्रद्धांजलि होगी।

अंतिम दिनों में संस्कृति भाभी और आर्जव की स्थिरता व सूझबूझ देख कर मन गद्‌गद् हो गया। संजीवजी के साथ रहते-रहते इनके अंदर भी जो धर्म का वृक्ष पैदा हुआ है, उसके सहारे वे अपने आगामी काल को नि:संदेह उपयोगी बनाने में सफल होंगे, उनके इस सफ़र में हम उनके साथ हैं।

प्रभावना

मेरे गुरू

– अरविंद शास्त्री, बंडा

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान संजीवकुमारजी गोधा अब हमारे बीच नहीं रहे। भारत ही नहीं; अपितु सम्पूर्ण विश्व में चाहे वो जैन हो या अजैन सभी उनके प्रवचनों, कक्षाओं को बड़े आदर से सुनते थे। भाईसाहब अत्यंत ही सरल एवं सहज व्यक्तित्व के धनी थे। हमेशा ही मुख पर प्रसन्नता बिखेरे रहते थे। मैंने कभी भी उनको क्रोध करते नहीं देखा। कैसी भी स्थिति एवं परिस्थिति हो प्रत्येक समय वो सहज ही रहते थे।

भाईसाहब मेरे लिए तो गुरु के साथ मेरे अग्रज भ्राता भी थे। समय-समय पर उनका मार्गदर्शन मुझे प्राप्त होता रहता था; परंतु अब अचानक पता चला की आप नहीं रहे तो मानो समय ठहर-सा गया हो। भाईसाहब उम्र में मेरे से काफी बड़े थे; परंतु जब भी उनके साथ हंसी-ठिठोली करते थे, तो वे भी हमउम्र की तरह ही व्यवहार करते थे। बच्चों के साथ बच्चा बन जाना और उसे भी खेल खेल में ज्ञान की बात समझा देना, भाईसाहब को बड़े अच्छे से आता था। कभी भी नयचक्र हो या कोई ऐसा जटिल प्रश्न हो जिसका समाधान मुझे नहीं आता था तो सिर्फ एक फोन पर ही सारी समस्याओं का समाधान मिल जाता था, जिनागम के लिए क्या दिन और क्या रात।

आज जैनसमाज का वो चमकता हुआ तारा कही खो गया, इस पर विश्वास कर पाना असंभव है; परंतु वो इस दु:खद संसार को त्यागकर अपने मोक्षमार्ग पर अग्रसर हो गये। पंचपरमेष्ठी की शरण ही सारभूत वस्तु हैं, उनका आश्रय लेकर भाईसाहब अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त करें, यही मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

आप स्वयं एक संस्था थे

– अंकुर शास्त्री, खड़ैरी

भाईसाहब सूर्योदय से लेकर अर्द्धरात्रि तक तत्त्वप्रचार के कार्यों में ही लगे रहते थे। जितना कार्य कोई एक संस्था और पूरी टीम मिलकर कर पाती, उतना कार्य वे अकेले ही करते थे।

- प्रतिदिन दो मुख्य प्रवचन, महाविद्यालय की कक्षा, विदेश की कक्षा आदि मिलाकर औसतन 5-6 घण्टे नित्य ही वनवे रूप से बोला करते थे। चर्चा-वार्ता के समय की तो गिनती ही नहीं की जा सकती।
- वीतराग विज्ञान (मासिक), जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक) को तैयार करवाना,उन्हें प्रेस तक भिजवाना और डिस्पैच करवाना आदि तो चलते ही रहते थे।
- कई प्रतियोगिताएँ मोक्षमार्ग प्रकाशक, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, समयसारादि को तैयारकर जन-जन तक पहुँचाना।
- मुख्य प्रवचन के ग्रंथों को छपवाकर लोगों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी भी वे वहन करते थे।
- स्वयं के यूट्यूब चैनल, पारस चैनल तथा आदिनाथ चैनल आदि पर प्रवचन प्रसारण को संभालना भी लगा रखा था।
- बड़े मंदिर (टोडरमलजी वाले) के महामंत्री, JAANA के डायरेक्टर, अर्हं पाठशाला के निर्देशक, ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर के मंदिर की रचना का सम्पूर्ण निर्देशन, तीनलोक व समवशरण पर बन रही फिल्मों का निर्देशन आदि कई महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ वे निभा रहे थे।
- तीनलोक, समुद्घात, कर्मसिद्धान्त आदि दर्जनभर रचनाओं पर कार्य कर रहे थे।
- गृहस्थी के कार्य भी उनके पास थे ही। इतना सब वे तब कर रहे थे जब तत्त्व प्रचारार्थ वर्ष के अधिकतम दिनों वे जयपुर से बाहर रहते थे।

इतने कार्यों को करते हुए तो मैंने स्वयं उनको देखा है। उनके निमित्त से सम्पूर्ण विश्व में न जाने कितने कार्यक्रम, योजनाएँ सफलता को प्राप्त कर चुकी थी; इसलिए ही कहा है कि **वे अपने आप में स्वयं एक संस्था थे।**

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

एक पारसमणि डॉ. गोधा

– श्रीमती श्री जैन (दिल्ली/जयपुर)

संजीवजी भाईसाहब अपनेआप में जिनवाणी के ऐसे एक ब्रांड थे। जो भी उनके संपर्क में आए वो सब भी ब्रांडेड हो गए, एक वे ऐसे पारसमणि जो पत्थर को छूकर उसे स्वर्ण नहीं; बल्कि पारसमणि ही बना देते थे।

मैंने, मेरे पति अश्वनी और बेटी अनिका ने कोरोना के समय में उनके पुरुषार्थसिद्धि उपाय और मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुए प्रवचनों को पहली बार सुना।

जिनवाणी की ऐसी सरल व्याख्या सुनी, सुनते ही मानो हमें दृढ़ निश्चय ही हो गया, मोक्ष का, मोक्ष के मार्ग का। फिर तो उनके बालबोध से लेकर समयसार तक सब व्याख्यान सुनते गए। आज मुझे अगर कुन्दकुन्द आचार्य की गाथाओं का मर्म, दादा के प्रवचन, उनका deep down meaning समझ आ रहा है तो सिर्फ भाईसाहब की वजह से। उनकी वो मुस्कान जो बड़े और बच्चे सबको अपना बना लेती है जो आज भी मेरे मन में समाई है। सहज रहने का जो प्रयास वे जीवनभर करते आये वही अंत समय में भी धारण किया। सच में, अब हमें भी इसी को अपने जीवन में उतारकर उसी धारा को प्रवाहित करते रहना है, इसी से हमारा भी मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होगा।

तत्त्व प्रभावना योग में प्रभावक व्यक्तित्व

– मयंक कुमार जैन अस्सिटेंट प्रोफेसर – मंगलायतन विश्वविद्यालय

सहजता की प्रतिमूर्ति आदरणीय डॉ. संजीवजी गोधा। भाईसाहब, जो कि जैनदर्शन को जीवनदर्शन बनाने वाले व्यक्तियों में से एक थे, उनका सम्पूर्ण जीवन दर्पण की तरह स्वच्छ था। उनमें सब कुछ था पर किसी से कभी प्रभावित नहीं हुए। उन्होंने कभी भी अपने चरित्र से व्यक्त तक नहीं होने दिया कि वे जैनदर्शन केएक जाने–माने मूर्धन्य विद्वान हैं; अपितु हमेशा एक शिष्य की तरह तत्त्वजिज्ञासु रहे। विभिन्न वरिष्ठ पदों पर रहते हुए भी उन्होंने एक समान्य पुरुष की तरह जीवन व्यतीत किया और अपनी प्रतिभा को कभी अपने मुख से प्रगट नहीं किया। वैसे भी वह प्रतिभा ही क्या? जिसे अपने मुख से अभिव्यक्त किया जाए। नीति कहती भी है:–

बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोले बोल
हीरा मुख सो न कहे, लाख हमारो मोल

यह दोहा पूर्ण रूप से उन पर चरितार्थ होता है। उत्तम पुरुष, किशमिश के समान होते हैं, जिनका अंतरंग और बहिरंग दोनों मिठास से ही सराबोर होता है। मेरे जीवन में सहजता और सजगता का उद्घाटन करने वाले आदरणीय भाईसाहब सदा मेरे प्रेरणा स्रोत थे और सदा ही रहेंगे।

यह बात मुझे खल रही है बहुत
लोग कुएं को देखते है, आपने सलिल देखा
लोग रूप को देखते है, आपने हृदय देखे
हमारे और आप में अंतर बस यही था
हम राह को देखते है, आपने मंजिल को देखा

महापुरुष मरण को प्राप्त नहीं होते; अपितु इस नश्वर देह से वे अमरता का कार्य कर जाते है, जिससे उनकी कीर्ति पताका फहरती रहती है। आपके व्यतित्व को नापना मेरे वश की बात तो है नहीं फिर भी आप से जो कुछ भी सीखा, सुना, समझा और परखा वह जीवनभर काम आएगा। आदरणीय भाईसाहब की रिक्तता की पूर्ति कदापि संभव नहीं है तथापि आपके जीवन से हम अपने जीवन को आदर्श बनाएं, आपके द्वारा प्रदत्त तत्वज्ञान को जीवन में आत्मसात करके मोक्षमार्ग में आरूढ़ होवें और आप से प्रेरणा प्राप्त कर यथासंभव अपने जीवन को सहज बनाने का प्रयास करें– इस मंगल भावना के साथ...

प्रभावना

तत्त्वज्ञान की एक मिसाल

– श्रीमति अनिता गांधी, दादर (मुम्बई)

मन बहुत व्यथित है, आपके यूँ अचानक हमेशा के लिए चले जाने पर। कैसे शुरु करुँ.. कहाँ से शुरु करुँ.. क्या लिखूँ.. कैसे लिखूँ? कुछ समझ नहीं पा रही.. शब्द ही नहीं सूझ रहे.. फिर भी आपके प्रति स्नेह वश दो शब्द लिखने का प्रयास कर रही हूँ।

आप दुनियाभर के आत्मार्थियों खासकर युवा पीढी के लिए तत्त्वज्ञान की एक मिसाल बने हुए थे। आपकी वाणी में एक अद्भुत मीठी सी खनक थी, जो आपके समझाने की शैली से, आपकी प्रत्येक क्रिया से स्पष्ट दिखाई देती थी। जो सबके लिए प्रेरणादायी है। आपके द्वारा प्रतिपादित हर विषय में आपके हृदय की सरलता और भीगे हुए परिणामों की सुंदर झलक दिखाई देती थी।

आप सदा शांति, समता, सहजता के धनी थे और हमें भी सहज होने का मार्गदर्शन कराते थे। Lockdown में लगातार बडी लगन और मेहनत से, कभी–कभी स्वास्थ्य ठीक न होते हुए भी दिन में 3/4 प्रवचन करते थे।

पण्डित टोडरमलजी आपके हृदय के हार थे। नाटक समयसार में पण्डित बनारसीदासजी के सभी छंद आपको बहुत प्रिय थे। उनके अंतिम समय के छंद आपने कुछ महीनों पहले पण्डित टोडरमलजी के मन्दिर में प्रवचन के दौरान बडे आनंद मिश्रित वैराग्य भाव से सुनाए थे।

चले बनारसीदास, फेर नहीं आवना

ऐसा लगता था,आपके कि आपको आभास हो गया हो अपने जीवन का और कुछ ही महिनों बाद आपने भी अपना नरभव सफल कर लिया। आप शीघ्र ही निर्वाण की प्राप्ति करें, यही भावना है।

आदर्श व्यक्तित्व - डॉ संजीवजी गोधा

– श्रीमती मीना जैन, अशोक नगर

कुछ कहते हैं बनो फरिश्ता, कुछ कहते हैं शैतान बनो।
लेकिन वो तो यह कहते थे किकुछ न बनो तुम,
तुम केवल भगवान बनो।।

आप हमेशा अपने व्याख्यानों में जीवन जीने की कला सिखाया करते थे, आपके हृदय में निरंतर अपने पंचपरमेष्ठी, जिनशासन और देव–शास्त्र–गुरु के प्रति भक्ति थी और अत्यंत शारीरिक प्रतिकूलता के मध्य भी उनका स्वाध्याय के प्रति विशेष अनुराग हम सभी को प्रेरणास्पद है और रहेगा। आपसे मेरी अंतिम मुलाकात आरोन पंचकल्याणक में हुई थी। उस वक्त आपने मुझे प्रेरणा देते हुए कहा था कि पंच परमेष्ठी के बताये हुए मार्ग पर निरन्तर चलना और स्वाध्याय को अपना लक्ष्य बनाकर अपने जीवन को सफल बनाना। आपका दिया हुआ उपकार समाज कभी भी नहीं भुला पाएगा। आप जल्द ही सिद्धदशा को प्राप्त हों, यही मंगल भावना है ।

बहुत बड़ी क्षति हो गई

– संयम जैन, पत्रकार वरिष्ठ समाजसेवी भोपाल

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जिज्ञासु मनीषी तो थे ही साथ ही समर्पित, समाजसेवी, विनम्र और मिलनसार व्यक्तित्व भी थे। उन्होंने अपने कौशल से, हजारों प्रवचनों से जैनजगत के विश्वपटल पर अपनी एक अलग पहिचान बनायी थी। आपका देहवियोग आपकी आत्मा की शाश्वतता को तो विच्छिन्न नहीं कर सकता है; किन्तु हम सबके बीच उनके सुसंयोग को अवश्य विच्छिन्न कर गया है। यह सम्पूर्ण जैनजगत के लिये अपूरणीय क्षति है। मैं दिवंगत भव्य आत्मा के शीघ्र निर्वाण प्राप्ति की मंगलभावना करता हूँ।

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

बस एक ही नारा था आपका

– सन्तोष जैन, लाल बहादुरनगर जयपुर

डॉ. संजीवजी से मेरे आत्मीय सम्बन्ध थे, उनके दूर चले जाने पर भी है और हमेशा रहेंगे।

वे बहुत सरल स्वभावी, मृदुभाषी विद्वान थे। सन 1978 में जनता कालोनी जैन मंदिर में आपने स्वाध्याय मंडल की सदस्याओं को नयचक्र का अध्ययन करवायाथा, जिसकी हमने स्मारक में परीक्षा दी थी। जनता कालोनी में ही नहीं, अन्य स्थानों पर भी आपने धार्मिक ज्ञान कराया।

वे निर्भय होकर जैनधर्म का डंका बजाते थे, इसी ज्ञान के कारण आप अनेक उपाधियों से विभूषित हो गये थे। उनका एक ही नारा था:–

देह जाये तो भले, जिनधर्म रहना चाहिये।

आपने जिनधर्म का गूढ़ रहस्य समझा और सबको सन्मार्ग दिखाया। ये धार्मिक संस्कार तो आपने जन्म घूँटी में ही पीलिये थे। जैसे सरल स्वभाव के घनी आपकी मम्मी व पापाजी हैं आप उनसे चार कदम आगे ही थे। तत्त्वज्ञान के गहन धनी ने स्वयं आपने तो सच्चा ज्ञान प्राप्त किया ही सारे विश्व को भी सम्यग्ज्ञान की ज्योति से प्रकाशितकर आत्मज्ञान की ज्योति में समा गये, अपने में ही समा गये।

कभी न भूलने वाला सफर

– मनीष वत्सल, इंदौर

पिछले 51 दिन पहले 27 दिसम्बर 2022 को सहज ही भाईसाहब डॉ. संजीवजी गोधा के साथ इंदौर से ज्ञानोदय दीवानगंज, भोपाल तक साथ जाने का योग बना। उन चार घण्टों के सफर में धर्मचर्चा, सामाजिक चर्चा, जीवन जीने के तरीके, इन सब पर भाईसाहब हमें मार्गदर्शन देते रहे। रास्ते में पुष्पगिरी तीर्थ के दर्शन करते हुये कुछ यादें हैं। जो अब सिर्फ तस्वीरों में ही रह गईं।

कोरोना काल से नियमित प्रतिदिन उनकी प्रवचन शृंखला से हमारे पूरे परिवार को नित्य प्रतिदिन जिनवाणी माँ का अमृत रसपान कराने वाले, हमारे बीच नहीं रहे। अपने प्रवचन में मुझ पर उनका विशेष स्नेह शुरू से ही बरसता रहा। कभी ऑनलाइन देख लेते तो बार–बार नाम लेकर बात को समझाते थे। हमारे लिये तो सच्चे मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत, बड़े भाई के समान थे।

विश्वास है कि निश्चित ही अल्पकाल में आप मुक्तिवधु को वरेंगे और शाश्वत सुख सिद्धदशा को प्राप्त करेंगे।

संजीवजी तो हमारे गुरु थे और रहेंगे

– प्रियंका राजकुमार जैन, सिडनी ऑस्ट्रेलिया

जिसने हमने जैनधर्म के मर्म को सीखा है। अनेक प्रकार की भ्रांतिया दूर हुई और सच्चा, सरल, सटीक तत्त्वज्ञान प्राप्त किया।

2019 में ऑस्ट्रेलिया (सिडनी) आने के पहले मैं स्क्रीन पर संजीवजी को इतना देख चुकी थी कि जब प्रत्यक्ष मिले तो लगा ही नहीं कि उनसे पहली बार मिल रही हूँ। समाज के द्वारा लगाया गया 3 दिवसीय शिविर संजीवजी को बहुत पसंद आया था, उन्होंने हमें इष्टोपदेश ग्रंथ पढ़ाया था। निडरता, जोश, आत्मसमर्पण, उत्सुकता आदि अनेक गुण तो भरपूर थे। चाहे जैन हो या अजैन हर कोई उनको अपना आदर्श मानता था। कोरोना काल में जाने कितने लोगों ने उन्हें अपना गुरु बनाया।

जब मोक्षमार्ग प्रकाशक पर संजीवजी के लाइव प्रवचन हुए व उन प्रवचन पर मैंने नोट्स बनाकर उन्हें भेजे तो बहुत खुश हुए और प्रेरणा देते हुए कहा कि इस कार्य को मन लगा कर करना ताकि और को भी प्रेरणा मिले।

ऐसे बिरले व्यक्तिव के धनी का अल्पायु में निधन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है, सच्ची श्रद्धांजलि तो उनके बताये गये मार्ग पर चलना है। आप शीघ्र ही पंचम गति को प्राप्त हों, ऐसी मंगल भावना है।

प्रभावना

एक आराधकप्रभावक

– नरेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

डॉ. संजीवजी गोधा सर्वप्रिय प्रवचनकार, कुशल सम्पादक, श्रेष्ठ अध्यापक, अध्यात्मवेत्ता, एवं जिनधर्म प्रभावक विद्वान थे, उनके जीवन में इतने आयाम थे कि एक व्यक्ति में एक साथ उन सब का होना किसी आश्चर्य से कम नहीं है।

जिसप्रकार शेर को सम्यग्दर्शन प्राप्त होना था तो आकाश मार्ग से दो मुनिराज उन्हें संबोधन के लिए सहज ही आ गए, उसीप्रकार संजीवजी की योग्यता ने उन्हें आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की गदी पर प्रवचन करने का सहज योग प्रदान किया।

टोडरमल स्मारक, जयपुर में शास्त्री के पाठ्यक्रम की कक्षा में उनका नाम दर्ज नहीं था, फिर भी उन्होंने कक्षा में कोने में बैठकर नियमितरूप से स्वयं अध्ययन करके अपने को शास्त्री के समकक्ष सक्षम बनाया।

स्मारक में आदरणीय छोटे दादाजी से सक्रिय रूप से जुड़ने पर उनकी बहुमुखी प्रतिमा को निखरने का सर्वाधिक अवसर प्राप्त हुआ, उसने बहुत ही अल्प समय में आपने अपनी प्रतिभा के बल पर उनके प्रिय शिष्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्तकर किया लिया।

कार्य तो उपादान की योग्यता से ही होता है, इसी श्रद्धान के बल पर ही उन्होंने अत्यंत गंभीर रोग होने पर भी मात्र आयुर्वेद पद्धति से ही उपचार कराने के प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय संकल्प का पालन दृढ़तापूर्वक किया

संजीवजी ने अन्त समय तक नि:स्पृह भाव से अपनी ओजस्वी वाणी से प्रभावोत्पादक प्रतिपादन शैली में भगवंतों व आचार्यों की श्रुत परम्परा को लाखों लोगों तक मोक्षमार्ग में लगने हेतु प्रेरणास्पद अभ्यास कराया। तो वहीं समाज ने भी उन्हें इतनी अल्पवय में अनेक उपाधियों एवं अनुकरणों से सुशोभित कर एक नया इतिहास रच दिया।

उन्होंने अपने जीवन और मरण दोनों से ही यह सिखा दिया कि **सच्चा आराधक ही प्रभावक होता है**।

सच्चे प्रभावक आदरणीय भाईसाहब

– हर्षित जैन, खनियाधाना

टोडरमलजी की कर्मस्थली, जैनों की काशी के नाम से प्रसिद्ध जयपुर में 1976 में संजीवजी का जन्म हुआ। **पूत के पांव पालने में** इस उक्ति के अनुसार आप बचपन से ही धर्मिक प्रवृत्ति के थे। तत्त्वज्ञान सीखने आप टोडरमल स्मारक से जुड़े और फिर यहीं के होकर रह गए। धीरे-धीरे आपने स्मारक में ही अध्यापन के कार्य के साथ-साथ संपादक आदि के कार्य भी किये एवं जैन पथप्रदर्शक, वीतराग-विज्ञान आदि पत्रिकाओं के सफल सम्पादक व सहसम्पादक बन गए।

क्रमबद्ध पर्याय एवं नयचक्र जैसे गूढ़ विषयों को आपने अपनी ओजस्वी शैली एवं सरलता से विद्यार्थियों को पढ़ाया। आपकी शैली इतनी सरल व प्रभावक थी कि युवाओं के आप पथप्रदर्शक बने।

कठिन विषयों को सरलता से समझाना एवं सरल विषयों में भी गूढ़ रहस्यों को निकालना कोई आपसे सीखें। समाज में जब आप तत्त्वप्रचार के लिए जाते थे तो आप सुविधाएँ देखकर नहीं, तत्त्व जिज्ञासुओं को देखकर जाते थे। आप अक्सर अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि आत्मानुभूति बस जरूरी है; बाकी सब मजबूरी है।

संजीवजी को कार्यक्रमों में नहीं बुलाया जाता था; अपितु आपको बुलाने के लिए कार्यक्रम रखे जाते थे। अत: आप सरलता, सहजता की मूर्ति थे, अतः आपने अपने अंत समय में भी जिनवाणी का प्रचार वचन से एवं प्रभावना अपने हृदय से की एवं आप अंत में अपने में ही लीन हो गए थे, आप शीघ्र सिद्धशिला में विराजमान हों ऐसी मेरी मंगल भावना।

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

महान व्यक्तित्व के धनी

– श्री वीर महिला संघ, जयपुर

विलक्षण प्रतिभा के धनी, ओजस्वी वक्ता, विद्वत् परंपरा के प्रकाशपुंज, धार्मिक प्रवृत्ति से ओत-प्रोत, सहज व सरल स्वभावी संजीवजी गोधा महान व्यक्तित्व के धनी थे।

वे शान्त-सौम्य स्वरूप के धारक थे। अल्पायु में ही उन्होंने धार्मिक व आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन कर जहाँ अपने जीवन को सार्थक किया। वहीं जैनधर्म के प्रसार व प्रचार में भी अविस्मरणीय योगदान दिया। वे तत्त्वज्ञानी थे और आगम के ग्रन्थों की बड़ी कुशलता से सरल व्याख्याकर समझाने में माहिर थे।

इसी क्रम में, उन्होंने सन् 1999 से लगभग तीन-चार वर्षों तक श्री वीर महिला संघ, जयपुर की सदस्याओं के अनुरोध पर छहढाला, भक्तामर स्तोत्र व अन्य स्तुतियों की कक्षायें लेकर इनका अध्ययन कराया और धार्मिक रुचि जागृत की। संस्था के सदस्याओं से उनके सदैव ही आत्मीय सम्बन्ध रहे; लेकिन इतनी कम उम्र में ही वे देह परिवर्तन कर हम सबसे दूर चले जायेंगे, इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी। शीघ्र ही भव-भ्रमण समाप्त कर वे सिद्धालय में विराजमान हों, यही भावना है।

सरल व्यक्तित्व के धनी

– श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर
जैन धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट, सिंगोली

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग में अपना जीवन समर्पित करनेवाले अद्भुत व्यक्तित्व के धनी आदरणीय पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर आज हमारे बीच नहीं हैं; लेकिन आपने अपनी ओजस्वी वाणी से मुमुक्षुसमाज एवं सकल दिगम्बर जैनसमाज में जो वीतरागता का प्रचार-प्रसार किया और जिसे सुनकर समाज ने अपने जीवन में जो परिवर्तन महसूस किया, वह अपने आप में एक अद्भुत कार्य है। पहली बार जब आपसे मुलाकात की तब आपकी सहजता, सरलता को देखकर दंग रह गया।

सरल व्यक्तित्व के धनी संजीवजी ने सिंगोली पंचकल्याणक में पधारकर 6 दिन तक सुबह-शाम अपनी सरसवाणी से प्रवचन कर हम सबका मन मोह लिया, संजीवजी गोधा को हम सब लोग नमन करते हैं, ऐसी भावना भाते हैं कि आप अल्प समय में सिद्धालय में विराजमान हों, इसी मंगल भावना के साथ...

मेरे प्रिय अध्यापक

– हर्षित जैन, दमोह

आदरणीय भाईसाहब के जीवन से मुझे अनेक गुण सीखने को मिले, उनमें से एक तत्त्वप्रचार के लिए हमेशा तत्पर रहना, उन्होंने ग्रंथों को मात्र प्रवचनों के लिए पढ़ा हो ऐसा नहीं है; अपितु जीवन के लिए पढ़ा था और वह तत्त्वज्ञान उनके जीवन के हर कार्यकलाप में झलकता था। बिजी होने के बावजूद भी हमें कक्षा में पढ़ाते थे। ऐसा कभी नहीं हुआ कि विषय को टाल रहे हो कि मुझे जल्दी-जल्दी कोर्स खत्म करना है इसलिये जल्दी-जल्दी पढ़ा दिया हो। वे सभी बच्चों को साथ लेकर चलते थे चाहे वह कक्षा का अंतिम ही विद्यार्थी क्यों न हो। हमेशा विद्यार्थियों को अपने समान ही समझते थे कोई विद्यार्थी उनसे कोई बात कहे तो उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुनते थे, उसका समाधान करते थे।

विद्यार्थी से कहते रहते थे कि तुमको कोई बात नहीं समझ में आए, तो मुझे बताओ, कोई नई बात तुमको ख्याल में आई है तो बताओ, यदि उनको लगता था कि यह बात तो सही है और नई बात है, तो उस बात को सबके सामने कहते थे और वे भी स्वयं स्वीकार करते थे। आदरणीय भाईसाहब विद्यार्थियों के प्रिय अध्यापक थे तथा मेरे भी।

प्रभावना

एक पत्र : संजीवजी के नाम

– समर्थ जैन, हरदा

आदरणीय संजीव जी भाईसाहब
सदर जयजिनेन्द्र!

आशा है आप अपनी कल्पवासी देव पर्याय में सानंद होंगे और तत्त्व चर्चा में संलग्न होंगे। मैं इस बात से अवगत हूँ कि यह पत्र आप तक नहीं पहुँच सकता, फिर भी मुझे आपसे कुछ कहना है।

आज पूरा देश आपके चिरवियोग से संतप्त है। क्यों? क्योंकि आप थे ही ऐसे! सरल, शांति एवं गंभीर। न कभी अहम् भाव और न ही कभी ईर्ष्या। सभी साधार्मियों के प्रति अपका एक समान भाव बना रहता था। इसलिए आज सम्पूर्ण समाज, जो आपसे जुड़ा हुआ था, वो दुखी है।

देशभर में श्रद्धांजली सभाएँ आयोजित की जा रही हैं, आप सरल थे, बिना अनुकूलताओं को देखे समय पर प्रवचन दिया करते थे, आपकी शैली बड़ी प्रभावशाली थी आदि आदि सारी बातें लोग बोल रहे हैं। हाँ, यह सारी बातें सत्य हैं, पर यह तो बाह्य गुणों का वैभव है।

जिस प्रकार व्यवहारी जन देहाश्रित भक्ति करने पर केवली को परमोदारिक शरीर एवं प्रातिहार्य आदि चमत्कारों से अलंकृत मानते हैं, वैसी ही उक्त श्रद्धांजली हुई। आपके अंतरंग गुण तो जिनधर्म के प्रति श्रद्धान, ज्ञान व अनुचरण थे। यह ही तो आपका वास्तविक वैभव था। तभी तो आपने इतनी अल्पायु में ही व्यवसाय त्याग दिया था। बस जिनवाणी का अध्ययन एवं निःस्वार्थ भाव से भव्य जीवों को तत्त्वज्ञान समझना ये आपके दो ही कार्य थे। इसीतरह सहज ही आपकी इतनी ख्याति हो गई, जिसकी रंचमात्र भी चाह आपको न थी। आप कभी मृत्यु से भयभीत न थे, पता चलने पर भी चहरे पर एक शिकन न आ पायी, यह सब तत्त्वज्ञान का ही बल था।

मुझे व्यक्तिगत आपसे बहुत प्रेरणा मिली है। आप तो मुझे यह समझाकर चले गए कि जीवन की परेशानियों से कभी हताश नहीं होना, कभी जिनमार्ग एवं तत्त्वज्ञान को नहीं छोड़ना, अध्ययन सदा विद्यार्थी बनकर ही करना और जिनश्रुत को सदा कंठ में बसाना। आपने तो यह दुर्लभ नर भाव सफल कर लिया; अब मैं भी आपके मार्गदर्शन पर चलकर मेरा जीवन सफल बनाऊंगा। यही मेरी आपके श्रद्धांजलि है।

मेरे आदर्श, जिन्होंने मुझे गढ़ा है

– मंयक जैन, फुटेरा

मेरे आदर्श, जिन्होंने मुझे गढ़ा है, ऐसे हमारे प्रिय गुरु संजीवजी गोधा उनके बारे में मैं क्या लिखूँ। न जाने क्यूँ मन ये स्वीकार नहीं कर पा रहा है कि आ. भाईसाहब हमारे बीच नहीं रहे।

ऐसा एक भी दिन नहीं जाता जब आप प्रवचन अथवा तत्त्वप्रचार न करते हों, इससे आपकर जिनवाणी के प्रति समर्पणभाव दिखाई देता है। आ. अमृतचंद्र जब समयसार ग्रंथ की टीका करने का उद्देश्य बताते हुए कलश 3 में लिखते हैं कि –

इस कार्य को करने का उद्देश्य प्रसिद्धि नहीं; अपितु परमविशुद्धि की प्राप्ति है। आपके जीवन का उद्देश्य यही था कि कैसे भी हो, मरपचकर भी तत्त्वप्रचार करना है और परमविशुद्धि पानी है।

बीच में अभी ऐसा समय आया, जिसमें सभी मंदिर एवं प्रवचन सभाएँ बंद थीं। उस समय online माध्यम से सबसे अधिक तत्त्वप्रचार आपने ही किया है। संजीवजी गोधा अर्थात् तत्त्वप्रचार, ऐसा कहने में कोई आश्चर्य नहीं है।

पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में लिखा है कि – **गुरवो भवंति शरणा: प्रबुद्धनयचक्र संचारा:।** अर्थात् जिसप्रकार तलवार चलाना सीखना है तो सुयोग्य गुरु के निर्देशन में विधिपूर्वक सावधानी से सीखना चाहिए। उसीप्रकार नयों की प्रयोगविधि में कुशलता प्राप्त करने के लिए भी नयचक्र के संचालन में चतुर गुरु ही शरण हैं और हमारा सौभाग्य है कि हमें नयचक्र का सरल भाषा में समझानेवाले आ. संजीवजी गोधा जैसे गुरु मिले हैं। आपसे हमने जो भी तत्त्वज्ञान सीखा है, उसे हम अपने जीवन में अपनाएंगे, यही मेरी आपके प्रति श्रद्धांजलि है।

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

सिर्फ एक ही नाम : संजीवजी

– राहुल जैन, अमायन

ऐसा लगता है मानो आज भी पण्डित टोडरमल स्मारक के कण-कण में आदरणीय संजीवजी की ओजस्वी वाणी गुंजायमान हो रही हो।

उन्होंने अपने जीवन में एक-एक समय के महत्त्व को समझा और आज देखो समय ने उन्हें कितनी ऊँचाइयों पर लाकर खड़ा कर दिया। आज हर व्यक्ति के जवान पर सिर्फ एक ही नाम है आदरणीय संजीवजी। जीवन तो सभी जीते हैं; लेकिन कोई विरले ही होते हैं जो अति अल्प समय में ही लोगों के हृदय में अपना स्थान बना लेते हैं।

इतनी पवित्रता जीवन में कि मजाल किसी परिस्थिति की जो उनके जीवन को प्रभावित कर सके। प्रमाद नाम का शब्द मानो उनके जीवन की डिक्शनरी में ही नहीं था।

हम विद्यार्थियों के प्रति वो अपार वात्सल्य रखते थे, नयचक्र, क्रमबद्धपर्याय विषयों का बड़ी सरलता से अध्ययन कराना हमेशा स्मृति पटल पर अंकित रहेगा। वास्तव में पूरा जीवन देकर भी हम उनके द्वारा किए गए उपकार से ऋण तो नहीं हो सकते; लेकिन उनके द्वारा प्रतिपादित तत्त्व को अपने जीवन में धारण करके अपना जीवन जरूर सफल कर सकते हैं, हम सभी उन सिद्धांतों को धारण करें, ऐसी मंगल भावना भाते हुए श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

अध्यात्म क्रांति के मूल डॉ.संजीव जी गोधा

– कृणाल शाह, अहमदाबाद

आदरणीय डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जिनको आज संपूर्ण जैनसमाज YouTube के माध्यम से निरन्तर सुनता रहता है। वे एक सरल, सहज एवं तत्त्वप्रेमी विद्वान थे।

मैं तो यह मानता हूँ की YouTube के माध्यम से अध्यात्मक्रांति फैलाने की नींव आदरणीय संजीवजी भाईसाहब ने ही रखी है और उस नींव को जीवन के अंतिम क्षण तक मजबूत भी करते रहे। यदि हम उनका अंतिम प्रवचन सुनें तो देखते है कि 10 मिनिट बाद ही उनका गला खराब हो गया था फिर भी वे आधे घंटे तक वह बोलते ही रहे, मानो बता रहे हो कि कैसी भी परिस्थिति आजाये तत्त्व प्रचार-प्रसार नहीं रूकना चाहिए। आदरणीय भाईसाहब के द्वारा फैली अध्यात्मक्रांति आज Social Media पर अनेक रूप में फैल चुकी है और निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

हम सभी का पूर्ण प्रयास यह रहना चाहिए कि हम किसप्रकार आदरणीय भाईसाहब द्वारा चलायी गयी अध्यात्मक्रांति को आगे बढ़ा सकें। वास्तव में यही हम सब का कर्त्तव्य है। हम सब भी अध्यात्मक्रांति के मूल आदरणीय डॉ. संजीवजी गोधा द्वारा प्रतिपादित किये गये, वस्तु स्वरूप के सिद्धान्तों को समझें और जीवन में अंगीकृत कर आगे बढ़ा सकें, ऐसी भावना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आदर्श प्रस्तुत कर गए...

– श्रीमती विपिनेश जैन, कुरावली,

हुये तीर्थंकर से बली उनकी नहीं चली तो, फिर क्या करिये?
जिस पंथ चले भगवंत वही आचरिये।

आदरणीय गोधाजी ने इसी सत्पथ का अनुसरण करते हुए, अपनी इस भव की यात्रा को अपने शिक्षागुरु द्वारा बताए सहज समाधि स्वरूप जीवन को अपनाकर, अंतिम क्षण में आदर्श प्रस्तुतकर, अपने मोक्ष पथ की यात्रा की ओर प्रस्थान किया।

उन्होंने तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ मोक्षमार्ग को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया और आज वे मुमुक्षुओं के जीवन के लिए जीवंत आदर्श प्रस्तुत कर गये है। हम सब उसी पथ के पथिक बनें, यही हमारी उनके प्रति सच्ची विनयांजली होगी।

प्रभावना

Dr. Sanjeev Godha Fondly Remembered and Deeply Missed!

- Dr. Priyadarshana Jain

Professor, Head, Dept of Jainology, University of Madras

The Department of Jainology, University of Madras had the proud privilege of inviting Dr. Sanjeev Godha, Jaipur to deliver Shri Megharaj Narendra Sakariya Jain Endowment Lecture in 2018 and what a fine lecture he delivered on "Significance of the understanding of Five Samavaya" His expertise, diction, style, narration and insights mesmerised the audience and left an indelible mark on one and all. Even today the students recall that lecture very fondly and talk of it highly. When the Departmental Committee at the Department of Jainology decided to invite him for the Endowment Lecture we thought, that a person of that high calibre, who travels worldwide giving insightful and motivational lectures would not be available for the Department. But he proved us wrong! He readily accepted our invitation and very modestly flew down to Chennai to deliver the Lecture at the Department.

Even today my husband and I have very fond memories of driving him home from the Airport, taking him to the University and that very evening drop him at the Airport for Jaipur. He came swiftly as a breath of fresh air and gave deep insights related to Philosophical understanding of Five Samavaya i.e., factors responsible for any event that takes place in the Universe. His treatment of the subject was comprehensive and his narration was impeccable. His commitment to promote Jainism worldwide was much appreciated and he was a role model for many in many aspects.

Dr. Sanjeev Godha is fondly remembered and deeply missed! Young and old, students and teachers and people from all backgrounds will continue to draw inspiration from his 4000+lectures on YouTube and other social media platforms. He shall forever remain a shining star guiding people through the darkness of ignorance, perversion, materialism, and pangs of suffering in the cycle of transmigration for ages to come.

End of An Era

- Jinesh Sheth

Ph.D Candidate (UGC-SRF) Department of Philosophy University of Mumbai

I still cannot believe that I am writing this note in memory of Dr. Sanjeevji Godha. Apart from being a renowned speaker and a scholar of Jainism, he was also a teacher of Shastri-students without himself formally being educated in such any environment. Personally, I feel fortunate that I was able to study some of the most complicated subjects in a manner as simple as possible under his able guidance. I still vividly remember how diligently sir would drive all the way to Smarak Bhavan from his home early in the morning and teach us a subject like Naychakra; which, once upon a time, even scholars of Jainism had a tough time understanding it. His classes have etched certain teachings which I hope will stay with me throughout my life. The calmness on his face always reflected the kind of life that he lived. If there is one message that I can take from him and would like to share with all as well, is that when one is blessed with all the resources required for this life, the only way to make optimum use of it is to spend time with scriptures as much as possible and see if one can contribute in spreading the teachings of the Tīrthaṅkaras.

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

History will always remember the deeds of this great son of Jinvani who, without breaking any sweat, changed the lives of so many souls across the globe in such a short span of time. Sometimes it feels that those of us who were witness to the era of Dr. Sanjeevji might also have had at least some glimpses of how the life of Pandit Todarmalji might have been!

Dr. Sanjeev Godha - Stalwart Saadharmi

- Jaya Nagda

I am 75 years old and live in Washington DC. I was born and raised in a shvetwamber family in India. I first met Sanjeevji in 2008 when me and my late husband visited Todarmal Smarak Trust. Dada had asked Sanjeevji to show us around Smarak. Then I first heard Sanjeevji's pravachan during one of JAANA Shivirs in the US and was really impressed with this young scholar. I had an opportunity to listen to him in Deolali several times during Conferences arranged by MONA.

He presented the subject with such enthusiasm and clarity that I loved listening to him. Around 2015 I met him again in Washington DC. After that visit, when I heard his pravachan on Jeevan Jine Ki Kala, I loved it so much that I forwarded it to my two sisters in India who followed Shwetamber Dharma. My sisters too liked his pravachan. Since the time of COVID me and my sisters have been his daily listeners and it became my favourite subject. Even when I am away from hom. I don't miss his pravachans. I always listened to his Lectures on Kramabaddha Paryay when he used to teach the Shastri students at Smarak. About a year and a half ago, I messaged him that you will become a great Upadhyaya and I will seek Muni Diksha and will be learning from you. He replied it with a great positiveness. When I first heard his Bhakti **"Dhalta Suraj Sandhya Samay Ka"** I loved it so much that I tried to write it down but was missing a few words. I messaged him and I got the reply within minutes. A bhakti written by Dr. Vivekji **Jin dharm se hai prem to bas bhavana ye bhaiye** in memory of Shree Todarmalji, always remind me of Sanjeevji. I think that in current time when the world seems to be going in the wrong direction he came to this world for a short time to wake up those that are fortunate and have a good destiny. Since his serious illness and departure he has been on my mind so much. His loss is so big that it will be hard to fill. He will be reaching his final destination of Siddhashila in a couple of more lives. I bow down to this great soul with utmost respect.

Our Sincere Gratitude

- Kinnari Samit Shah & Family

Sanjeevji is cherished by his immense contribution in Jinagams tatva prachar, concept clarity, in-depth study & deep understanding of Jinvani. My journey with Parmagam honours and Sanjeevji's pravachans has a huge impact on my spiritual pursuit. Sanjeevji's recording of lectures on Mokshmarg Prakashak, Gunasthan, Ratnkarand shravakchar, Panch labdhi and many shastras and topics gives prospective to the purpose of life, is very uplifting and motivating. Our heartfelt shraddhanjali from our Family. May we walk on the path of Mokshmarg Regards.

देश-विदेश में सम्मानित डॉ. संजीव गोधा

जैन पथ के सम्पादक बने डॉ. संजीव गोधा

संजीवकुमारजी गोधा के पुरस्कार

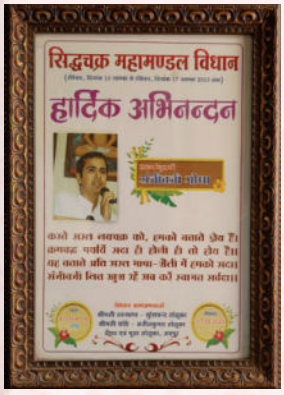

समयसार

सामूहिक जिनेन्द्र आराधना संस्था
प्रशस्ति
जैन युवा रत्न सम्मान

श्री बीसा नागदा समाज, मुंबई

॥ सम्मानपत्र ॥

एस.एस. जैन सुबोध स्नातकोत्तर महाविद्यालय
प्रमाण-पत्र

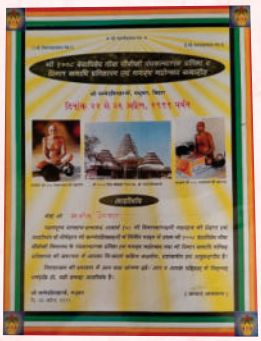

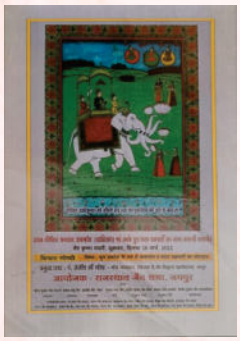

डॉ. संजीव कुमार जी गोधा
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ, जयपुर

डॉ. संजीवकुमार गोधा

अभिनंदन - पत्र

डॉ. संजीवकुमार गोधा
जयपुर (राजस्थान)

दिगम्बर जैन महासमिति
अभिनंदन-पत्र
पण्डित संजीवकुमार गोधा

सम्मान पत्र

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ
अभिनन्दन-पत्र
डॉ. संजीव गोधा
जयपुर

International Conference
Certificate

अभिनंदन पत्र
Dr. Sanjeev Kumar Ji Godha

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
प्रशस्ति-पत्र
हार्दिक अभिनन्दन

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ

जहाँ...जहाँ... उपकार...

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ

विदेश में तत्त्व प्रचार के प्रमुख स्तम्भ

Sept. 2015
Brempton - CANADA के
नवनिर्मित जिनमंदिर में प्रवचन करते हुए

2014 Brempton - Canada
प्रतिष्ठा

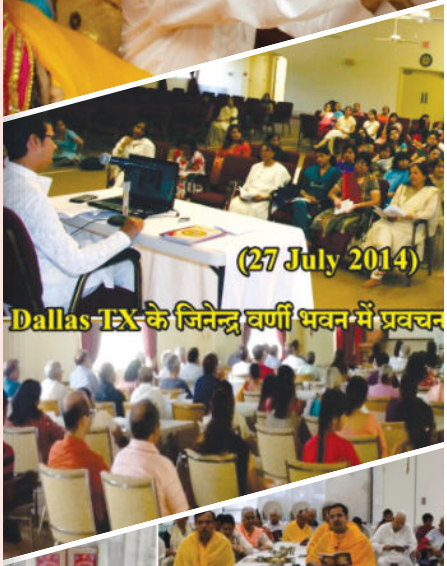
(27 July 2014)
Dallas TX के जिनेन्द्र वर्णी भवन में प्रवचन

New Jersey
2016

June 2017
कागो में जिनवाणी विराजमान

30 May 2017
Miami - FL में पूजन

Brempton - Canada में

DALLAS TX में वेदी प्रतिष्ठा
13-15 July 2012

एवं प्रवचन

Edmonton CANADA के हिन्दू मंदिर में प्रवचन करते हुए डॉ. संजीव गोधा

(13 September 2015)

अध्यात्मवेत्ता

डॉ.संजीवकुमार गोधा

काव्य खण्ड

क्यों आँखों में आता पानी

– पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर

(तर्ज:– ऐ मेरे वतन के लोगों)

नाम लेते संजीव जी का, क्यों आँखों में आता पानी
क्यों शब्द नहीं निकलते, खोया हमने एक ज्ञानी

पण्डित संजीव जी गोधा, था श्रुत सपूत सब जानें
कैसा अजात शत्रुथा, सबको प्रिय कौन न माने
कैसी थी मधुरिम वाणी, शीतल झरने सी झरती
चातक वत समय निहारें, पीते साधर्मी नित ही
कहाँ गया कोई बतलादो, बस रह गई एक कहानी
नाम लेते संजीव जी का, क्यों आँख में आता पानी

कैसी सुंदर छवि धारी, कैसी बुलंद थी वाणी
मिश्री भी फैल जहाँ थी, कैसी खिरती जिनवाणी
पूरे जीवन भर तुमने, श्रुत रतन अनमोल लुटाए
बालक हो वृद्ध युवा हो, सबके ही मन को भाए
अच्छे जीवों की हे प्रभु क्यों छोटी रहती जिंदगानी
जरा याद करो तो उनकी, आँखों में आता पानी

जिन शासन सेवी संजीव थे विशद ज्ञान के धारी
चारों अनुयोग सभी में गहरी थी पकड़ तुम्हारी
बालबोध से लेकर वीतराग, तत्त्वज्ञान सब ही समझाया
हो समयसार या संयम परकाश विनय दरशाया
कभी गुणस्थान की क्लासें, नयचक्र की क्लास लगाई
पुरुषार्थ सिद्धी उपाय, रत्नकरण्ड की महिमा गाई
कभी द्वीप समुद्र बताए कर्म आठों मर्म बताए
जो होना सब निश्चित हैं निर्भार कराने आए
अब कहाँ मिलेगा ऐसा सारस्वत निर अभिमानी
याद आती कैसे भूलूं आँखों में आता पानी
अंतिम जीवन की बेला कर्मोदय गहन था आया
सब कर्ज पुराना चुकाने अशरीरी पर मन भाया

रोगों ने डाला डेरा, पर ज़रा नहीं घबड़ाये
डॉक्टर को अचरज भारी क्यों कष्ट नहीं बतलाए
अब ज्ञान में ज्ञान लखूंगा, अर रोग में रोग हैं भाई
बस भेद-विज्ञान करूंगा, यही मुक्ति रीति सुखदायी
साहस के पुतले तुमने, ये सफल करी जिंदगानी
याद आती कैसे भूलूं, आँखों में आता पानी

प्रदीप किशनगढ़ वाले कोई ससुर मिले बतलाना
संजीव गोधा रहो निश्चिंत शासन प्रभावना करना
संस्कृति सी धर्मपत्नी कोई हो तो हमें बताओ
बोली सारी दुनिया में जिनधर्म ध्वजा फहराओ
संजीव के मात-पिता को, हम सब वंदन करते हैं
भगवान बनेगा बेटा दिया जन्म धन्य कहते हैं

प्रवचन हैं अरे हजारों हम लाभ सभी अब लेगें
पाठशाला ने बनाया संजीव हम पाठशाला खोलेंगें
परिवारजनों को संबल देना हे माँ जिनवाणी
नाम लेते संजीवजी का आँखों में आता पानी

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

जिनवाणी रस पान कर

– पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली

जिनवाणी रस पान कर जीते थे संजीव।
विधि की अहो विडंबना तज गए शीघ्र शरीर।।

तज गए शीघ्र शरीर किंतु अशरीरी भाया।
गुरु कहान सन्देश विशेषज्ञों से पाया।।
थे निर्भीक प्रवक्ता सबको प्रिय थी वाणी।
संजीवनी कला से सार्थक हो जिनवाणी।।

संजीव तुम पर क्या लिखूं....

– पण्डित संजय शास्त्री, कोटा

तेरे प्रलय की नीर में मेरी कलम ही जब बह गई
संजीव तुम पर क्या लिखूँ.....
भाई कहूँ या कहूँ सखा या कहूँ परमात्मा
तेरे बिखरते तेज में मेरे नयन खुलते नहीं
संजीव तुम पर क्या लिखूँ.....

है भला वो कौन नाविक तैर कर सागर तिरे
तेरी लहर की बाढ़ में मेरी कलम जब खो गयी
संजीव तुम पर क्या लिखूँ.....

तुम हो हिमालय धरा के क्षुद्र मेरी है कलम
तेरे विराट स्वरूप से मेरी कलम जब ढक गयी
संजीव तुम पर क्या लिखूँ.....

तुम पृष्ठ हो मैं हासिया, तुम नहीं तो मैं नहीं
जब पृष्ठ ही पूरा भरा, भला बचा लिखने को क्या
संजीव तुम पर क्या लिखूँ.....

तुम अनन्त आकाश हो, मैं नाप दूँ यह हस्ती क्या
तुम यथार्थ, मैं स्वप्न हूँ, कुछ बोल दूँ हिम्मत है ना
तुम गये अनन्त में, मेरी कलम जब उड़ गयी
संजीव तुम पर क्या लिखूँ.....

तुम सिखा अमर भये

– पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर

किससे अब मैं क्या कहूँ, फिर से हम छले गए
बाट जोहते रहे हम, तुम तो यूं चले गए

कहाँ गई वो गर्जना मिथ्यात्व पर प्रहार था
सत्य का ही पक्ष था, सत्य का प्रचार था
तुम तो मर के जी गए, हम तो जी के मर रहे

थी अजब कशिश तुम्हारे, हाव-भाव शब्द में
शब्द सारे मौन हैं, वे स्वयं नि:शब्द हैं
वाचाल भी तो मौन हैं, मौन भी मुखर हुए

सौम्य था वदन तुम्हारा, यूं भुला पाता नहीं
जैसे तुम चले गए यूं कोई जाता नहीं
आत्म तत्त्व ही सुहाय, तुम सिखा अमर भये

मौत देख डर गई, क्या अजब ये जीव है
मृत्यु देख कह उठी, यह तो संजीव है
जीना भी सिखा गए, मरना भी बता गए

काल की ये क्रूरता प्रत्येक पल जगा रही
संयोग की असारता सामने दिखा रही
कौन कहता मर गए मरके वे अमर भये

अट्टहास मृत्यु का देखकर डरे नहीं
मोह राग द्वेष कीच में भी तुम पड़े नहीं
काल भी नमन करे वे स्वयं में चले गए

मैं हूँ सिद्ध वंश का भूल मैं भटक रहा
देह भोग और संयोग मोह में अटक रहा
तुम तो सीख कर गए, हमें भी सिखा गए

जिनको संग समझ रहे थे, वे स्वयं असंग थे
संयोग सारे नि:सहाय, सामने प्रसंग है ये
अपने में ही यूं रमे, ज्यों कभी रमे नहीं

प्रभावना

संजीव तो जीता रहा.....

– पण्डित विक्रांत पाटनी, झालरापाटन

क्या कहा संजीव गोधा नहीं रहे?
नहीं-नहीं, यह सच नहीं
यह झूठ है, यह कभी हो सकता नहीं
क्योंकि.....
जिधर भी देखो जगत में
मोह का विष बह रहा है
इस गरल के बीच रह
अध्यात्म का अमृत सदा
हमको पिलाया और खुद पीता रहा
संजीव तो जीता रहा.....

पक्ष के हों या विपक्ष के
जुबानी तलवार से
जो कट चुके या फट चुके
उन दिलों को
मधुर-भाषा के धागे और
सुगम शैली की सुई से सीता रहा
संजीव तो जीता रहा.....

सरल है, पाकर जरा सी प्रतिष्ठा
अभिमान होना
प्रतिष्ठा के शिखर पर
जो सरल रहकर
मान से, अभिमान से रीता रहा
संजीव तो जीता रहा.....

पढ़ी सबने पोथियां
और ग्रंथ ढेरों
जाएगा पर मोक्ष में वह ही सदा
जो और कुछ भी पढ़े, या ना भी पढ़े
पर आतमा का जो सदा अधीता रहा
संजीव तो जीता रहा.....

संजीव तुम अमर हुए

– सुबोध जैन, ग्वालियर

संजीव था जिनका वेष, जाना आतम परमेश
स्वयं में चले गए
जाना आतम परमेश, जाना आतम का भेद
सिखाकर चले गए

जयपुर में जन्मे थे, उत्साहित रहते थे
जिनमार्ग पर चलने को, आतुर वह रहते थे
जिनशासन की महिमा, दिन-रात वो गाते थे
कहाँ तुम चले गए
अध्यात्म सिखाते थे, आतम बतलाते थे
स्वयं में चले गए

पण्डित टोडरमलजी, आदर्श तुम्हारे थे
उन जैसा ही जीवन, दृढ़ता से जीते थे
ओजस्वी वाणी थी, तेजस्वी जीवन था
कहाँ तुम चले गए
संजीव तुम अमर हुए, औरों को अमर करके
स्वयं में चले गए

भयग्रसित रहते सभी
मर जाऊंगा मैं?
किंतु प्यारे! जीव कहते ही उसे हैं
मौत छूती नहीं जिसको,
नित्य ही जो जिएगा, जी रहा और जीता रहा।
संजीव तो जीता रहा.....

व्याधियों के जाल ने, इस विकट काल कराल ने
मारे सभी, प्यारे सभी, जगतजन हारे सभी,
एक वह, जिसका सदा जीवन समाधिमय रहा,
वह काल से हारा नहीं, वह ना मरा, जीता रहा।
संजीव तो जीता रहा.....

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

तुम्हारा जाना स्वीकार नहीं

– प्रो. डॉ. अनेकान्त जैन
लालबहादुर शास्त्री यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली

सब कुछ क्रमनियमित है
आयु निश्चित है
राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार।।
आदि आदि.....

ये सब मुझे पता है, इसे मैं भी सबसे बड़ा सत्य मानता हूँ
फिर भी.....कुछ चीजें मुझे स्वीकार नहीं हो रही हैं
जैसे –
तुम्हारा इस तरह जाना
तुम्हारी शोक–सभाएँ सुन रहा हूँ
मुझे ये भी स्वीकार नहीं हो रही हैं
कई बार सोचा कि तुम्हारी याद में मैं भी कुछ कहूँ
वीडियो बनाऊँ ...पर ये हो न सका
तुम्हारा जाना मुझे मंजूर ही नहीं है
इसीलिए तुम्हारी किसी भी
शोकसभा में उपस्थित न हो सका
कुछ कह न सका

लोग तुम्हारी और टोडरमलजी की आयु एक जैसी बताकर
तुलना कर रहे हैं.... मुझे ये भी स्वीकार नहीं है
टोडरमलजी मरे नहीं थे, उन्हें मरवाया गया था
तुम्हारे यूट्यूब पर हजारों प्रवचन
ऑनलाइन कक्षाएँ
तुम्हारा देश दुनिया में अथक लगातार प्रचार
अब मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते
क्योंकि तुम नहीं हो

तुम इतना ज्यादा ऑनलाइन क्यों रहे कि
अब ऑफलाइन भी नहीं हो
क्या चला जाता यदि
तुम थोड़ी कम यात्रा और प्रचार करते ?
क्या घट जाता यदि
तुम थोड़े कम प्रवचन करते ?
समाज का क्या है ?
आप भूखे प्यासे रहकर सेवा करो तो ज्यादा पूजती है,
उसे आपकी नहीं, अपने कार्यक्रम की चिंता होती है
स्वार्थी जगत तुम्हें दुहता रहा
और तुम दुहवाते गए, निचुड़ते गए ....
अपनी जरा भी चिंता नहीं की
कष्ट में भी आप सेवा करते थे
ये कहकर आपको दुनिया महिमा मण्डित करेगी
लेकिन वे कष्ट में भी सेवा लेते रहे
इस बात का पछतावा नहीं करेगी।

देखो समाज में
यहाँ अब भी कुछ नहीं बदला
बस एक चीज बदली कि अब तुम नहीं हो
कुछ भी जरूरी नहीं था
बस तुम्हारा होना जरूरी था
तुम रहते तो सब कुछ रहता
प्रवचन, कक्षा, तत्वप्रचार ...
तुम समय समझाते रहे और
समय ने तुम्हें हमसे छीन लिया

तुम्हारा जाना सत्य हो सकता है
किंतु मुझे ऐसा सत्य भी स्वीकार नहीं
पता नहीं क्यों ?
झूठा ही सही
पर तुम्हारे अभी भी होने का अहसास मुझे इतना ज्यादा है कि –
मुझे तुम्हारा जाना स्वीकार नहीं है
अब नहीं है तो नहीं है....

प्रभावना

प्रिय संजीव की आत्मा...

– पण्डित बाहुबली भोसगे

जो आप अभी अभी बोलते थे
अचानक अब खामोश क्यों हो गए
क्यों बोलना नहीं रुचा इसलिए
कि तत्त्व अवक्तव्य है इसलिए
तत्त्व कथञ्चित् अवक्तव्य है
न कि सर्वथा अवक्तव्य
तीर्थंकरों ने, गणधरों ने
केवलियों ने, श्रुतकेवलियों ने
श्रुतधर आचार्यों ने
विद्वानों- पंडितों ने सब ने
यही कहा है कि
सत् कथञ्चित् अवक्तव्य है
आप भी कुछ दिन और
उस अवक्तव्य का कथन करते
चारों अनुयोगों का सार आत्मतत्त्व को
अभिव्यक्त करते
विराम सही है
पर अल्पविराम के बाद का
विराम कार्यकारी होता है
वरना वक्तव्य अधूरा रह जाता है
खैर, आप अल्पवय में ही
पूर्ण विराम लगाकर चले गए
अब उस अवक्तव्य को ध्वनि देने
किसी से कह गए
या मुस्कुराहट में
व्यंजित कर छोड़ गए

हम सब के जीव संजीव की आत्मा
कहाँ गए जगजीव के शुद्ध आत्मा
इतनी छोटी-सी उम्र में
बड़े से बड़े विद्वान द्वारा न कर सकने वाले
जिनधर्म का प्रचार जगभर में कर
आचार्य कुंदकुंद से लेकर
पंडित टोडरमलजी और पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी
व डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा
किए गए तत्त्वज्ञान का प्रचार
सबके हृदय को छूले इस तरह समझा कर
चारों अनुयोगों में गहरी पैठ रखने वाले
एक अभेद अखंड आत्मा की अनुभूति का निरूपण कर
किस भेद में अभेद (लीन) हो गए
हे संजीव की आत्मा!
चाहे जहाँ भी रहो, बने रहो, हो तुम शुद्धात्मा
बनो तुम परमात्मा
संसार-शरीर-भोगों से विरत तुम आत्मा
निरंतर बहती रहे
तुम्हारे द्वारा बहाई हुई जिनवाणी की
अमृतधारा महात्मा

दिया हमें जिनवाणी का उपहार

– प्रतिभा जैन, इन्दौर

जन-जन को जिनवाणी का बताया सार
अनादि से लगे भव-भ्रमण की निश्चित होगी हार
ऐसे दृढ़ संकल्प से देह-रोग को किया सहज स्वीकार

समयसार बताते-बताते आप हो गए समय में लीन
समय को समझ कर असमय ही दुनिया से हो गए विदा

समयसार के कलश आपके मुख से सुनना रह गए शेष
आप की अमृतमय वाणी जन-जन के लिए है विशेष

आपने दिया हमें जिनवाणी का उपहार
हम भी होंगे जल्द ही भवसागर से पार
इन्हीं भावों से आपके शुद्ध आत्मा को वंदन अनंत बार

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

संजीवनी बूटी से...

– बाल ब्र. श्रेणिक जैन, जबलपुर

संजीवनी बूटी से संजीव थे
सबके जीवन को सजाने में मशगूल थे
दिन-रात बस एक ही तत्त्व की बात
सुबह दोपहर शाम
बस एक ही जिनवाणी की बरसात
अत्यंत ओजस्वी तत्त्व की गहरी रुचि
सरल स्वभावी कर्मठ टोडरमल सी छवि
वाणी का प्रभाव सारी दुनियाँ में छाए
बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक बस उनके ही गीत गाये
सिद्धान्त हो या दृष्टांत सब में महारत
उम्र में छोटे पर थे बड़े प्रभावक
लगता था दूसरे टोडरमल या भारिल्ल मिल गए
सब थे प्रसन्न सबके दिल खिल गए
पर किसी को क्या पता था
कि मुक्ति की उन्हें इतनी जल्दी है
छोड़ गए हम सबको अकेला चल दिए
बड़ी मनहूसीयत सी लगती है
कौन ले जाएगा रोज
तीन बार हमें शुद्धात्मा के पास
हम तो बड़े निश्चिन्त थे
पर अब तो बैठे हैं उदास
कहाँ से लायें दूसरा संजीव गोधा
हमारे बस में नहीं
नहीं मार सकता आपको काल
काल में इतनी शक्ति कहाँ
आपके दिए तत्व को
जन जन तक पहुँचायेंगे
भले न सही यहाँ
सिद्धालय में अनंत काल साथ बिताएंगे

कालचक्र भी हार गया है!!

– गणतंत्र शास्त्री औजस्वी, आगरा

दुनिया का सरताज बना जो, भरत खण्ड को माप चुका है
सम्मानों की ऊँचाई को भी, आगम प्रताप से नाप चुका है
सद्वचनों से, विद्वत्ता से, और सरल सी जिन चर्चा से
मन में श्रद्धा दीप जलाकर, जीवन के उस पार गया है
जीता जिसने जन मन, उससे कालचक्र भी हार गया है

नियत वस्तु की सतत् व्यवस्था, सब निश्चित है और रहेगी
पर्यायों की व्यय-उत्पत्ति, ध्रौव्य रूप से नहीं डिगेगी
संयोगों का आना-जाना, पुण्य-पाप के फल से चलता
जिनवाणी का अमृत है ये, इससे ही सब काल बदलता
ज्ञान आपका सतत सहायी, सतत धर्ममय ही जीवन हो

निज का निज से परिचय करने, अमृतमय उपहार दिया है
जीता जिसने जन-मन, उससे कालचक्र भी हार गया है
चाह रहा जग तुम्हें रोककर, मुक्तिलाभ का काल बढ़ाना
सिद्धों के नजदीक न जाओ, हमको बस जिनबैन सुनाना
काल भी ठिठका अटक रहा था, मोह पाश के बाण लगाकर

पर जिसने संजीवनी पायी,चला गया वो हमें जगाकर
अरे जीवन से दी प्रेरणा, अन्तसमय भी प्रेरक ही था
मानो खुद से बातें करने मृत्यु ने उपकार किया है
समय बदलता कालचक्र भी, कालचक्र से हार गया है

श्रद्धा सुमन समर्पित

– चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी

उपकार किया है बहुत आपने, जीवनपथ दर्शाया है
टोडरमल बनकरके तुमने, तत्त्वज्ञान फैलाया है
उस तत्त्व गर्जना को सुनकर, हम वंदन तुमको करते हैं
स्मरण आपका करके श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं

जिनवाणी माँ के आंचल में, रह तत्त्व सुधा को बरसाया
स्वशैली से अध्यात्म जगत को, स्व से परिचय करवाया
मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण, बस अब हम यही समझते हैं
स्मरण आपका करके श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं

प्रभावना

यात्रा मंगल में हो...

– पण्डित संयम जैन, गुढ़ाचन्द्रजी

नमन तलक न कह पाए कैसा दुर्भाग्य हमारा
जिनके बलबूते हम हैं जिन्होंने हमें संवारा
गला रुंधा है, कंठ भरा है, लिखने में कठिनाई है
जो शिक्षा आपने हमको दी, वह भी अनाथ हो आई है

जैन जगती के नायक थे वो आप थे
बुद्धि से जो विनायक थे वो आप थे
दुनिया की भीड़ में कौन-किसका यहाँ
हम सभी के सहायक थे वो आप थे

जो समर्पित हुए मन से वो आप थे
पुष्प हर्षित हुए जिनसे वो आप थे
आप जैसा न कोई भी हो पाएगा
लोग गर्वित हुए जिन से वो आप थे

मुखरित वाणी मौन हुई है अस्त हुआ है आज दिवाकर
उदधि की श्वासों को थामे कलुषित लगता आज प्रभाकर

चंदा-तारे सब सहमे हैं मौसम में सन्नाटा पसरा
श्वेत हिमालय भी मानो बनकर अश्रु के कण बिखरा

दसों दिशाएं धरती-अंबर बेचैनी से डोल रहे हैं
अपना कोई छोड़ चला है मिलकर के सब बोल रहे हैं

महावीर की परंपरा में जन-जन का अभ्युदय हो
मोक्षमार्ग की राह चलो तुम यात्रा यह मंगलमय हो

व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे....

– अरविन्द शास्त्री, खड़ैरी

धवल कांति युक्त मुख तेज से भरपूर था।
उत्साह से भर दे जगत को इतना नयन में नूर था।।

अज्ञान व्याधि मिटाने औषधि बूटी समान थे।
हम सभी विद्यार्थियों को सिद्ध सम वरदान थे।।

सूखती उन धर्म की सरिताओं को था भर दिया।
क्रमबद्ध पर्यय बताकर भय क्लेश था सब हर लिया।।

ज्ञानघन से भरम की चट्टान पर प्रहार कर।
भव उदधि को पार करने आए तुम पतवार बन।।

नायाब सा वह रतन नभ में इस कदर है खो गया।
जगा कर लाखों को वह चिरकाल को है सो गया।।

काल है विकराल तुमको जगत से हर लिया।
पर हजारों संजीव को तुमने खड़ा है कर दिया।।

आये अकेले धर्म ध्वज को हाथ में ही थाम कर।
पर गए तुम इस जगत से गोधा यहाँ हजार कर।।

काट कर खाओ धरम की फसल है तुम बो गए।
व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे जो अब अमर हैं हो गए।।

अंत क्षण तक मृत्यु के बस धर्म का ही प्रचार कर।
रुख़सत हुए वे जगत से निज तत्त्व की पहिचान कर।।

इस महापुरूष के विरह योग में इक संकल्प ये ऐसा हो।
जिन शासन का हर बच्चा-बच्चा संजीव तुम्हारे जैसा हो।।

चल पड़े शिवराह पर...

– मालती जैन, जबलपुर

वीर बन कर आये थे, महावीर के इस काल में
वाणी तो सबको सुनाते, सब जगह हर हाल में

मंदिर भी अद्भुत चुना, आपने इस काल में
गूंजती रहे आपकी वाणी, सब जीवों के ख्याल में

धर्म की ध्वजा लेकर, धर्म की ही डगर पर
सबको सावधान कर गए, चल पड़े इस राह पर

वाणी तो सबको सुनाई, पण्डित टोडरमल के स्थान से
जिनवाणी को साथ लेकर, तुम चल पड़े शिवराह पर

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

आए और चले गए.....

– डॉ. मुकेश शास्त्री, विदिशा

1976 में आए और 2023 में ही चले गए
47 वर्ष की अल्पवय में ही सब कुछ सिखा गए
गुरुदेव श्री और भारिल्ल जी को तुम आदर्श बता गए
उनके सन्मार्ग पर चलते-चलते स्वयं आत्मस्थ हो गए
अल्प समय में ही सर्वाधिक प्रसिद्धि पा गए
जाते-जाते भी सबको सच्चा सन्मार्ग बता गए
देव शास्त्र गुरु श्रद्धानी तुम जिनवाणी हृदयंगम थी
प्राणि मात्र प्रति करुणा थी, सच्ची वात्सल्य निशानी थी
हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत भाषा के अद्भुत तुम ज्ञाता थे
समयसार आदि ग्रन्थों के गूढ़ रहस्य बताते थे
सबको सबका सत्स्वरूप और वीतराग पथ दिखा गए
देश-विदेश में जिनशासन की धर्मपताका फहरा गए
तन धन वैभव सब कुछ तजकर सहज समाधि दर्शा गए
सरल शांत वात्सल्यमूर्ति तुम जीवन सफल बना गए
विदा हो गए आप सभी से, दूर बहुत दूर चले गए
याद रखेंगे स्मरण करेंगे सत्पथ पर हमें बढ़ा गए

अध्यात्म-विभूति

– चन्दन जैन, कर्रापुर

संतों की वाणी को उर में धारण करते हैं
जीवों को सत्पथ का मार्ग दिखलाते हैं
वश में कर लेते हैं हर श्रोता को, उपाध्यायकल्प कहलाते हैं
टोडरमल स्मारक की शान हैं वो, छोटे दादा को भी भाते हैं
देश-विदेश में जैनधर्म का ध्वज वो लहराते हैं
टोडरमल जी की गादी से तत्त्वों का स्वरूप बतलाते हैं
सच्चे वंशज आचार्यों के सागर में आज पधारे हैं
हम सब उनको आज अभी से अध्यात्म-विभूति बुलाते हैं

मेरे आदर्श गोधाजी

– डॉ. विवेक शास्त्री, ढाईद्वीप इंदौर

जो स्व के लिये
स्वाध्याय मय जिये
सजीव आत्मा की
प्रभुता गायें, बतायें
उनके बारे में लिखना, बोलना थोथा है
क्योंकि
सजीव आत्मा अकथनीय
अनुभवगम्य वंदनीय है
विवेक के शूर, गुणगंभीर
सन्मति धुन उपासक, युगवीर
सजीव संजीवजी अजर-अमर हैं
मेरे आदर्श गोधाजी क्या हैं
वे क्या नहीं थे? मेरे सब कुछ थे

ज्ञान गगन के सूर्य

– सहज जैन, छिंदवाड़ा

ज्ञान गगन का सूर्य, आज अस्त हो गया है
लाखों आँखो को नम कर, वो स्वर्गस्थ हो गया है
जिस रवि की एक किरण से सारा, जग होता था बाग-बाग
उस एक किरण के जाते देखो सारा जग त्रस्त हो गया है
उगता हुआ सूर्य, आज अस्त हो गया है
सत्पथ पर चलना सिखलाया, टोडरमल गाथा गाई है
जिसने सारी दुनिया को भी, भाषा जिनधर्म सिखाई है
जो जन-जन के थे गुरु महान, सब को स्वजनों से प्यारे थे
जिनके अंदर टिम-टिम करते, अध्यात्म के सारे तारे थे
जो अस्त-व्यस्त इस दुनिया को, क्रमबद्ध की बात बताते थे
मानो संजीव नाम धारी, संजीवनी सबको पिलाते थे
अस्वस्थ हो कर भी जो, अपने में स्वस्थ हो गए

प्रभावना

अध्यात्म-पक्ष सिरमौर

– पण्डित समकित शास्त्री, ईसागढ़

तत्त्वज्ञान को हृदयंगम कर सत्पथ पर आरूढ़ चले
नवयुग के नवदिशा प्रणेता निर्भय हो अनवरत चले
नहीं रुके, नहिं झुके, मात्र जिन-सिद्धांतों पर अड़े रहे
लहराने जिनधर्म ध्वजा अश्रांत अडिग वे खड़े रहे

अध्यात्मपक्ष सिरमौर लिए आगम का होता था आगाज
मानो लगता मुखरित होती दिव्यध्वनि सम वह आवाज
वर्षों तक कठिन साधना की, मन माहिं असीम समर्पण था
जिनका रोम-रोम जिनवाणी के चरणों में अर्पित था

तत्त्वज्ञान से ओत-प्रोत नर जीवन में निखरा करते
और मृत्यु में उत्सव करने वाले नहीं मरा करते
सर्व जगत क्रमबद्ध सुखी रहने का जादू सिखा गए
माँ जिनवाणी की पावन बूंदों से हमको भिगा गए

मानव कुल का सदुपयोग विरले जन ही कर पाते हैं
जिनवचनों को प्रीतिचित्त से पीते और पिलाते हैं
यह कर्ज कहो या फर्ज कहो अब धर्मध्वजा फहराना है
आत्मानुभूति और तत्त्वज्ञान से जीवन को महकाना है

जैनाचार विचार चरित से जब हम हृदय सजाएंगे
तब जाकर हम सही रूप में श्रद्धांजलि दे पाएंगे

जिनवाणी रसिक उपासक

– पण्डित अभिषेक शास्त्री, देवराहा

क्रमबद्ध के मोती, नयों का झूला, काल चक्र बतलाते थे
जिनके जीवन के रोम-रोम अध्यात्म का गीत सुनाते थे

जो कल गद्दी पर बैठ धर्म की, लोरी हमें सुनाते थे
जिनके शब्दों के गर्जन से, मिथ्या कपाट खुल जाते थे
जिनकी जीवनधारा ऐसी लाखों प्रेरित हो जाते थे
सिद्धांतों की बातें करते, सिद्धांतों पर वो जीते थे

कहते थे मृत्यु का क्या है, कल आनी आज ही आ जाये
पर सिद्धांतों की कीमत पर, समझौता ना होने पाये
जो सत्य है उसको बोलेंगे, हम बोले बिना ना मानेंगे
चाहे धमकाये भय लाये, हम सत्य कभी ना छोड़ेंगे

था ज्ञान मगर अभिमान नहीं, तुम सरल ओजगुण धारी थे
वक्ता थे सब के हृदयप्रिय, जिनवाणी रसिक उपासक थे
न जाने कैसी होड़ लगी, सब छोड़ किधर तुम चले गये
कहते थे मिलना ना होगा, पर सिद्धालय क्यों भूल गये

तत्त्वों के गहन महासागर के, तुम तैराक निराले थे
लाते थे छांट-छांट मोती, तुम सचमुच सच्चे नायक थे
कैसे कह दूँ तुम नहीं रहे, अब भी विश्वास नहीं होता
विद्वान कभी भी ना मरते, तुम तो संजीवनी के धारी थे

वो शख्स हर पल याद आता है

– मानस जैन, बांसबाड़ा

विद्यालय की दीवारों पर गुरु दिखाई देते हैं
नयचक्र को देखते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

जीवन की संजीवनी देना, हर किसी से न बन पाता है
क्रमबद्धता को पढ़ते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

टोडरमल जी की गद्दी पर, जिनने है राज किया
गद्दी को देखते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

ओजस्वी वाणी से, साधर्मियों को जोड़ लिया
कमी खलते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

हजारों प्रवचन कर, जिनवाणी को बतला दिया
प्रवचन सुनते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

बच्चे-बूढ़े सबको ही, सत्पथ दर्शा दिया
सत्पथ सबका देखते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

तीन लोक की रचना को, जिनने है जान लिया
कोई प्रश्न उठते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

छोटे दादा के शिष्यों में, प्रिय आप भी थे
प्रियों को ढूंढते ही, वो शख्स हर पल याद आता है

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

मुक्ति की ओर बढ़े...

– गौरव जैन आत्मार्थी, जयपुर

(तर्ज – चलो मेरे आत्म प्रदेश)

संजीव था उनका नाम, जीवन को बनाया महान
मुक्ति की ओर बढ़े, मुक्ति की ओर बढ़े
जाना वस्तु का धर्म, समझाया हमको मर्म
मुक्ति की ओर बढ़े, मुक्ति की ओर बढ़े

अल्प आयु में ही, तत्त्वों को ग्रहण किया
तत्त्वों से प्रभावित हो, जीवन को सार्थक किया
वे हुए स्वयं में लीन, हीन उनके हुये कर्म
मुक्ति की ओर बढ़े, मुक्ति की ओर बढ़े

पण्डित टोडरमलसम, थी छवि आपकी अद्भुत
उनके जैसी चर्या, उनके जैसा ही स्वरूप
किया मोक्षमार्ग का प्रकाश, समझाया मोक्ष का मार्ग
मुक्ति की ओर बढ़े, मुक्ति की ओर बढ़े

जिनधर्म की सेवा में, दिन–रात किया था काम
नहीं देह की चिन्ता की, नहीं स्वास्थ्य की परवाह
अपने को न देखा देह, रहे अपने में नित्य अदेह
मुक्ति की ओर बढ़े, मुक्ति की ओर बढ़े

तुम शीघ्र बनो केवलज्ञानी

– निशांत जैन, जबलपुर

जिनवाणी, जिनधर्म के साधक
जिनधर्म की वृद्धि के प्रचारक

भगवान महावीर के अनुयायी
पण्डित टोडरमलजी से स्वाध्यायी

हे जिनवाणी माँ के सजग पुत्र
तुम शीघ्र बनो केवलज्ञानी

कुन्दकुन्द प्रभु को अपनाया, समयसार उनको भाया
बस चल पड़े उस पथ पर, जो प्रवचनों में समझाया

सफल किया यह नरभव
अब नहीं भटकना भव–भव

आप सिद्धों के अनुयायी, आपको न गतियाँ भ्रमाई
थी अल्पकाल की आयु, आपने न इक पल गंवाई

जिनवाणी के रसिकों को
आपने जिनवाणी सुनाई

मोह राग द्वेष के बंधनों से, आप दूर हुए संजीव
आप सम हम प्रयत्न करें, सिद्ध बने सब जीव

गये नहीं तुम अमर भये

– पण्डित समकित शास्त्री, खनियांधाना

संजीव जी है नाम आपका, स्व जीवन सार्थक करके गए
जिनवाणी की घोट घोट संजीवनी बूटी पिला गए
टोडरमल से महापुरुष सा जीवन जीकर दिखलाया
गुरुदेव सिद्धांतों का अनुभव जन जन को करवाया
प्रेम और वात्सल्य का दरिया असीमितता से बहता था
धन्य था वो परम पिता जो हमें बड़ा आर्जव कहता था
होते होंगे जगत में हीरो, तुम जैन जगत के बच्चन थे
दादा को आदर्श बनाया, तुम दादा के ही तो बचपन थे

बड़े और छोटे दोनों दादा–सा जीवन जिनका था
तत्त्व पिया और सहज रहे, वह पुरुष वास्तव में विरला था
क्या खोया, क्या बीता, कल्पना नहीं कोई कर सकता
सबने एक–एक पल ही जिया, हमें जीवन उनके संग जीना था
आए हैं जो लोग यहाँ, वो खाली हाथ ना जाएंगे
स्वाध्याय का ले संकल्प, जीवन में संजीवन लाएंगे
तुम आराधक, अध्यात्म जगत के, प्रभावना को कहीं गए
अभी कहाँ जा सकते हो तुम, गए नहीं तुम, अमर भए

प्रभावना

बने आप अध्यात्मजगत् की शान.....

– पण्डित अनिल जैन अंकुर, जयपुर

लेकर जन्म गोधा परिवार में
प्रारंभ से ही जुड़े धर्म संस्कारों से
शास्त्रपठन की हुई रुचि जिन्हें
अतः कोई नाता न था विकारों से

शास्त्र अभ्यास द्वारा आप बने
जैनजगत के विशिष्ट विद्वान
किया जिनधर्म पताका को उन्नत
बने आप अध्यात्मजगत की शान

जुड़कर टोडरमल स्मारक से
बड़े छोटे दादा का आशीष मिला
पाकर अध्यात्म शिक्षा विशेष
हृदय में अध्यात्म कमल खिला

हो पारंगत प्रवचनकार के रूप में
देश विदेश में तत्त्वप्रचार किया
जीवन के अपने पूर्ण 47 वर्षों को
जिनवाणी की सेवा में लगा दिया

जयपुर नगर के बड़ा मंदिर में
प्रवाहित कर अध्यात्म की धारा
जोड़ लोगों को तत्त्व विचार से
किया तत्त्व विश्लेषण कुछ न्यारा

संजीवजी जैन जगत को दे गए
विशेष साहित्य व आलेख अनेक
किए 28 हज़ार से अधिक प्रवचन
जिनमें समाहित विचार बड़े नेक

आपकी प्रवचन शैली से हो प्रभावित
बने अनेकानेक लोग तत्त्व के विचारक
संजीव जी के इस प्रसंग से प्रेरणा पा
हम सब बन जाएँ स्वजीवन उद्धारक

हँसमुख स्वभाव, सरल, सरस प्रवचन शैली
करती प्रेरित कुछ विशेष करने को
लगाकर स्वयं को जिनवाणी पठन में
अपने भव का कल्याण कर जाने को

हर सांस करूँगी अभिनन्दन

– श्रीमती सुनीता जैन, जयपुर

आओ गाथा आज सुनायें, महेन्द्र मंजू के लाल की
नाम जिसका संजीव रखा था, गणधर जैसे भाल की
अति विलक्षण प्रतिभा के धारी, ज्ञायक में ही मस्त थे
गुण एक न विकीर्ण था, निज चिंतन के अभ्यस्त थे
पर्याय बहिर्मुख होती तो निज ज्ञायक की ही मान लिया
भूले नहीं निज प्रभुता को जग की जड़ता को जान लिया
बाह्य जगत से लिया मौन, अंतर की शक्ति मुखरित थी
पराश्रित भाव से भेद किया तो भेद ज्ञान की शक्ति थी
जिस ज्ञान से शोभा थी, उस ज्ञान को लक्ष्य बनाया था
नर से नारायण बनने का अद्भुत संकल्प सजाया था

होता है विध्वंस जहां पर, वहाँ शोर सुनाई देता है
जब बीज स्वयं में गुप्त हुआ तो जन्म संजीव का होता है
जड़ शब्दों उच्चारण से निज का बहुमान नहीं होगा
शुभभावों की शीतलता से निज का रसपान नहीं होगा
प्रवचन का कोलाहल बाहर है, शान्ति तो अंतर से होगी
पढ़नेवालों ने शब्द पढ़े, पर उनकी तैय्यारी पक्की होगी
हम सब भी उन सम जीकर मृत्यु भी बना ले नवजीवन
समतारस से भरपूर अपने में भाव जगा ले संजीवन
देहवियोग की अद्भुत विधि का, हर सांस करूंगी अभिनंदन
समवशरण में आप विराजे हे गणधर देव कोटि-कोटि वंदन

अध्यात्मवेत्ता
डॉ.संजीवकुमार गोधा

समय के सार से जोड़ा

– विनोद मोदी, दलपतपुर

जिनशासन के गूढ़ रहस्य
अपनी ओजपूर्ण वाणी से
बतलाने वाले
वंदनीय संजीव अभिनंदनीय हैं
जिनने आपदाकाल में
पति वियोग, पत्नी पुत्रादि
इष्ट संयोग के विछोह में
व्याकुल जनता को
समता का पाठ पढ़ाया
पावन जिनधर्म की ओर
सबका जीवन रथ मोड़ा
मोक्षमार्ग प्रकाश ले
भववन से नाता तोड़ा
समय के सार से जोड़ा
ऐसे जिनवाणी सुत श्री संजीवजी
महान थे, हैं, रहेंगे
धर्म संगिनी संस्कृति थी साथ
सुत आर्जव धर्म पुरोधा है
कोई सहारा है नहीं, यह सोच मत लाना
जिनशासन संग साथी है ध्रुवधाम नित ध्याना

वैराग्य का अहसास

– अपेक्षा बंडी, उदयपुर

गज़ब पुण्य था मेरा, जो आपका संयोग पाया
आपके वियोग में, तत्त्व और गहरा समझ आया

पहले तो आपको, कुछ पल ही सुनती थी मैं
पर अब हर पल आपसे जिनवाणी पढ़ सुन रही मैं

छहढाला का रस जिस तरह आपने पिलाया
बौछार ने उस एक सूखे बगीचे को हरा बनाया

विचारों को जब आपके, विचारती हूँ मैं
तो कुछ आपके कुछ खुदके खयालों में खो जाती हूँ मैं

निःस्वार्थ हो जिस उमंग से आपने पढ़ाया
रहस्यों ने उन, हृदय को मेरे अमृत पिलाया

संजीवजी, आज फिर आपने वैराग्य का अहसास कराया
ऋण है मुझे चुकाना, इस संजीवनी का

है अभी सुबह का समय, जो संध्या से पहले आया
सूरज ढलने से पहले, आँखें खुलीं, मेरा सवेरा आया

ज्ञानदीप में मेरे, जो लौ लगायी है आपने
उसी रोशनी से, अंधेरों में भी खुद को ढूँढूँगी मैं

हाथ पकड़कर जिस सत्पथ पर छोड़ा है आपने
उसी सफर को पूरा कर, अब सीधे मंज़िल पर मिलूँगी मैं

ऐसी अमृत वाणी दे दी

– जयकुमार जैन, इंदौर

गोधा जैसा योद्धा जगत में, न हुआ है नहीं हो सकता
इतनी छोटी आयु में कोई, अन्तर्राष्ट्रीय नहीं हो सकता

जैनजगत में ऐसा सितारा, कभी-कभी ही चमकता है
इतनी अल्प आयु में कोई, डॉ. नहीं बन सकता है

ऐसा जोशपूर्ण प्रवचन ही, लोगों को आकर्षित करता
नये श्रोता भी जुड़ते जाते, नई उम्मीद लिये उठता

चेहरे पर मुस्कान लिये वो, जिनवाणी को सुनाते थे
सुनकर लोग मुग्ध हो जाये, दौड़-दौड़े आते थे

लॉकडाउन में सबसे ज्यादा, उनको ही तो सुनते थे
सबकी समझ में आ जाये, वो ऐसे प्रवचन करते थे

सारी समाज को आज उन्होंने, ऐसी बेचैनी दे दी
कभी नहीं कोई भूलेगा, ऐसी अमृत वाणी दे दी

प्रभावना

जल्द बनेंगे सर्वज्ञ

– अंकित जैन, दिल्ली

शांत छवि, हंसमुख चेहरा
जिनधर्म पर श्रद्धा अपार
संजीवनी बूटी दी जग को
किया आपने अनंत उपकार
जिनवाणी माँ की भाषा
हम बच्चों तक है पहुँचाई
वियोग आपका हुआ अचानक
इसकी कौन करे भरपाई
रोने का जी भी करता है
यह सच, सच-सा ना लगता है
देखें जहाँ जिधर भी हम
बस आपका चेहरा दिखता है
आप जितना समर्पण भला
कौन ,कहाँ से लाएगा
समंतभद्र-सा पौरुष भला
कौन घूम-घूम दिखलाएगा
शोक, शिकायत कैसे करें
क्रमबद्ध आपने ही समझाया
अनादि-निधन मैं जीव तत्त्व
यह बार-बार है, दोहराया
जीवन भर की सीख आपके
व्यर्थ ना हम जाने देंगे
इस भावभीनी घड़ी में हम सब
समभाव धरें, समता धारेंगे
आपके बताए मार्ग पर ही
अब हमको चलना होगा
स्वाध्याय से स्वानुभव तक का
सफर स्वयं तय करना होगा
किस विषय का हम कहें आपको
आप हर विषय के विशेषज्ञ
मोक्षमार्ग के मर्मज्ञ
आप जल्द बनेंगे सर्वज्ञ

तत्त्वज्ञान में लिप्त रहे

– श्रीमती सुधा चौधरी, विदिशा

गूँगे हो गये शब्द हमारे
जिव्हा हुई निशब्द
देख काल की क्रूर-नियति को
जगत हुआ स्तब्ध
पानी के बुलबुले-सा जीवन
धूप लगी और फूट गया
आत्म ने पर्याय पलट ली
पुद्गल हुआ विनष्ट
अल्पायु तो कर्माधीन थी
जोर नहीं चलता उस पर
पर जैनधर्म की प्रभावना का
दिखता फल स्पष्ट
रात और दिन, और
दिन और रात जो
तत्त्वज्ञान में लिप्त रहे
खुद संभले औरों को संभाला
यही था उनका ज्ञान विशिष्ट
उनके ज्ञान के चमत्कार को
शत-शत वंदन करते हैं
सद्गति हो, सन्मार्ग मिला हो
मुक्तिमार्ग हो जाए प्रशस्त

सीखूँगा मैं आपसे अब

– पण्डित सुधीर शास्त्री, इंदौर

ज्ञान की भेरी बजाना
निड़र हो बेबाक कहना
हर समय संतुष्ट रहना
जिनवाणी की सेवा करना
स्वयं पढ़ना, सबको पढ़ाना
गुरु का सम्मान करना
छोटों पर वात्सल्य रखना
धीरता, गंभीरता, निर्विवादी निड़रता
क्या कुछ नहीं था सीखने को
मुस्कुराना, शांत रहना
आत्महित और जगतहित को समर्पित
बेजोड़ शैली
सचमुच आदर्श थे, वे साध्य के
प्रेरणा हो आप मेरी
थी वरद-हस्ती कृपा तेरी
फिर भी मैं रीता हुआ हूँ
अब भी बे-सीखा हुआ हूँ
सीखूंगा मैं आपसे अब
एक पाठ सच्चा जीवन जीने का
एक उत्कट सीख मृत्यु वरने की
चिर काल तक संजीव रहने की

कभी ना होंगे दूर इस मन से

– नेहा जैन, दिल्ली

आपकी महिमा कैसे करूँ बखान, आपसे किया है अर्जित ज्ञान
आपने दी हमको पहचान, चुका न पाऊँ उसका अहसान
जीव-अजीव का पाठ पढ़ाया, भेदज्ञान करना सिखलाया
सही तरह जीना बतलाया, अंतर्मन को सहज बनाया
जानते-देखते यह दिन भी आया, हमसे अपना साथ छुड़ाया
भले चले गए हों, इस भव से, पर कभी न होंगे दूर इस मन से

संजीवकुमारजी गोधा की यूट्यूब पर अध्यात्म क्रान्ति

जैनदर्शन के चारों अनुयोग के विविध विषयों पर प्रवचन सूची

ग्रन्थों के आधार पर

मोक्षमार्ग प्रकाशक (पूर्ण)	422 प्रवचन
पुरुषार्थसिद्धि उपाय (पूर्ण)	245 प्रवचन
क्षत्र चूड़ामणि ग्रन्थ (पूर्ण)	296 प्रवचन
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	78 प्रवचन
समयसार	436 प्रवचन
रहस्यपूर्ण चिट्ठी	47 प्रवचन
गुणस्थान (पूर्ण)	23 प्रवचन
तत्त्वार्थसूत्र (पूर्ण)	33 प्रवचन
छहढाला (पूर्ण)	70 प्रवचन
संयमप्रकाश (उत्तरार्द्ध)	431 प्रवचन
क्रमबद्धपर्याय (पूर्ण)	43 प्रवचन
कालचक्र (छह काल)	09 प्रवचन
नियमसार का सार (पूर्ण)	06 प्रवचन
प्रवचनसार का सार (पूर्ण)	04 प्रवचन
भक्तामर स्तोत्र (पूर्ण)	18 प्रवचन
इष्टोपदेश (पूर्ण)	17 प्रवचन
योगसार	21 प्रवचन
बालबोध भाग – 1	17 प्रवचन
बालबोध भाग –2	14 प्रवचन
बालबोध भाग – 3	14 प्रवचन
वीतराग – विज्ञान भाग – 1	23 प्रवचन
वीतराग–विज्ञान भाग – 2	29 प्रवचन
वीतराग – विज्ञान भाग – 3	31 प्रवचन
तत्त्वज्ञान भाग – 1	51 प्रवचन
तत्त्वज्ञान भाग – 2	52 प्रवचन

स्वतंत्र विषयों पर

3 लोक (जैन भूगोल)	19 प्रवचन
अवर्णवाद	5 प्रवचन
आत्मानुभूति व तत्त्वविचार	05 प्रवचन
सम्यग्दर्शन की विधि	5 प्रवचन
नय (निश्चय व्यवहार प्रयोग)	09 प्रवचन
8 कर्म और उनका फल	16 प्रवचन
पंचकल्याणक	14 प्रवचन
47 शक्तियाँ (समयसार)	9 प्रवचन
47 नय (प्रवचनसार)	12 प्रवचन
दशलक्षण पर्व	21 प्रवचन
सोलहकारण भावनाएं	17 प्रवचन
सात तत्त्व संबंधी भूल	14 प्रवचन
11 प्रतिमाएं (श्रावक की)	08 प्रवचन
4 अभाव	4 अभाव
07 प्रवचन	07 प्रवचन
लक्षण – लक्षणाभास	04 प्रवचन
पाँच भाव (औपशमिक...)	06 प्रवचन
समाधिमरण /सल्लेखना	19 प्रवचन
उपादान – निमित्त	07 प्रवचन
षट्कारक	05 प्रवचन
पुण्य और पाप	06 प्रवचन
करणानुयोग से प्रयोजन	07 प्रवचन
मेरी भावना	11 प्रवचन
पंचलब्धि	06 प्रवचन

कुछ विशिष्ट प्रवचन

- मनुष्य भव दुर्लभता
- विज्ञान और जैनदर्शन
- आर्ट ऑफ लिविंग
- अविभागी प्रतिच्छेद
- नंदीश्वर द्वीप–रचना
- जिनागम का सार
- सम्यक्त्व की पात्रता
- समवशरण
- मैं कौन हूँ
- सर्वज्ञ–सिद्धि
- शुरुआत कैसे करें?
- महिमा ज्ञान की
- अमूलतत्त्व विचार
- अपनी समस्याएं व समाधान
- अकालमृत्यु
- 7 समुद्घात
- आ.कुन्दकुन्द व परमागम
- रक्षा–बंधन
- श्रुत पंचमी
- पंच परावर्तन
- प्रवचनसार गाथा–80

YouTube

Dr. Sanjeev Godha
@DrSanjeevGodha
56.2K subscribers

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने की रुचि रखने वालों के लिये

बालबोध भाग-1 (17 प्रवचन)

- णमोकार महामंत्र
- चत्तारि मंगल पाठ
- तीर्थंकर भगवान
- देवदर्शन की विधि
- दिनचर्या
- भगवान आदिनाथ

बालबोध भाग -2 (14 प्रवचन)

- 5 पाप
- 4 कषाय
- 4 गतियाँ
- 6 द्रव्य
- सदाचार
- रात्रिभोजन त्याग
- प्रतिज्ञा कैसे लें
- छना पानी

बालबोध भाग-3 (14 प्रवचन)

- 5 परमेष्ठी
- श्रावक के 8 मूलगुण
- जैनी कौन
- भक्ष्य-अभक्ष्य
- द्रव्य-गुण-पर्याय
- 6 सामान्य गुण
- भगवान नेमिनाथ

वीतराग-विज्ञान भाग-1 (23 प्रवचन)

- आत्मा-परमात्मा
- 7 तत्त्व
- श्रावक के 6 आवश्यक
- जम्बूस्वामी
- कर्म सिद्धांत
- द्रव्यकर्म-भावकर्म - नोकर्म
- बारह भावना
- रक्षा - बन्धन

वीतराग-विज्ञान भाग-2 (29 प्रवचन)

- देव-शास्त्र-गुरु पूजन अर्थ
- गृहीत- अगृहीत मिथ्यात्व
- 7 तत्त्व की भूल
- 4 अनुयोग
- निश्चय सप्त व्यसन
- 3 लोक
- अहिंसा सूक्ष्म चर्चा
- अष्टाह्निका पर्व
- नन्दीश्वर द्वीप रचना
- पण्डित बनारसीदासजी
- भगवान पार्श्वनाथ

वीतराग-विज्ञान भाग-3 (31 प्रवचन)

- सिद्ध पूजन
- उपयोग : ज्ञानोपयोग दर्शनोपयोग,
- मैं कौन हूँ
- गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व
- श्रावक के 12 व्रत
- मुक्ति का मार्ग,
- आ. अमृतचन्द्र
- पण्डित टोडरमलजी
- भगवान राम
- निश्चय-व्यवहार स्वरूप
- समयसार स्तुति अर्थ

प्रकाशित कृति

- कालचक्र (हिन्दी/गुजराती/तमिल)
- समुद्घात

प्रकाशनाधीन कृतियाँ

- जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में : तीन लोक
- मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार
- ज्योतिष लोक
- चार अभाव
- भेद-विज्ञान
- कर्म सिद्धांत
- अद्भुत कर्म सिद्धांत
- रक्षाबंधन
- पंच कल्याणक
- णमोकार मंत्र
- समाधि मरण
- कालचक्र (कन्नड़/मल्यालम)

संजीवकुमार गोधाजी की विदेश यात्राएँ

Chicago
22 से 28 जून 2012
7 से 13 जून 2013
9 से 18 सितम्बर 2013
14 से 20 जुलाई 2014
2 से 8 जून 2015
14 से 20 जून 2016
23 से 30 जून 2017
1 से 5 जुलाई 2022

Miami
26 जून से 2 जुलाई 2014
16 से 22 जून 2015
20 से 26 जून 2016
27 मई से 1 जून 2017
2 से 7 जून 2018
6 से 13 जून 2019

Dallas
30 मई से 6 जून 2013
21 से 28 जुलाई 2014
8 से 15 जून 2015
6 से 13 जून 2016
6 से 15 जून 2017
15 से 21 जून 2018

Toronto
30 जून से 10 जुलाई 2012
21 से 29 जून 2013
3 से 5 जुलाई 2014
1 से 5 जून 2016
22 से 28 जून 2018
2 से 9 जून 2022

Singapore
1 से 8 फरवरी 2019
24 जन. से 1 फर. 2020

Brempton
6 से 13 जुलाई 2014
18 से 27 सितम्बर 2015

London UK
8 से 13 जुलाई 2016
13 से 25 सितंबर 2018

Brussels
23 अप्रैल 2013

North Carolina
8 से 14 जून 2018
21 से 27 जून 2022

Los Angeles
28 से 31 मई 2018
29 जून से 7 जुलाई 2019

Edmonton
11 से 17 सितम्बर 2015
24 से 30 मई 2016

Chattanooga
27 जून 2015

Detroit
30 जून से 6 जुलाई 2013

Dallas TX
11 से 18 जुलाई 2012
14 से 20 जून 2019
14 से 21 जून 2022

Miami FL
14 से 20 जून 2013
21 से 28 जून 2019
27 जून से 1 जुलाई 22

Phonix
24 मई से 27 मई 2018

Atlanta
28 जून से 5 जुलाई 2015

San Diego
30 मई से 1 जून 2018

Newyork
5 व 6 जुलाई 2016

Dubai
27 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2022

Canada
29 जून से 4 जुलाई 2018

Mary Land
27 से 30 जून 2016

Orlando
20 व 21 सितम्बर 2013
23 से 26 जून 2015
2 से 5 जून 2017

New Jersey
30 अग. से 8 सित. 2014
1 से 4 जुलाई 2016
31 मई से 5 जून 2019

Bangkok
22 से 26 अगस्त 2018

Edison NJ
1 से 4 जुलाई 2017

Sydney
18 से 25 अप्रैल 2019

North Carolina
16 से 22 जून 2017

Franklin NJ
5 से 9 जुलाई 2017

Nairobi Kenya
22 मार्च से 2 अप्रैल 2018

Houston
10 से 13 जून 2022

जैन जगत के लिए गहरा आघात...

छोटे दादा नहीं रहे

जिनशासन के दैदीप्यमान सूर्य, जैनदर्शन के उच्चकोटि के विद्वानों में अग्रगण्य, तार्किक चूड़ामणि, समयसार के शिखर पुरुष, कालजयी विद्वान, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के सूत्रधार, शताधिक कृतियों के सिद्धहस्त लेखक, सहस्राधिक विद्वानों के जीवन निर्माता एवं सर्जक-गुरु, तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का महाप्रयाण दिनांक 26 मार्च 2023 को ब्रह्ममूर्हूत में निराकुल परिणामों के साथ हुआ। डॉ. भारिल्ल का वियोग मात्र मुमुक्षु समाज ही नही; अपितु सकल जैन समाज के लिए किसी वज्रपात से कम नहीं है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के तत्त्व-प्रभावना योग में जैन अध्यात्म को घर-घर तक पहुँचाने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले डॉ. भारिल्ल ऐसे तार्किक विद्वान थे, जिन्हें जैनदर्शन के उच्चकोटि के विद्वान भी अत्यधिक आदर के साथ सुना करते थे। ऐसे अनेक साधु-संत हैं, जो आपके प्रवचनों का लाभ लेते हुए आपकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा किया करते थे।

आप अपने छात्रों एवं साधर्मियों के प्रति अपार स्नेह रखते थे; एतदर्थ आपके 1000 से अधिक छात्र-विद्वान व सकल जनसमुदाय वात्सल्य व सम्मान से आपको छोटे दादा कहकर पुकारता था।

अध्यात्म जगत की अग्रणी संस्था पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के आप महामंत्री थे। आपने अपनी दूरगामी योजनाओं को फलीभूत करके लाखों लोगों के जीवन को तत्त्वज्ञान से संस्कारित किया।

आप जैनसमाज के सुविख्यात आध्यात्मिक मासिक वीतराग विज्ञान के सम्पादक थे। जो हिन्दी, मराठी, कन्नड भाषा में 10000 की संख्या में प्रकाशित होने वाला, समाज का सर्वाधिक प्रसार वाला मासिक है।

सदा अध्ययन और अध्यापन में ही निमग्न रहनेवाले डॉ. भारिल्ल ने अपने 88 वर्ष के जीवनकाल में शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम. ए. आदि के साथ ही आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी पर अभूतपूर्व शोध-कार्य कर डॉक्टरेट (Ph.D.) की उपाधि भी प्राप्त की। वर्ष 2011 में मंगलायतन विश्वविद्यालय द्वारा आपको डी.लिट. की मानद उपाधि भी प्रदान की गई।

लोकप्रिय वक्ता डॉ. साहब को समाज द्वारा समय-समय पर ...
विद्यावारिधि
महामहोपाध्याय
विद्यावाचस्पति
समयसार शिखर पुरुष
परमागमविशारद
तत्त्ववेत्ता
जैनरत्न
अध्यात्मशिरोमणि
वाणी-विभूषण
सहित आदि अनेक उपाधियों व सम्मानों से विभूषित किया गया।

सा विद्या या विमुक्तये के लक्ष्य से संचालित श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के अंतर्गत जैनदर्शन एवं संस्कृत के 1000 से अधिक सुयोग्य विद्वान तैयार करने हेतु आपको राजस्थान सरकार के **मुख्यमंत्री श्री अशोकजी गहलोत द्वारा "संस्कृत सेवाव्रती सम्मान" से सम्मानित किया गया।**

इंदौर में विश्व की अद्वितीय रचना ढाईद्वीप जिनायतन के पंचकल्याणक के दौरान मध्यप्रदेश के धरातल पर आपकी उपस्थिति मात्र से गदगद होकर वहाँ के **मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंहजी चौहान ने** आपको सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया।

जैनधर्म के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र श्रवणबेलगोला के कर्मयोगी भट्टारक **स्व. श्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने** महामस्तकाभिषेक के अवसर पर आपके द्वारा किए गए तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के कार्यों से प्रभावित होकर **आपको विशेष नागरिक सम्मान देते हुए** आपके कार्यों की श्रीवृद्धि की भावना भाई थी।

समयसार ग्रन्थ पर आपकी पकड़ एवं विद्वता से प्रभावित होकर **आचार्यश्री विद्यानंदजी महाराज आपको समयसार के शिखर पुरुष कहकर पुकारते थे** एवं आप उनके प्रिय विद्वान थे, एतदर्थ उन्होंने आपके सम्मान में **एक अभिनन्दन समारोह** का आयोजन कराया।

देश दुनिया के विद्वानों एवं श्रेष्ठियों ने दी श्रद्धांजलि

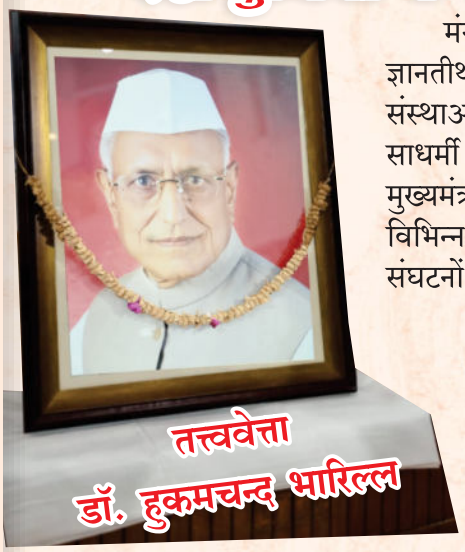

मंगलवार, दिनांक 28 मार्च 2023 को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की श्रद्धांजलि सभा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित की गई, जिसमें देशभर से जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया साथ ही हजारों की संख्या में साधर्मी पधारे। इस प्रसंग पर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराजसिंहजी चौहान, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री माननीय रमनसिंहजी, राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री माननीय वसुंधराजी राजे सहित देश के विभिन्न नेताओं ने ट्वीटर के माध्यम से श्रद्धांजलि दी। साथ ही देशभर के अनेक मण्डलों, ट्रस्टों, संघटनों, समाजों, मंदिरों, व्यक्तियों के शोक संदेश प्राप्त हुये।

आयोजित श्रद्धांजलि सभा में असम के महामहिम राज्यपाल श्री गुलाबचंदजी कटारिया द्वारा प्राप्त वीडियो श्रद्धांजलि चलाई गयी। समाज के प्रतिष्ठित विद्वानों में पण्डित बिपिनजी शास्त्री, मुम्बई; बाल ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना; पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली; डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर; ज्योतिषाचार्य प्रकाशदादा, मैनपुरी; श्री शीतलप्रकाशजी जैन, सांगानेर; डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, दिल्ली; डॉ. श्रेयांशजी शास्त्री, जयपुर; पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, उदयपुर; श्री प्रकाशजी छाबड़ा, इंदौर; पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा; ब्र. अमितभैया, विदिशा; पण्डित पीयूषजी शास्त्री, जयपुर; डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, टोकर; पण्डित महेंद्रजी शास्त्री, भिंड; पण्डित विपिनजी शास्त्री, नागपुर; पण्डित जयकुमारजी शास्त्री, कोटा; पण्डित गौरवजी शास्त्री, इन्दौर; पण्डित सचिनजी शास्त्री, अहमदाबाद; डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, उदयपुर; पण्डित जिनेंद्रजी शास्त्री, जयपुर आदि ने श्रद्धांजलि दी।

श्रेष्ठिगणों में श्री बसंतभाई दोषी, मुंबई (ऑनलाईन); श्री अशोकजी बड़जात्या, इंदौर; श्री अजितप्रसादजी, दिल्ली; श्री महीपालजी शाह, बांसवाड़ा; श्री विजयजी बड़जात्या, इंदौर; पण्डित रजनीभाई दोषी, हिम्मतनगर; श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा; श्री अजीतजी, बड़ौदा; श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़; श्री एन.सी. जैन, औरंगाबाद; श्री विपुलजी मोटानी, मुम्बई; पण्डित अनिलजी शास्त्री, कोलकाता; श्री नीरजजी, नीरू कैमिकल दिल्ली; श्री गौरवजी सोगानी, जयपुर; श्री महेंद्रजी चौधरी, भोपाल; श्री नीरजजी जैन, दिलशाद गार्डन; श्री शेखरचंद्रजी पाटनी, किशनगढ़; श्री चंपालालजी भण्डारी, बैंगलोर; श्री सुरेशजी जैन, वानपुर; श्री सुभाषजी कोटाडिया, अहमदाबाद; श्री जितेंद्रजी शास्त्री गोरेगांव; डॉ. ऋषभजी शास्त्री, ललितपुर; श्री कविनभाई मोटानी, मुंबई; श्रीमती अरुणाबेन, अहमदाबाद; श्रीमती कुसुमजी चौधरी, किशनगढ़ आदि महानुभावों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा संस्थाओं में 5 लाख रु. की राशि के दान की घोषणा की गई।

पंचतीर्थ जिनालय में दर्शन करते हुये

श्रद्धांजलि सभा

श्रद्धांजलि सभा में उद्‌गार व्यक्त करते हुये

विद्वत्‌गण

श्रेष्ठिगण

डॉ. भारिल्ल का सत् साहित्य एक झलक में...

देश के विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि सभा

चित्रों के माध्यम से श्रद्धांजलि

सम्पूर्ण विश्व ने दी अध्यात्मवेत्ता को श्रद्धांजलि

स्मृति शेष : डा.संजीव गोधा

युगों-युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा

अन्तर्राष्ट्रीय युवा विद्वान डॉ संजीव गोधा नहीं रहे

उदयपुर। (यूथ की आवाज) जिनवाणी को जन-जन तक पहुंचाने वाले अपनी मधुर एवं प्रभावक वाणी से हजारों श्रोताओं को प्रभावित करने वाले वर्तमान युग में जिनशासन की महती प्रभावना करने वाले अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेश महामंत्री अन्तर्राष्ट्रीय युवा विद्वान 47 वर्षीय डॉ.संजीव गोधा के देह परिवर्तन के प्रसंग पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ जिनेंद्र शास्त्री,सरल ब्लड,बैंक के संस्थापक सचिव डॉ श्याम एस.सिंघवी शाश्वत धाम के अध्यक्ष जैन बड़ोदरा ,दिगम्बर जैन बीसा नरसिंहपुर तेरापंथ आम्नाय समाज के अध्यक्ष योगेश अखावत,शांतिनाथ दिगम्बर जैन ...

दैनिक भास्कर

श्रद्धांजलि सभा: आध्यात्मिक जगत की मूर्धन्य हस्ती थे डॉक्टर संजीव गोधा

शिवपुरी| जैनदर्शन के अंतर्राष्ट्रीय मूर्धन्य विद्वान पंडित डॉ संजीव कुमार गोधा थे उन्होंने अपने क्षयोपशम ज्ञान से वह उपलब्धि हासिल की थी कि लोग उनकी तत्व चर्चा सुनकर आत्ममुग्ध होकर लगातार उसे सुनने की इच्छा रखते थे उनका निधन जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए विद्वान।

शांति विधान के साथ भावांजलि सभा

आर्यावर्त समाचार छिंदवाड़ा

नगर के अहिंसा स्थली गोल गंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनालय में आज फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी रविवार 19 फरवरी 2023 को श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन द्वारा श्री शांति विधान एवं भावांजलि सभा का आयोजन रखा गया है।

फेडरेशन सचिव दीपकराज जैन ने बताया कि श्री आदिनाथ जिनालय में प्रातः 7 बजे से श्री जिनबिंम्ब प्रक्षालन कर 7.15 बजे से श्री शांति विधान का आयोजन श्रावक श्रेष्ठी जुगराज जैन बाबाजी एवं जैन रत्न पण्डितश्री डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की स्मृति में रंगमहल परिवार सहित मण्डल एवं फेडरेशन द्वारा रखा गया है। विधान की पूर्णता के पश्चात स्वाध्याय भवन में स्मृति शेष डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर के वीडियो प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त होगा।

रात्रि 8 बजे से स्वाध्याय भवन में वैराग्य भक्ति, डॉ. संजीवजी गोधा के प्रवचनों के पश्चात ...

जैन समाज के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान डॉ गोधा की वैराग्य सभा 21 फरवरी को

उदयपुर। (यूथ की आवाज) जिनवाणी को जन-जन तक पहुंचाने वाले अपनी मधुर एवं प्रभावक वाणी से हजारों श्रोताओं को प्रभावित करने वाले वर्तमान युग में जिनशासन की महती प्रभावना करने वाले अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेश महामंत्री अन्तर्राष्ट्रीय युवा विद्वान 47 वर्षीय अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ.संजीव गोधा के देह परिवर्तन के प्रसंग पर मंगलवार 21 फरवरी वैराग्य भावना का पाठ सांय 6.45 बजे तत्पश्चात वैराग्य सभा का आयोजन रात्रि 7.15 बजे से 8.45 बजे तक सेक्टर 11 स्थित आलोक स्कूल,उदयपुर सभागार में आयोजित होगी वही अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ जिनेंद्र शास्त्री, सरल ब्लड,बैंक के संस्थापक सचिव डॉ श्याम एस.सिंघवी शाश्वत धाम के अध्यक्ष अजित जैन बड़ोदरा ,दिगम्बर जैन बीसा नरसिंहपुर तेरापंथ आम्नाय समाज के अध्यक्ष योगेश अखावत, शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर 11 अध्यक्ष ताराचन्द जैन,मुमुक्षु मंडल अध्यक्ष सुभाष गदिया,गायरियावास मंदिर अध्यक्ष नरेंद्र जी दलावत ,शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर3 अध्यक्ष शांतिलाल अखावत,सेक्टर 14 से श्री ललित गदिया, केशव नगर से श्री रमेश जी वालावत ,विद्वतगण राजकुमार जैनदर्शनाचार्य, डॉ महावीर प्रसाद जैन, ऋषभ कुमार शास्त्री,खेमचंद जैनदर्शनाचार्य, पं.संदीप शास्त्री ,डॉ तपिश शास्त्री, पंडित गजेंद्र शास्त्री,पं निलेश शास्त्री आदि सभी विद्वानों ने श्री गोधा जी के निधन पर हार्दिक शोक संवेदना व्यक्त की।

सत्पथ सहित अरिहंत एकेडमी ने दी श्रद्धांजलि

संजीवकुमार गोधा का देहपरिवर्तन

एआईए ने दी डॉ.संजीव गोधा को श्रद्धांजलि

... जैन का कहना है कि डॉ. गोधा का 47 वर्ष की अल्प आयु में देहपरिवर्तन सकल जैन समाज की अपूर्णीय क्षति है। ... छत्रछाया में पले पुसे और बड़े हुए वे महेंद्रकुमार गोधा के सुपुत्र, प्रदीपकुमार चौधरी के दामाद एवं डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के प्रिय शिष्यों में से एक पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रभावना योग की प्रभावना में संलग्न देश - विदेश में ... मार्ग की प्रेरणा देने वाले जैन रत्न, अध्यात्म चक्रवर्ती आदि अनेक उपाधियों से विभूषित थे। आप सामाजिक पत्रिका जैनपथ प्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान के संपादक थे। सत्पथ फाउंडेशन के ट्रस्टी सहित अनेक संस्थाओं के निर्देशक, शिविर, विधान सहित पंचकल्याणक महोत्सव के मार्गदर्शक रहे। आपने सत्पथ के माध्यम से हजारों हजार साधर्मियों को सत्पथ पर लगाया। शुक्रवार को डॉ. संजीवकुमार गोधा को अरिहंत इंटरनेशनल एकेडमी छिन्दवाड़ा में सर्वोदय अहिंसा, अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन, सत्पथ फाउंडेशन नागपुर, पण्डित टोडरमल स्मारक जयपुर सहित संपूर्ण विश्व की मुमुक्षु समाज एवं सकल जैन समाज की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सत्पथ फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. विपिन शास्त्री ने कहा कि ऐसे व्यक्तित्व के महाप्रयाण पर हम संकल्पित हों कि तीर्थंकरों की दिव्य देशना से प्राप्त सत्पथ पर सदैव चलते रहेंगे।

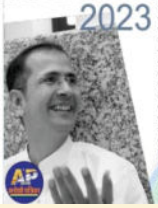

दैनिक भास्कर ... 18-02-2023

|| श्रद्धांजलि ||

भावपूर्ण श्रद्धांजली

डॉ.संजीव कुमार जी गोधा

भावपूर्ण श्रद्धांजली

Digital Edition

अनोखी पत्रिका

स्मृति शेष... डॉ. संजीव गोधा

वरिष्ठ पत्रकार - डॉ. अखिल बंसल, जयपुर

1976 – 2023

सार समाचार

शांति विधान के साथ भावांजलि सभा का आयोजन आज

छिन्दवाड़ा, देशबन्धु। नगर के अहिंसा स्थली गोल गंज स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनालय में आज फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी रविवार 19 फरवरी 2023 को श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन द्वारा श्री शांति विधान एवं भावांजलि सभा का आयोजन रखा गया है। ...

स्मृति शेष : डॉ. संजीव गोधा

अध्यात्म

जगत में अपने प्रवचनों की धूम मचाने वाले डॉक्टर संजीव गोधा अब नहीं रहे; इस हृदय विदारक समाचार ने सभी को हतप्रभ कर दिया। विश्व पटल पर जैन धर्म की अद्वितीय प्रभावना में योगदान देने के लिए आपको युगों युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा। 26 नवंबर 1976 को राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर में आपका जन्म हुआ था। आपके पिता श्री महेन्द्र कुमार गोधा द्वारा आपको बचपन से ही धार्मिक संस्कारों में ढाला गया। आपने इतिहास एवं जैन विद्या व तुलनात्मक धर्म दर्शन विषय में एम.ए. तथा जैन दर्शन में एम फिल कर तीन लोक विषय में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। आपकी कृति कालचक्र ने आपकी ख्याति में चार चांद लगा दिए।

47 वर्ष की लघु वय में आपके द्वारा 13 पुस्तकों का संपादन व 32 से अधिक लेखों का प्रणयन किया गया जो सभी प्रकाशित हैं। सन 1998 से आप जयपुर से प्रकाशित आध्यात्मिक मासिक पत्रिका वीतराग विज्ञान हिंदी के सह संपादक व जैनपथ प्रदर्शक पाक्षिक के संपादक रहे। लोकप्रिय प्रवचनकार के रूप में आपने अपार ख्याति अर्जित की है। जयपुर के ऐतिहासिक प्राचीन दिगंबर जैन पंचायत तेरापंथ बड़ा मंदिर जो टोडरमल जी के मंदिर के नाम से विख्यात है उसमें आपके नियमित प्रवचन होते रहे हैं। वर्ष 1993 से अब तक आपके 28 हजार से अधिक प्रवचन एक रिकॉर्ड है। सन् 2011 से आप प्रतिवर्ष लगभग 2 माह विदेश में जैन धर्म के प्रचार प्रसार हेतु जाते रहे हैं। आपने इस अवधि में 17 से अधिक बार अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, अफ्रीका, सिंगापुर तथा आस्ट्रेलिया आदि देशों के लगभग 40-50 शहरों में अपने प्रवचनों की धूम मचाई है। जुलाई -21 से प्रतिदिन रात्रि 10:00 बजे पारस चैनल तथा अन्य जिनवाणी व आदिनाथ चैनलों पर आप के प्रवचनों की लोकप्रियता ने आपको फर्श से अर्श पर पहुंचा दिया। यूट्यूब चैनल पर भी आपके नियमित प्रवचन उपलब्ध हैं। देश-विदेश की समाज एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा आपको समय-समय पर विविध अवार्ड सम्मान, पुरस्कार एवं उपाधियों से अलंकृत किया जाता रहा है। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत् परिषद द्वारा युवा रत्न व पंडित टोडरमल पुरस्कार, श्रवणबेलगोला में आयोजित युवा सम्मेलन में आदर्श जैन युवा राष्ट्रीय सम्मान, शिकागो (अमेरिका) द्वारा अति विशिष्ट सेवा अवार्ड, उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान लखनऊ द्वारा अध्यात्म चक्रवर्ती, परमागम ट्रस्ट सोनागिर द्वारा अध्यात्म वेत्ता के अतिरिक्त अनेक संस्थाओं द्वारा उपाध्यायकल्प आदि उपाधियों सहित आचार्य समंतभद्र पुरस्कार, युवा जैन रत्न सम्मान व कुंदकुंद ज्ञानपीठ द्वारा अर्हत वचन पुरस्कार दिए जा चुके हैं।आप अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ, अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वतपरिषद् तथा अ.भा.जैन युवा फैडरेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में विभिन्न पदों को सुशोभित करते रहे। विधि का विधान टाला नहीं जा सकता। लगभग एक माह की अस्वस्थता के पश्चात् 17 फरवरी को आपका आकस्मिक निधन हो गया। आपका एक बेटा आर्जव है जो टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय में अध्ययनरत है। हमें आप जैसे विद्वान पर गर्व है। आप शीघ्र भव का अभाव कर सिद्धालय में विराजमान हों यही भावना है। -डॉ. अखिल बंसल, जर्नलिस्ट

शिष्यों द्वारा चित्रात्मक श्रद्धांजलि

अर्पित जैन, भिण्ड

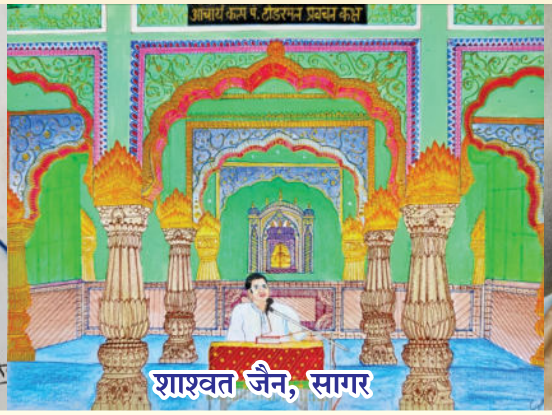

शाश्वत जैन, सागर

शाल्वी जैन

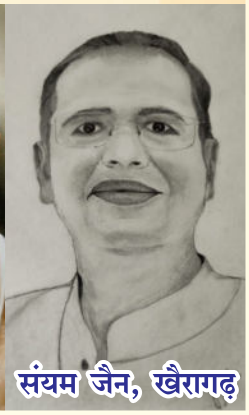

संयम जैन, खैरागढ़

2 अप्रैल 2023 | कुल पृष्ठ : 112 | मूल्य :2/- | आर. एन. आई. 31109/77 | JaipurCity / 224 / 2021-23

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सह-सम्पादक : पीयूष जैन
प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2023

प्रति,